श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, देवाली, उदयपुर

यह मंदिर फतहसागर पाल के अंतिम छोर के दाहिनी ओर फतहपुरा जाने वाली मुख्य सड़क पर नहर के किनारे स्थित है। यह शिखरबंद मंदिर जीवनसिंह जी, शान्तिलाल जी, रणजीतसिंह जी मेहता के पूर्वजों द्वारा बनवाया गया है। कहा जाता है, इस परिवार में पन्नालाल जी व लक्ष्मीलाल जी मेहता थे। पन्नालाल जी के पुत्र भीमराज जी हुए और लक्ष्मीलाल जी के पुत्र भगवतीलाल जी और संग्रामसिंह जी हुए। दोनों भाइयों ने दीक्षा ग्रहण कर ली। लक्ष्मीलाल जी के हिस्से की जमीन पर उपाश्रय बना हुआ है। मंदिर जहाँ पर बना है, वह भूमि भी इसी परिवार की पैतृक जमीन है।

मंदिर की प्रतिमा पर लेख के आधार पर यह मंदिर करीब 245 वर्ष पुराना है। ऐसा भी कहा जाता है कि यह मंदिर उदयपुर बसने के पहले का अर्थात लगभग 500 वर्ष पुराना है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ हैं :–

1. मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान की 17'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लांछन सर्प स्पष्ट है। इस पर लेख है :–

   सं. 1817 वर्षे माह मासे उस्न पक्षे रविवासरे श्री इडरगढ वास्तव्य ऊसवाल बृहदशाखायां करप्त दीपा गौत्रे चंदा साथ संघवी संघेन पार्श्वनाथ बिंब कारिंत''

2. मूलनायक के दाहिनी ओर ऋषभदेव भगवान की 15'' ऊँची प्रतिमा है। चिह्न स्पष्ट नहीं है। लेकिन जटा होने के कारण ऋषभदेव भगवान की प्रतीत होती है। कोई लेख नहीं है।

3 मूल भगवान के बाईं ओर श्री मल्लीनाथ भगवान की प्रतिमा श्याम पाषाण की 15'' ऊँची है। कोई लेख नहीं है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र (धातु की)

1. श्री चन्द्र प्रभु जी की पंचतीर्थी प्रतिमा 7'' ऊँची है। लेख इस प्रकार है :–

   ''सं. 1509 वर्षे आषाढ विद 9 श्री सांडेर गच्छे ऊँ गुघलिया गौत्रे सा. श. पुत्र पूना

भा. पूनादे पुत्र वाथाकेन ता भार्या नागलदे पिता श्रेयसे श्री चन्द्रप्रभु स्वामी बिंब प्रतिष्ठितं श्री यशोभद्र सूरि–संताणे शान्तिसूरिभि''

2. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 3'' ऊँची है। यह प्रतिमा पीतल के सिंहासन पर विराजित है। लेख इस प्रकार हैः

   ''सं. 1619 श्री मूल संघे श्री सुमति कीर्ति उपदेशात् रामा भा. रसादे सु. बुधा भार्या''

3. चौबीस तीर्थी प्रतिमा 11'' ऊँची है। लेख अपठनीय है।
4. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 9'' ऊँची है। मस्तक पर सर्प का फण है।
5. यंत्र जो स्तंभ पर सिद्धचक्र स्थित है, ऊपर कलश बना हुआ है।
6. गोलाकार सिद्धचक्र यंत्र 5'' व्यास का है। इस पर लेख है :–

   ''कच्छभुज–सुश्राविका पार्वतीबाई राधवजी नायक सु श्राविका तारतभेया करापिलमिद्म श्री सिद्धचक्र यंत्र प्रतिष्ठिंत च तपागव्छी आचार्य रामचन्द्र सूरीश्वर जी रौ श्री संघ कृते जन्म हे वि.सं. 2021 वि. सं. 2411 पौष कृष्णा 12 तिथौ शुक्रवासरे। मुम्बई वीले पारले''

7. गोलाकार सिद्धचक्र यंत्र 5'' व्यास का है। इसके चार पाये हैं।
8. अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 6" x 3" है।

बाहर सभा मंडप में निज मंदिर से बाहर निकलते हुए दाहिनी ओर शैरीसा पार्श्वनाथ भगवान की धातु की प्रतिमा 11'' ऊँची है। इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा श्रीमान् महावीर जी, पारस जी रांका दादाई वालों की ओर से करवाई गई। दिनांक 11.12.88 ।

इसी प्रकार बाईं ओर एक आलिए में 11'' ऊँची धातु की श्री सम्भवनाथ स्वामी की प्रतिमा है।

प्रतिष्ठा : – श्रीमती जतनबाई विजयसिंह जी सिंघवी की ओर से स्व. अनिल की यादगार में दिनांक 11.12.88 को कराई गई।

इसी सभा मंडप में – दक्षिणी दीवार पर श्री केशरियानाथ जी की प्रतिमा श्याम पाषाण की 13'' ऊँची है।

प्रतिष्ठा – श्री सुरेन्द्र कुमार महेश कुमार तेजसिंह जी दोशी की ओर से दिनांक 11.12.88 को कराई गई।

सभा मंडप की उत्तरी दीवार में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

1. मध्य में श्री नेमीनाथ भगवान की 5'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

2. उक्त प्रतिमा के दाएँ जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है।

3. इसी प्रकार मध्य प्रतिमा के बाएँ जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। कोई लेख नहीं है। **छोटे सभा मंडप से बाहर निकलते समय बाएँ (बाहर से दाएँ)।** एक आलिए में पद्मावती देवी की 11'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है देवाली ग्राम इसके नीचे दीवार पर लिखा है :—

श्रीमान् भीमराज जी पन्नालाल जी मेहता परिवार की ओर से गोखड़ा श्रीमान् चन्दुलाल जी जवानमल जी बांकली ने बनवाया। दिनांक 11.12.88 को।

बाहर निकलते समय दाएँ (प्रवेश करते हुए बाएँ) पार्श्व यक्ष की 11'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है। इस पर लेख है :—

देवाली ग्राम सं. 1816 (अस्पष्ट) ?

श्री जैन संघेन पार्श्व यक्ष बिंब का.प्र. श्री आचार्य श्री विजय जितेन्द्रसूरी... (?)

बाहरी सभा मंडप के दक्षिणी दीवार के एक आलिए में नाकोडा भैरवजी की 15'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इसके दीवार पर लेख है :

''परम् पू. आ.दे. श्रीमद् विजय सूरीश्वर जी म.सा. व आपके शिष्य रत्न प.पू. आ. दे. श्रीमद् विजय आनन्दगंज सूरीश्वर जी म.सा. व मुनिराज श्री विश्वचन्द्र वि.म. सा. एवम् साध्वी श्री सुदर्शना श्री. सा. चन्द्रकला श्री, सा. शीलकान्ता श्री जी की प्रेरणा से नाकोडा भैरवजी का गोखड़ा निर्मित कर प्रतिष्ठा का लाभ बसन्तीलाल जी पिता रूपलाल जी धर्मपत्नी श्रीमती कमला बेन पुत्र उज्ज्वल हेमन्त पुत्र वधू श्रीमती वीना भंडारी परिवार नान्देशमा हाल खारोल कोलोनी, उदयपुर दिनांक 3.3.1991।

इसके सामने उत्तरी दीवार में एक आलिए में मणिभद्र जी की प्रतिमा ''मूंगे'' की ताले में रहती है। इसके नीचे दीवार पर लेख है :— परम् पू. आ.दे. श्रीमद् विजयभुवन सूरीश्वर जी म.सा. व आपके शिष्यरत्न प.पू. आ.दे. श्रीमद् विजय आनन्दधन सूरीश्वर जी म.सा. व मुनिराज श्री विश्वचन्द्र वि.म.सा. एवं साध्वी श्री सुदर्शन श्रीजी, सा. चन्द्रकला श्रीजी, सा. शीलकान्ता श्रीजी की प्रेरणा से मणिभद्र जी का मोखला श्री जीवनसिंह जी, शान्तिलाल जी, रणजीतसिंह पिता भीमराज जी माता सोहन बेन ने निर्मित करा प्रतिष्ठा का लाभ पुत्र वधू प्रकाश बेन धर्मपत्नी श्री रणजीतसिंह जी भतीजा गजेन्द्र, जगत, हिनी, जुबी मेहता परिवार दिनांक 3.3.1991

पूर्वी दीवार में बाहर से प्रवेश करते समय दाहिनी ओर एक आलिए में पार्श्व अधिष्ठायक जी (गजानन जी) की 21'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे दीवार पर लेख हैं :—

प्रतिष्ठा : – श्रीमान् सम्पतराज पुत्र धनराज जी गेमावत एवम् परिवार निवासी शिवगंज की ओर से दिनांक 11.12.1988।

बाईं ओर– भोमिया जी महाराज की 1.7'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है।

दीवार पर लेख है :–

प्रतिष्ठा – श्री महावीर जी पारस जी रांका दादाई वाला की ओर से 11.12.1988 बाहरी सभा मंडप के उत्तरी दीवार पर श्यामला पार्श्वनाथ भगवान सम्मेदशिखर जी तीर्थ का पट्ट तथा दक्षिणी दीवार पर आदेश्वर भगवान व शत्रुंजय तीर्थ का पट्ट लगे हुए है।

जीर्णोद्धार की सूची दीवार पर लिखी हुई है। इस मंदिर का ट्रस्ट बना हुआ है, कमेटी द्वारा देख–रेख की जाती है। प्रवेश के समय दाहिनी ओर एक कमरे में निम्न गुरुओं की प्रतिमाएँ विराजमान है।

1. मध्य में श्रीमद् विजय रामचन्द्र सूरि जी महाराज की 21" ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।
2. श्रीमद् विजय भुवनसूरि जी महाराज की 19" ऊँची प्रतिमा गुलाबी पाषाण की है।
3. श्रीमद् विजय सुदर्शन सूरि जी महराज की 22" ऊँची प्रतिमा गुलाबी पाषाण की है।

इन तीनों ही प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा वि.सं. 2062 ज्येष्ठ शुक्ला 11 दिनांक 18.06.05 को करवाई गई।

❑❑❑

श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर
अम्बामाता स्कीम, उदयपुर

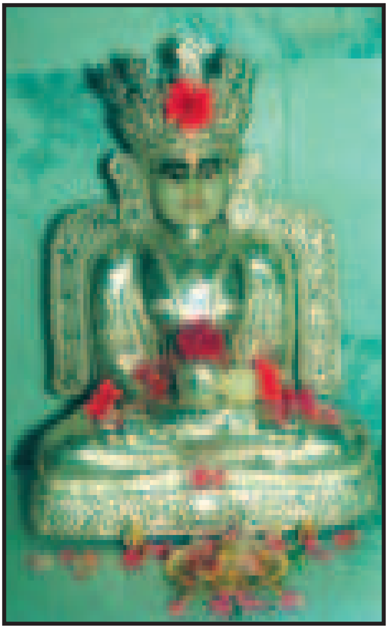

यह मंदिर उदयपुर के चेतक चौराहा से झाडोल जाने वाली मुख्य सड़क के बाईं ओर अम्बामाता पुलिस स्टेशन के सामने स्थित है।

इस मंदिर व उपाश्रय आदि के लिये 25500 वर्ग फीट भूखण्ड नगर विकास न्यास से रियायती दर पर (रु. 4.50 प्रति वर्ग फीट से) क्रय किया गया। मंदिर निर्माण में आर्थिक सहयोग संस्थाओं और व्यक्तिगत रूप से प्राप्त हुआ है।

मंदिर महावीर साधना एवं स्वाध्याय समिति अम्बामाता स्कीम, उदयपुर के अन्तर्गत संचालित हैं।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. श्री वासुपूज्य भगवान (मूलनायक) की 23'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''श्री वासुपूज्य जिन बिंब कारितं उदयपुर संघ कृते आ. श्री विजय भुवन तिलक सूरि शिष्य आ. अशोक सूरि सदुपदेशात् नागोर निवासी कुणाल गौत्रीय स्व. भंवरचन्द्र प्रकाश चन्द्र हस्तीमल पौत्र अशोक प्रदीप पवन...विजय.'' ...... आगे सीमेंट में दब गया है।

   दीवार पर लिखा है :– ''श्री नारायणदास भार्या कमलादेवी पुत्र हुलास, कैलाश, शेलेश, पौत्र आयुष सकलेचा परिवार बालोतरा द्वारा प्रतिष्ठित दिनांक 26.11.1995''

2. श्री विमलनाथ भगवान की प्रतिमा (मूलनायक की दाहिनी ओर) 15'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''श्री विमलनाथ जिन बिंब कारितं उदयपुर संघ कृत आ. विजय भुवन तिलक सूरि शिष्य अशोक सूरि उपदेशात् प्रतिष्ठितम् आ. जितेन्द्र सूरिभिः वि.सं. 2049 मृग शुक्ला सादड़ी नगरे भवरचन्द जी पुत्र प्रकाश चन्द्र हस्तीमल पौत्र अशोक प्रदीप, पवन। वेदी पर लेखा है :–

   ''श्री रोशनलाल जी भार्या कुसुम बाई पुत्र अभय कुमार भरतकुमार विक्रम कुमार दोशी हुमड़ परिवार उदयपुर द्वारा प्रतिष्ठित''

3. श्री कुंथुनाथ स्वामी (मूलनायक की बाईं ओर) 17'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है।

इस पर लेख है :– ''कुंथुनाथ जिन बिंब कारितं उदयपुर संघ कृते आ. विजय भुवन तिलक सूरि शिष्य आ. अशोक रत्न सूरि सदुपदेशात सादडी नगरे वि.सं. 2049 मृग शुक्ला भंवरचन्द्र जी पुत्र प्रकाश चन्द्र हस्तीमल पौत्र अशोक प्रदीप पवन। वेदी पर लेख है :–

''श्री कन्हैयालाल जी कान्ता देवी पुत्र राकेश निर्मल एवं संजय करणपुरिया अम्बामाता स्कीम उदयपुर द्वारा प्रतिष्ठित''।

वेदी की दीवार के बीच लक्ष्मीदेवी की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इस पर लेख है :– ''सुजानसिंह जीवनसिंह जी।''

परिक्रमा परिक्षेत्र में पूर्वी दीवार (मूलनायक के पीछे की दीवार) के एक आलिए में –

1. श्री मणिभद्र जी की 17'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– ''श्री मणिभद्र बिंब प्रतिष्ठतं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितं च हिम्मतसिंह .....भार्या मनोहरदेवी सुपुत्र मनोहरसिंह पौत्र कपिल महता अम्बामाता वास्तव्येन'

इसी दीवार पर दक्षिण के एक आलिए में –

2. श्री रत्नप्रभसूरि जी की प्रतिमा श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची है। इस पर लेख है– ''ओसवाल वंश के संस्थापक आ. देव श्री रत्न प्रभ सूरीश्वर मूर्तिः प्रतिष्ठतां आ. जितेन्द्र सूरिभिः कारितंच बादाम बाई रोशनलाल जी दलपतसिंह जी सुराणा।''

दीवार पर लिखा है :–

''श्री लालचन्द्र जी मारवाडी पोलोग्राउण्ड द्वारा प्रतिष्ठितः दिनांक 26.11.1995''

मूल नायक के बाईं ओर की दीवार के एक आलिए में''

3. प्रचण्डा यक्षिणी की 15'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''प्रचण्डा देवी प्रतिष्ठिता तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभिः कारिताच अम्बामाता उदयपुर वास्तव्य धर्मावत गौत्रीय स्नेहलता हीरालाल पुत्र जयदीप शिखा।''

दीवार पर लिखा है :– ''स्व. लालसिंह भार्या कंचन देवी पुत्र मोतीसिंह भार्या मंजु देवी पौत्र पौत्री आयुष–दिव्या इषिता–रक्षिता महता भूपालपुरा उदयपुर द्वारा प्रतिष्ठितं। दिनांक 26.11.1995''।

इसी दीवार पर (सभा मंडप में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर) एक आलिए में –

4 श्री पद्मावती माता की 15'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''श्री पद्मावती देवी प्रतिष्ठितां तपा. आ. प्रेमसूरि भुवन भानु सुरि शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः कारिताच् विमलादेवी हेमन्त ललित सुराणा वि.सं. 20''

नीचे दीवार पर लिखा है :– ''श्री कुन्दनलाल जी कच्छारा की भार्या चन्द्रकान्ता कच्छारा अम्बामाता स्कीम द्वारा प्रतिष्ठितं'' दिनांक 26.11.1995

मूलनायक के दाहिनी ओर की दीवार पर एक आलिए में–

5. कुमार यक्ष की 15'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– श्री कुमार यक्ष बिंब प्रतिष्ठितम् तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभिः कारितंच श्री........मल शोभादेवी सुमन्त सुनीता गिरीश कुमार श्री फतहलाल जी श्रीमती पुष्पा देवी पुत्र हेमन्त नरेश मनिषा मोगरा द्वारा प्रतिष्ठितं दिनांक 26.11.1995''

6. श्री नाकोड़ा भैरव जी की 17'' ऊँची प्रतिमा (इसी दीवार पर पश्चिम की ओर) (मंदिर में प्रवेश करते समय बाईं ओर) पीत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

   ''श्री नाकोड़ा भैरव प्रतिष्ठितः तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सुरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः कारितश्च अम्बामाता उदयपुर वास्तव्य सुराणा गोत्रीय भूरीलाल जी पुत्र हरिसिंह पौत्र दिलीप कुमार जितेन्द्र कुमार सुनिलकुमार वि.सं. 2052 माघशीर्ष शुक्ल 5 सोमवारे उदयपुर स्थ :

   दीवार पर लिखा है :– ''स्वर्गीय श्री भूरीलाल जी भार्या अम्बाबाई पुत्र हरिसिंह भार्या, कान्तादेवी पौत्र दिलीप कुमार–आशा, जितेन्द्र कुमार–तनु, सुनिल कुमार–नीलू प्रपौत्र गोरांश तन्मय सुराणा अम्बामाता स्कीम उदयपुर द्वारा प्रतिमा भराई व प्रतिष्ठिता दिनांक 26.11.1995''

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. चौबीस तीर्थी वासुपूज्य स्वामी की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

   ''श्री नेमिनाथ 42 तमें – नेमी द्वितीय वैशाख शुक्ल 13 तिथौं रविवारे शुभ लग्न मुहरत मरूधरे श्री समदडी निवासी''

   ''स्वस्ति श्री वीर सं. 2519 वि.सं. 2049 स्व. श्री आ. नगरे गढ सिवाणा श्रेयार्थ श्री भीमराज भगवान चन्द्र......एनाया आत्म इत्येनव चतुर्विशन्ति जिन प्रवर श्री वासुपूज्य स्वामी जिन बिंब भीदं कारितं प्रतिष्ठतं शासन सम्राट तपा. गच्छाधिपति श्रीमद विजय नेमिसूरीश्वरस्य लावण्य सूरीश्वरस्य पट्टधराचार्य श्रीमद् विजय सुशील सूरीश्वरे स्व पट्टधर पन्यास श्री जिनोत्तम विजय गणिवरादि सहितेन श्री रस्तु''

2. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 6'' व्यास का है। इस पर लेख है :– वि.सं. 2045 वैशाख शु. 5 बुधे लुणावत भद्रंकर नगरे तपा. आ. प्रद्योतनसूरि आ. जितेन्द्र सूरिभिः सिद्ध चक्रं प्रतिष्ठितं कारितंच पादरली वास्तव्य स्व. हीराचन्द्र जेरूप जी परिवारेण शुभूभ्यात्''

3. श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा 6'' ऊँची है। इस पर कोई लेख नहीं है। केवल लांछन स्पष्ट है। यह प्रतिमा मणिभद्र जी की प्रतिमा के आलिए में है। सम्भवतया इसकी पूजा नहीं होती है।

   मंदिर में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ व केशरिया जी के चित्र लगे हुए है।

❑❑❑

श्री महावीर भगवान का मंदिर
मोती मगरी स्कीम, उदयपुर

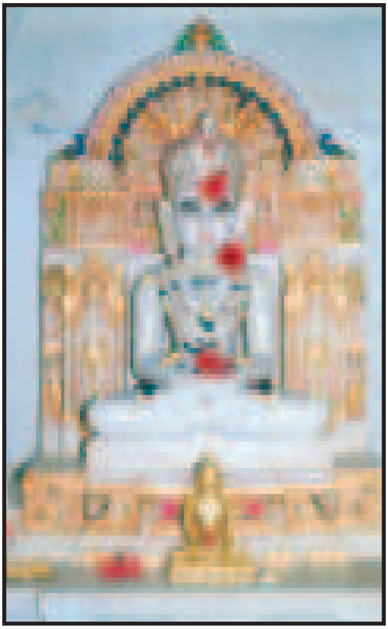

यह मंदिर चेतक चोराहा से सहेलियों की बाड़ी के मार्ग में मुख्य सडक के दाहिनी ओर करीब 100 गज दूरी पर नगर विकास प्रन्यास कार्यालय के पास स्थित है। इस मंदिर की भूमि किसकी है, स्पष्ट नहीं है।

इस कॉलोनी के धर्म प्रेमी सदस्यों ने विचार किया कि कॉलोनी में जैन मंदिर होना आवश्यक है। विचारों के अनुरूप एक छोटा मंदिर (जिसको पुराना मंदिर कहा जाता है) निर्माण कर महावीर स्वामी की प्रतिमा को अन्यत्र से लाकर मंदिर में विराजमान करा दी। इस कार्य के लिये किसी प्रकार की आपत्ति नहीं होने से चार दीवारी व विशाल शिखरबंद मंदिर श्री धर्मचन्द जी पोरवाल (वास वाले) ने पूर्ण करा प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न करवाया गया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. श्री महावीर स्वामी (मूलनायक) की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है, जिसकी परिकर तक ऊँचाई 41'' है। इसके नीचे लेख है :–

   ''श्री महावीर जिन बिंब प्रतिष्ठितं कर्म साहित्य निष्णान्त तपा आ.श्री. प्रेम सूरीश्वर पट्टधर आ, भुवन भानु सूरिस्य शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः तत्शिष्य गुणरत्न सूरिभि राजस्थानान्तर्गत जालौर जिलाया वादणवाडी नगरे कारितंच – पोरवाल जातीय वास वास्तव्य अर्जुनलाल जी तद्भार्या लहरबाई पुत्र धर्मचन्द्र तद्भार्या कमलादेवी सुत सुरेशकुमार पौत्र पुनितकुमार अर्पित कुमार वि.सं. 2054 माघ शुक्ले 13 सोमवार परिकर स्वर्ण रेखा से रेखांकित होने से सुन्दर बन गया है।

2. कुंथुनाथ स्वामी (मूलनायक के दाहिनी ओर) की 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :–

   ''श्री कुंथुनाथ जिन बि. प्रतिष्ठितं कर्म साहित्य निष्णान्त तपा. आ. श्री. विजय प्रेमसूरीश्वर– पट्टधर भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः तत्शिष्य गुणरत्न

सूरिभ्याम् कारितन्च पोरवाल जातीय वास वास्तव्य धर्मचन्द्र पुत्र सुरेश कुमार तद् भार्या पुष्पा देवी सुत पुनितकुमार अर्पित कुमार 1 वि.सं. 2054 माघ शुक्ला 13 सोमवासरे शुभूयात्।''

3. श्री शीतलनाथ (मूलनायक के बाईं ओर) भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :–

   ''श्री शीतलनाथ जिन बि. प्रतिष्ठत कर्म साहित्य निष्णान्त तपा.आ. प्रेम सूरीश्वर पट्ट घर श्री भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः तद् शिष्य गुणरत्न सूरिभिश्य कारितंच पोरवाल कोठारी जातीय उदयपुर वास्तव्य धर्मचन्द्र जी के ब्याई जी जोघराज तद्भार्या जीवनदेवी सुत रोशनलाल तदभार्या मधुबाला पुत्र गगन कुमार नकुल कुमार वि.सं. 2054 माघ शुक्ला 13 सोमवार शुंभूयाते''

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :–

1. श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा 9'' ऊँची है। इसके पीछे लेख है :– ''श्री शांतिनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं वादणवाडी नगरे स्थानीय जैन समस्त संघेनकृते महोत्सवे तपा. आ. विजय प्रेमसूरीश्वर पट्टधर आ. भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य आ. जितेन्द्र गुणरत्न सूरिभ्यां गणिय श्री रत्न विजय उपदेशात् करापित कोशीथल वास्तव्य सोलंकी गौत्रीय लादुसिंह (वावडीवाला, वि.सं. 2054 माघ शुक्ला 13.''

2. अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 5'' x 2'' है। इसके पीछे लेख है :–

   ''वि.सं. 2054 माघ शुक्ला 13 सोमवार प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम भुवन भानुसूरि शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः कारितं च श्रीमती सुमतिबाई लालचन्द्र जी आत्मा श्रेयोर्थ सा निहालचन्द्र रणजीत'' संजय–नितेश बेटा–पोता लालचन्द जी छगाजी सो ''———अष्ट मंगल वादनवाडी।''

3. गोलाकार सिद्धचक्र यंत्र 4'' व्यास का है। इसके पीछे लेख है :– वि.सं. 2054 माघ शुक्ला 13 सोमवासरे सिद्धचक्र यंत्रं प्रतिष्ठतं तपा. आ. प्रेम सूरीश्वर भुवन मानुसूरि शिष्य जितेन्द्र सूरिभि कारितंच शाह ताराचन्द्र प्रकाश कुमार बेटा पोता पुनमचन्द्र मगन जी बोहरा श्री वादनवाडी

4. बीस स्थानक यंत्र 9'' ऊँचा है। इसके पीछे लेख है :– ''श्री बीस स्थानक यंत्र प्रतिष्ठापितं वादनवाडी नगरे समस्त जैन संघेन तपा. आ. विजय भुवन भानु सूरि शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः कारितन्च''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर एक आलिए में :–

1. श्री सिद्धायिका देवी की 13'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है इसके नीचे लेख है :– ''तपा. आ. श्री प्रेमसूरीश्वर पट्टधर भुवन भानु सूरि शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः कारितंच———धर्मपत्नी सीमा पुत्र हिमांशु कि ––वि.सं. 2054 वैशाख कृष्ण सप्तभ्यां (आगे सीमेंट में दब गया है)''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर आलिए में :—

2. श्री मातंग यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :—
''तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभिः कारितंच श्री अर्जुनलाल तदृभार्या लहरबाई पुत्र धर्मचन्द्र तद्भार्या, कमलादेवी सुत सुरेश कुमार पौत्र पुनित कुमार अर्पित कुमार वि.सं. 2054 माघ शुक्ला 13 सोमवार।

सभा मंडप में प्रवेश करते समय बाईं ओर एक आलिए में :—

1. श्री नाकोडा भैरव जी की 13'' ऊँची प्रतिमा पीत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :—''श्री नाकोड़ा भैरवः प्रतिष्ठितः तपा. आ. श्री प्रेम सुरीश्वर पट्टधर भुवन भानु सूरि शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः वास वास्तव्य पोरवाल जातिय सुरेशकुमार तद् धर्मपत्नी पुष्पा देवी पुत्र पुनित कुमार अर्पित कुमार वि.सं. 2054 वैशाख शुक्ला 7 शुभंभूयात्''

इसी दीवार पर सभामंडप में प्रवेश करते समय बाएँ व **निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर एक आलिए में :—**

2. श्री मणिभद्र जी की 13'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :—
''श्री मणिभद्र प्रतिष्ठितः तपा. आ. श्री प्रेमसूरीश्वरस्य पट्टधर भुवन भानु सूरीश्वरस्य शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः कारितश्च वास वास्तव्य पोरवाल जातीय धर्मचन्द धर्मपत्नी कमला देवी ————''

सभा मंडप में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर एक आलिए में :—

3. पद्मावती देवी की प्रतिमा श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची है। इसके नीचे यह लेख है :—
श्री पद्मावती देवी प्रतिष्ठापिता तपा. आ. श्री प्रेम सूरीश्वरस्य पट्टधर भुवन भानु सूरीस्य शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः कारिताच रोशनलाल मधुबाला पुत्र गगन कुमार नकुल कुमार वि.सं. 2054 माघ शुक्ला 13 सोमवार''

इसी दीवार में एक आलिए में निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर

4. श्री गोतम स्वामी की 19'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :—
''श्री गौतम स्वामी बिंब प्रतिष्ठितं कर्मसाहित्य निष्णान्त तपा. आ. श्री प्रेमसूरीश्वर पट्टधर भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः राजस्थानान्तर्गत जालोर जिलायां वादनवाडी नगरे''

सभा मंडप में प्रतिष्ठा प्रशस्ति लिखी हुई है। उसका सारांश यह है :—

श्री अर्जुनलाल तत्पुत्र धर्मचन्द्र जी पोरवाल के परिवार ने स्वद्रव्य से मंदिर निर्माण करा प्रतिष्ठा समारोह पाँच दिन का उत्सवपूर्वक मनाया जाकर प्रतिष्ठा वि.सं. 2055 चैत्र कृष्ण सप्तमा राशि लग्न को सम्पन्न हुई।

मंदिर परिसर में प्रवेश द्वार के सामने एक पुराना महावीर स्वामी का घूमट बंद मंदिर है। इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :—

1. श्री महावीर स्वामी की 15'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– ''श्री महावीर जिन बिंब शासन सम्राट पूज्य आ. विजय प्रेम सूरीश्वर''

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. श्री मल्लिनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची है। इसके नीचे लेख है :– ''वि.सं. 2045 वै. शुक्ला बुधै भंद्रकर नगरे मल्लि जिन बि. प्रतिष्ठतं प्रद्योतन सूरि जितेन्द्र सूरि कारितन्च सिवाणा वास्तव्य बागरेचा गौत्रीय स्वर्गीय मुल्तान मल भार्या झमुदिव्या। शुभंभूयात्''
2. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 9'' व्यास का है। इसके पीछे लेख है :– ''श्री खरतरगच्छे आ. श्री जिन कान्ति सागर सूरीश्वर शिष्य उपाध्याय मणिप्रभ सागरेण प्रतिष्ठापितं श्री सिद्धाचल तीर्थे जिन हरि विहार वी.सं. 2529 वि.सं. 2059 कार्तिक सुदी 13 लाडकुंवर नाहर स्व. दौलतसिंह जी नाहर पंचवटी, उदयपुर।
3. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 5'' व्यास का है। इसके पीछे लेख है :–

   वि.सं. 2024 वै.शु. 2 भृगो न मु.यु. जिन जैन सर्वे श्री सु.नं. औसवाल सा. कोचर जयवन्तराज पुत्र गुलाबचन्देण सर्व श्रेयोर्थ श्री सिद्धचक्र पट्ट सा. फा. प्रा. आचार्य श्री विजय जिनेन्द्र सूरीश्वर दिनांक 29.5.1967
4. तांबे का यंत्र जिसका आकार 13'' x 9'' है। इस पर लिखा है शांतिकार यंत्र
5. स्थापित चरण पादुका 5'' x 5'' आकार की श्वेत पाषाण की है।

   इस मंदिर में श्री सम्मेद शिखर जी नागेश्वर पार्श्वनाथ व गिरनार जी तीर्थ के पट्ट लगे है।

   इस मंदिर परिसर में नीलकंठ महादेव का मंदिर भी स्थापित है। जिसका जिर्णोद्धार श्वेता. मूर्ति संघ ने करवाया है।

   इसकी देख–रेख नीलकंठ महावीर चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा की जाती है। भूमि पूजन श्री तेजसिंह जी दोशी पुत्र अशोक कुमार धर्म पत्नी अरूणा पुत्र माधव पुत्री सुश्री सुमन दोशी, उदयपुर द्वारा दिनांक 10.03.96 को सम्पन्न हुआ।

❑❑❑

श्री पद्मनाभ स्वामी का मंदिर (भावी चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर), चौगान चौराहा, उदयपुर

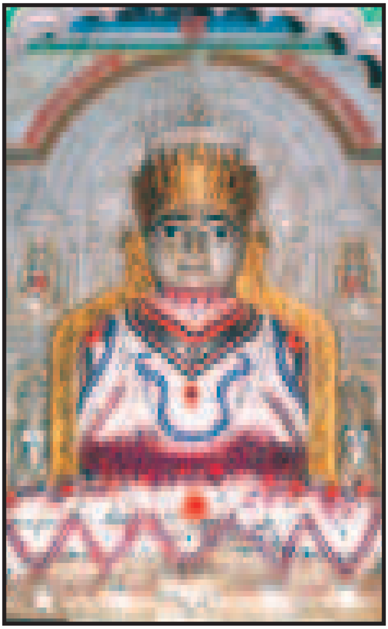

यह मंदिर चेतक चौराहे से स्वरूप सागर–फतह सागर की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के दाहिनी ओर स्थित है।

इसी परिसर में शांतिनाथ जी, महावीर स्वामी जी, अजितनाथ जी, गौतम स्वामी के मंदिर भी विद्यमान है। इस मंदिर की जमीन का कुछ हिस्सा खरीदा गया। कुछ हिस्सा महाराणा अरिसिंह जी द्वारा बक्षीस दिया गया, व कुछ जमीन भेंट स्वरूप प्राप्त हुई है।

प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख के आधार पर मंदिर में स्थापित प्रतिमाओं की अंजनशाला सेणपाल नवलखां ने संवत् 1492 में महाराणा कुभकर्ण के समय में अद्भुत जी तीर्थ पर की गयी। इन प्रतिमाओं को गुजरात के श्रावक श्री कपूरचन्द्र वर्द्धमान अद्भुततीर्थ से पाटन ले जाते वक्त रात्रि में विश्राम वर्तमान मंदिर परिसर में किया। दूसरे दिन प्रस्थान करने पर बैलगाड़ियाँ चली नहीं तो श्रावक ने यहाँ (इसी स्थान) पर संवत् 1816 में जमीन खरीद कर मंदिर बनवाने का कार्य प्रारम्भ किया। इसी समय में शाह कपूरचन्द जी की पुत्रवधू का स्वास्थ्य खराब हो गया इसलिए उसने अपने पति को कहकर अजितनाथ भगवान व अन्य प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा संवत् 1817 में करवाई। उनका स्वास्थ्य ठीक होने पर मंदिर का कार्य पूर्ण करा कर मूलनायक श्री पद्मनाभ स्वामी व पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिष्ठा संवत् 1819 में माघ शुक्ला 5 को सम्पन्न हुई। इस प्रकार 5 प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा संवत् 1817 वैशाख शुक्ला 10 को व दो प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा संवत् 1819 माघ शुक्ला 5 को सम्पन्न हुई। प्रतिष्ठा के बारे में निम्न दो मत है :–

1. संवत् माघ शुक्ला 5 बुधवारे को नवलखा गौत्र के वर्द्धमान के पुत्र कपूरचन्द ने खरतरगच्छीय दोशी कुशलसिंह उनकी भार्या कस्तुरबाई व उनकी पुत्री माणक बाई की सहायता से यह बिंब बनवाया और खरतरगच्छीय हीरसागर गणि ने प्रतिष्ठा की। (उदयपुर के मंदिर मेरी मेवाड़ यात्रा श्री विद्या विजय जी सं. 1992 (पृष्ठ सं. 79) ऐसा ही लेख प्रतिमा पर भी उत्कीर्ण है)
2. प्रतिष्ठा सागर समुदाय के सुज्ञान सागर जी महाराज द्वारा सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. मूल नायक श्री पद्मनाभ स्वामी की श्वेत पाषाण की 95'' ऊँची व 81'' चौड़ी प्रतिमा है तथा परिकर 135'' ऊँचा व 103'' चौड़ा है। इसके पबासन पर लेख है :– ''स्वस्ति श्री मन नृप विक्रमार्क संवत् 1819 वर्षे शालिवाहन शाके 1684 प्रवर्तमाने मासोतमासे माह मासे शुक्ल पक्षे 5 बुधवासरे श्री मदुवयपुरे वास्तव्य मेदपाट देशे इदबाग (कु) वंशे सीसोदिया गौत्रे गढ़पति महाराणा श्री अरिसिंह विजय राज्ये तस्य नगर वास्तव्य ऊशवंशें वृद्धि शारवायाम् नवलख सेणपाल देवकुल पत्तने खरतरवसही कृत जिन वर्द्धनसूरि उपदेशात् संवत् 1492 वर्षें कारितम् महाराणा कुंभकर्ण राज्य मध्ये महाइष्टदाय कारितम् नागदा नगरे अद्बुद तीर्थ कारितम् तस्य। महाद्रव्य ब्ययो कारित – द्रव्य खरच्यो तस्य कुले कुलावर्तमेक नवलखा साह वर्द्धमा तस्य भार्या विमलादे तस्य पुत्र जिनधर्मरता सुश्रद्धावन्त रतनत्रयी धर्मवल्लभ पुन्य पुनित शाह कपूरचन्द्र वर्द्धमान स्व पद सम्यक सहित करायि स्वभाव निर्मली करणे कर्मक्षय कारक अनागत चौबीसी मध्य प्रथम प्रभु श्रेणिक जीव श्री महावीर भक्ति वशेन तीर्थंकर नाम कर्म्मोपर्णि तस्या भिघांन पद्मनाभ तीर्थंकर कारित जंगम् युग प्रधान चक्र चूडामणि दो हजार चार वर्तमान चौबीसी मध्य काद (ब) तारि श्री जिन धर्म व्रतादिक पुन्ये सहाय दोष अविशन निवारक अग्न्यान विधंसक (विध्वसंक) स्वपर हितकारक दुप्पसह प्रमुख वर्द्धमान हर्ष सुरिभिः प्रतिष्ठितम।

   ''जिन दुख्य सहिष्णु प्रर्वतमान संद्धर्भ सूरिभिः, श्री रस्तु''

   महोपाध्याय श्री हीर सागर गणिभिः खरतरगच्छे प्रतिष्ठितम् श्री रस्तु कल्याण मस्तु

   ''दोसीजी श्री कुशलसिंह जी की भार्या कस्तुरदे तस्य पुत्री बाई माणक साहन्येन कारितम् श्रे. यो. श्री कल्याणम् श्री ।। श्री।। कारीगर – गजधर दौलतराम वि.सं.

2. मूल नायक के दाहिनी ओर श्री पार्श्वनाथ भगवान की 69'' ऊँची व 57'' चौडी प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। परिकर 101'' ऊँचा व 81'' चौड़ा है।

   ''इस प्रतिमा के पबासन पर यह लेख है :– ''स्वस्ति श्रीमन् नृप विक्रमार्क संवत् 1819 वर्षे शालिवाहन शाके 1684 प्रवर्तमाने मासोत्तममासे माह मासे शुक्ल पक्षे 5 बुधवासरे मदुदयपुर वास्तव्य मेदपाट देशे इदबाग (कु) वंशें सीसोदिया गोत्रे गढ़पति महाराणा श्री अरिसिंह विजय राज्ये तस्य नगर वास्तव्य ऊशंवशें वृद्धि शारवायाम् नवलख सेणपाल देवकुल पतने खरतरवसही कृत जिनवर्द्धनसूरि उपदेशात् संवत् 1492 वर्षें बारितम् महाराणा कुभकर्ण राज्य मध्ये इष्टदाय कारितम् नागदा नगरे अद्बुद तीर्थ कारितम् तस्य।। महाद्रव्य व्यर्यो कारीति– द्रव्य खस्च्यो तस्य कुले कुलावतमक नवलखा शाह वर्द्धमानतस्य भार्या विमलादे तस्य पुत्र जिनधर्मरत सुश्रद्धावन्त रतनत्रयी धर्म वल्लभ पुण्य पुवित शाह कपूरचन्द्र वर्द्धमान स्व पद सम्यक् सहित कराय स्वभव निर्मली करणे कर्मक्षय कारक अनागत चौबीसी मध्ये प्रथम प्रभुः श्रेणिक जीव श्री

महावीरः भक्तिवशेन तीर्थंकर नाम कर्मोपार्जि तस्या भिघान पद्नाभ तीर्थंकर कारित जंगम युग प्रधान चक्र चूडामणी दो हजार चार वर्तमान चौबीसी मध्य काद (ब) तारे श्री जिन धर्म व्रतादिक पुन्ये सहाय दोष अविशन निवारक (अगन्यान) अज्ञान विघसंग (विध्वंसक) (स्वहितकारक दुप्पसह प्रमुख वर्द्धमान हर्ष सूरिभि प्रतिष्ठितम्।

3. पार्श्वनाथ भगवान के दाहिनी ओर के आलिए में ऋषभर्देव भगवान की 61'' ऊँची व 48'' चौडी प्रतिमा श्वेत पाषाण की है, परिकर 85'' ऊँचा व 65'' चौड़ा है। इस पर लेख है :–

''श्री मन्नृप विक्रमार्क समयातीत संवत 1817 वर्षे शालिवाहन शाके 1683 प्रवर्तमाने वैशाख मासे शुक्ल पक्षे 10 बुधवासरे श्री मदुदयपुर महादुर्ग वास्तव्य महाराणा अरिसिंह विजय राज्ये तस्मिन् मंत्री श्री बुद्धिनिधान उपकेश जाति वृद्धि शाखायां वर्द्धमान गोत्रे बापना श्री जैन धर्म वासित दोशी लखु तस्य भार्या ललिता दे तस्य पुत्र भीखू जी द्वितीय पुत्र रूप जी भिखू पुत्र 4 दोशी अड़कपुरजी द्वितीय पुत्र दोशी सामलदास तृतीय पुत्र कुशलसिंह जी चतुर्थ पुत्र सोमजी दोशी 3 कुशलसिंह भार्या कस्तूरदे तस्य पुत्री जैन वासित श्रद्धा रूचि (1) निपुण पुत्री 4 साध्वी प्रथम जिन ऋषभदेव बिंब कारितम् जीर्णोद्धार धनबाई माणक आत्मा अर्थ श्री सुधर्माक परंपरा विहित श्री खरतरगच्छ समुद्र श्री उद्योतन सूरि तत्पट्टे वर्द्धमान सूरि उपदेशात् मिल मंत्री सर श्री ————

इसके आगे के आलिए में :–

4. ऋषभदेव भगवान की 51'' ऊँची व 43'' चौडी प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। परिकर 81'' ऊँचा 65'' चौड़ा है।

इस पर लेख है : कि महाराणा अरिसिंह जी नरपति

''स्वस्ति श्री मन्नृप विक्रमार्क समयातीत संवत् 1817 वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर महागढ़ वास्तव्य उपकेश जातीय वृद्ध शाखाया समस्त श्री संघ समुदायेन प्रारम्भ (प्रथम) जिन ऋषभदेव बिंब कारितम् श्री बृहत्खरतर पीपलिया गच्छे सुधर्मादि परंपरा श्री उद्योतन सूरया तत्पट्टे वर्धमान सूरिभि विमल मन्त्रीसर प्रतिबोधित विमलवसही प्रतिष्ठितम् संवत दस तत्पट्टै दुर्लभराज अण हिल्ल पत्तने खरतर बिरुद संवत् 10 श्री जिनेश्वर सूरि तत्पट्टे जिनचन्द्र सूरिभिः तत्पट्टै श्री अभयदेव सूरि नवांगि वृत्ति कारकं तत्पट्टै जिन वल्लभसूरि तत्पट्टे श्री जिनदत्तसूरि पट्टानुक्रमात्

श्री जिन कुशलसूरि तत्पट्टे तत्पछानु क्रमण श्री जिन वर्धमानसूरि तत्पट्टे श्री जिन सागर सूरि तत्पट्टे श्री जिनसिंह सूरि तत्पट्टे जिन रत्न सूरि श्री जिन वर्धनसूरि तत्पट्टे श्री जिन धर्म सूरि तत्पट्टे श्री संवेग रंगेन रंजित भ. श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य महोपाध्याय श्री हीरसागर प्रतिष्ठितम् ।।श्री।।

5. मूल भगवान के बाईं ओर श्री अजितनाथ भगवान की 63'' ऊँची व 53'' चौड़ी प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। परिकर 101'' ऊँचा 81'' चौड़ा है। इसके नीचे लेख है :

वैशाख शुक्लपक्षे 10 बुधवासरे

स्वस्ति श्रीमन् नृप विक्रमार्क समयातीत संवत 1817 वर्षे शालिवाहन शाके 1683 प्रवर्त्तमाने श्री उदयपुर महादुर्गे महाराणा श्री अरिसिंह विजय राज्ये तस्य पुरे आगतः श्री गुर्जर देशात्। उपकेशज्ञातीय वृद्धिशाखायां नवलखा गौत्रे साह विमल तस्य भार्या विनयादे पुत्र 2 (दो) प्रथम पुत्र वर्धमान द्वितीय पुत्र सोभाग वर्धमान भार्या रतनादे तस्य पुत्र साह कपुरचंद कस्य गणिष देवचंदगणि श्री अग्रे श्री खरतर शाहे आलोयण मध्ये स्व. प्रायश्चित मुज्चनार्थे उपकारिना बृहत् उपदेशात् श्री पद्मनाभ भवने श्री अजितनाथ बिम्बं कारितं श्री सुधर्मादि परमपराया श्री उद्योतन सूरय तत्पदे श्री वर्धमान सूरि विमल मंत्रीश्वर प्रतिबोधित विमलवसही अबुर्दाचले संवत 10 मध्यपदे जिनेश्वर सूरि अणहिल पत्तने दुलर्भ राजाग्रे खरतर बिरूद तत् पदे श्री जिनचंद्र सूरिभिः तत्पदे श्री अभयदेवसूरि नवांगी वृत्तिकारक पदानुकम श्री जिनवल्लभ सूरि श्री जिनदत्तसूरि पदानुक्रमान् श्री जिनकुशलसूरि पदानुक्रमान श्री जिन वर्धमान सूरि श्री जिन धर्मसूरि पत्पदे श्री जिनचंद्रसूरि शिष्य महोपाध्याय श्री हरिसागर जी प्रतिष्ठितं।

इसके आगे के एक आलिए में श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 51'' ऊँची व 45'' चौड़ी प्रतिमा है। परिकर 81'' ऊँचा व 65'' चौड़ा है। इसके नीचे यह लेख है :–

स्वस्ति श्रीसन्नृप विक्रमार्क समयातीत संवत् 1817 वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर गढ़ वास्तव्य उसवाल वृद्धि शारवायां श्री खरतरगच्छ

समुदायेन समस्त श्री संघेन प्रथम ऋषभजिन बिम्बं कारितं श्री बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे सुधर्मादि परंपरा श्री उद्योतन सूरयः तत्पदे वर्धमान सूरयः विमल मंत्रीसर प्रतिबोधि त विमलवसहि अबुर्दाचल प्रतिष्ठित संवत 10 श्री दुलर्भराजपत्तने अणहिलपुरपाटके खरतर बिरूद संवत 10 जिनेश्वर सूरि तत्पटे श्री जिनचंद्र सूरिभिः तत्पटे अभयदेव सूरिभिः नवांगी वृत्ति कारक तत्पटे श्री जिनवल्लभसूरि तत्पटे जिनदत्त सूरि तत्पटानुक्रमात् श्री जिनकुशलसूरि तत्पदानुक्रम श्री जिनवर्धन सूरि पदानुक्रमान् श्री जिनचंद सूरि पदे श्री जिनरतन सूरि श्री जिन वर्धमान सूरि तत्पदे श्री जिनधर्म सूरि तत्पदे संवेग रंगेन रंगित त. (तत्पदे) श्री जिनचंद्र सूरिभिः शिष्य महोपाध्याय श्री हीरसागरजी प्रतिष्ठितं महाराणा श्री अरिसिंह विजय राज्ये कारीगर दोलतराम नग सुपुत्र महाराणा श्री अरिसिंह विजय राज्ये

इसके आगे के आलिए में श्री आदिनाथ भगवान की 51'' ऊँची व 43'' चौड़ी प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। परिकर 81'' ऊँचा व 65'' चौड़ा है। इसके नीचे यह लेख है :–

स्वस्ति श्रीमन् नृप विक्रमाकें समयातीत संवत 1817 वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे सुदि

10 बुधवासरे श्री उदयपुर महादुर्ग वास्तव्य उपकेशज्ञातीय वृद्धि शाखायां खरतर श्री संघ समुदायेन संघेन श्री प्रथमजिन ऋषभदेव बिम्बं कारितं श्री बृहत् खरतर पीपलियागच्छे सुधर्मादि परंपरा श्री उद्योतन सूरयः तत्पदे वर्धमान सूरि श्री प्राग्वट् ज्ञातीय विमल मंत्रीसर प्रति बोधित अबुर्दाचले विमल वसही प्रतिष्ठितं संवत 10 तत्पदे श्री जिनेश्वरसूरि अणहिलपुर पत्तने दुलर्भराज्ये श्री खरतर बिरूदः प्राप्तः संवत् 1080 वर्षे तत्पदे श्री जिनचंद्रसूरि तत्पदे श्री अभय देवसूरि नवांगीवृत्ति कारक तत्पदे श्री जिनवल्लभसूरि तत्पदे श्री जिनदत्तसूरि पदानुक्रमान श्री जिनकुशलसूरि पदानुक्रमान् श्री जिनवर्धनसूरि पदानुक्रमान श्री जिनचंद्र सूरि तत्पदे श्री जिनरतनसूरि तत्पदे श्री जिन वर्धमान सूरि तत्पदे श्री जिनधर्मसूरि संवेगरंगरंगित तत्पदे श्री जिनचंद्र सूरिभिः शिष्य महोपाध्याय श्री हीसागरजी प्रतिष्ठितं कारीगर दोलतराम

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ एवं तांबे के यंत्र :–

1–2. दो गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र व्यास 24'' है। ये दोनों ही एक समय अर्थात् संवत् 1899 शाके 1764 के बने हुए हैं।

3–4. दो ऋषिमंडल यंत्र जिनका आकार 18 x 14'' है।

दक्षिणी दीवार में एक छोटी अलमारी में धातु की निम्न प्रतिमाएँ व यंत्र है।

1. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 5'' ऊँची है। इस पर लेख है :– सं. 2057 वर्षे ———— श्री हिम्मतसिंह चपलोत

2. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 7'' ऊँची है। इस पर लेख है :– सं. 2050 वर्षे कार्तिक कृष्णा 3 गुरुवार परम पू. विजय श्यामसुन्दर जी परम् पू. आचार्य महोदय सूरि जी, नित्यानन्द सूरिजी महाराज सा.

3. जिनेश्वर भगवान की 2'' ऊँची प्रतिमा है।

4. जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। जिस पर लेख है : – 2050 वर्षे कार्तिक कृष्ण 3 गुरुवारे श्री विजय आचार्य श्री रामचन्द्र सूरीश्वर जी प.पू. महोदय, सूरि जी यात्रा श्री –धुपिया परिवारेण

5. अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 5'' x 3'' है। जिस पर लेख है, भीमनगरे वि.सं. 2055 चैत्र कृष्ण 4 शनिवार शा. कुन्दनमल कपूरचन्द्र लूणावा।

6–9. चार अष्ट मंगल यंत्र जिनका आकार 5'' x 3'' है। जिस पर लेख है भीमनगरे विक्रम संवत 2055 चैत्र कृष्णा 4 श्री पुखराज वीरचन्द्र जी वेलाजी वास पिण्डवाड़ा

(नोट चारों यंत्र एक ही श्रावक ने भराए)

10. अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 5'' x 3'' है जिस पर लेख है :– ''भीमराज जी भगवानचन्द जी धारीवाल सं. 2055 वर्षे चेत्र कृष्णा''

उत्तरी दीवार पर अलमारी में धातु की निम्न प्रतिमाएँ व यंत्र हैं

1. गोलाकार यंत्र सिद्ध चक्र 7'' व्यास का है। इस पर लेख है :– ''स्वस्ति श्री महसानानगरे वि.सं. 2498 वैशाख सुद 6 गुरुवार मुनि वर्द्धमान सागर जी उपदेश थी शान्ताबेन फूलचन्द जावरिया हाल मुम्बई श्री सिद्धचक्र जी भराया। आचार्य श्री कैलाश सागर जी प्रतिष्ठा करायी छे''
2. (चौबीसी) 11'' ऊँची x 6'' चौड़ी है। इसके पृष्ठ भाग में लेख है :– ''महसाना नगरे सं. 1616 वर्षे ज्येष्ठ वदि 2 श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितम् श्री उपकेश गच्छे ———— प्रतिष्ठितं काक्कसूरि महाराणा उदयसिंह जी''

3–4. गोलाकार बीसस्थानक यंत्र 7' व्यास का है। इन दोनों पर एक ही लेख है – ''वि. सं. 2057 माघशिर्ष शुक्ला 11 उदयपुर श्रीमती शान्तादेवी धर्म पत्नी खड़गसिंह जी पुत्र डा. शैलेन्द्र, योगेश हिरण परिवारेण कृता अंजन सलाखा प्रतिष्ठित च विजय जयन्तसूरिणा सुधर्म गणि जावरा नगरें ————

5. धातु का अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 5'' x 3.3'' है।कोई लेख नहीं है।

मध्य अलमारी में धातु की निम्न प्रतिमाएँ व यंत्र है :–

1. पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा जिसके मस्तक पर सर्प का फण है। इस पर लेख है ''डुँगरचन्द्र जी कपूरचन्द्र भंसाली गढ़ सिवाना वि.सं. 2058 फाल्गुन कृष्ण 5 आचार्य श्री जयघोष जितेन्द्र सूरिभ्य''।
2. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 9'' ऊँची है। मस्तक पर सर्प का फण है। इस पर लेख है :– ''पारसनाथ प्रतिष्ठितम् आचार्य श्री जयघोष जितेन्द्रसूरिभ्य नमः कारितम चि. मोतीलाल पुत्र मोहनलाल राठोड़ ब्यावर फाल्गुन कृष्ण 5 वि.सं. 2058
3. ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर लेख है :– ''सुतालातीर्थ भव्य श्री———— वि.सं. 2055 माघ शुक्ला 14''
4. शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा 8'' ऊँची है। इस पर लेख है ''शांतिनाथ बिम्ब प्रतिष्ठितं आचार्य प्रेम सूरि, शिष्य, भुवन भानु सूरि शिष्य जितेन्द्रसूरि लालचन्द धर्म पत्नी सकूबाई पुत्र राकेश अशोक पोखरना विजय नगरे वि.सं. 2056 माघ कृष्ण 3''
5. नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा 9'' ऊँची है। प्रतिष्ठित आचार्य श्री प्रेम सूरिजी पुखराज वृद्धिचन्द्र जी की स्मृति में भाई इन्द्रमल जयन्ति हीराचंद जी परिवार पिण्डवाड़ा सं. 2054 माघ कृष्ण 3 इसवाल उदयपुर
6. पंच तीर्थी (शांतिनाथजी की) प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर लेख है :– ''स्वस्ति श्री महसाना नगरे सं. 2028 वे.शु. 6 गुरुवार महसाना निवासी सा. जवेरकुमार भायला से श्री शांतिनाथ पंचतीर्थी भराया छे तपागच्छे कैलाश सागर सूरीश्वर ने प्रतिष्ठा करायी छे।

7. गोलाकार सिद्ध चक्र जिसका व्यास 6'' है। इस पर लेख है :– कि तपागच्छे आचार्य श्री रामचन्द्र सूरीश्वर जी तस्ये आचार्य श्री महोदय सूरि श्री मानतुंग सूरि श्री मित्रानन्द सूरि प्रसादात् पू. आचार्य श्री रवि प्रेम सूरि आचार्य महाबल सूरि आचार्य श्री पुण्यपाल सूरि वि.सं. 2050 वर्षे कार्तिक कृष्णा 3 चरण 4 गुरुवासरे सिद्धगिरी महातीर्थ कारितम् उदयपुर राजस्थान निवासी सर्वस्व संघ प्रकाश चन्द्र सोहनलाल तत्पत्नी कमला बेन पुत्र प्रतीक पुत्री बीनल समस्त धुप्या परिवारेण सम्प्राष्ये सूरत निवासी ने प्रतिष्ठितम्।

बाहरी सभा मंडप में उत्तरी दीवार पर शत्रुंजय तीर्थ, अष्टापदतीर्थ, पूर्वी दीवार पर –––सम्मेद्शिखर जी, नाकोड़ा तीर्थ, दक्षिणी दीवार पर –––नन्दीश्वर तीर्थ, गिरनार तीर्थ के पट्ट बने हुए है।

सभा मंडप से बाहर निकलते हुए (दाहिनी ओर से)

1. श्री नाकोड़ा भैरव जी की प्रतिमा 17'' ऊँची पीत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''इन्द्रसिंह जी कोठारी आत्म श्रेयोर्थ तत्पुत्र श्री पारसचन्द्र पौत्र भानु विनोद श्री सुशील सूरीश्वरजी –– श्री जिनोत्तम सूरीश्वर गणिभि ।।श्री।। ।।श्र चे ते।।''
2. मणिभद्र जी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा 15'' ऊँची है। इस पर लेख है :– ''दलाल सोहनलाल (आगे अस्पष्ट है)।
3. पद्मनाभ स्वामी के यक्ष–29'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– सं. 1819 माह माघ सु. 5 पद्मनाभ यक्ष प्रतिष्ठित महाराज्य अरिसिंह जी सेठ कपूरचन्द्र (अस्पष्ट)। **बाईं ओर**
4. पद्मनाभ स्वामी की श्वेत पाषाण की यक्षिणी प्रतिमा 29'' ऊँची है। इस पर इसी प्रकार का अस्पष्ट लेख है :– ''सं. 1819 माह माघ सुद 5 पद्मनाभ यक्षिणी प्रतिष्ठितं महाराणा अरिसिंह जी सेठ कपूरचन्द्र''
5. अम्बिका देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।
6. पद्मावती देवी की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की (दक्षिण मुखी) है। इस पर लेख है :– ''श्री उगरसिंह पुत्र धर्मसिंह, चन्द्रसिंह जी पौत्र अंकूर मुरडिया आचार्य श्री सुशीलसूरीश्वरजी''

मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर पार्श्वयक्ष की प्रतिमा 15'' ऊँची है। कोई लेख नहीं है।

दाहिनी ओर अधिष्ठातादेवी की प्रतिमा, 17'' ऊँची है। कोई लेख नहीं है। इस मंदिर की देख–रेख मंदिर की ट्रस्ट कमेटी करती है।

❑❑❑

श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर (चौगान), उदयपुर

यह मंदिर भावी चौबीसी के प्रथम् तीर्थंकर के मंदिर के ऊपर प्रथम मंजिल पर बना हुआ है। इस मंदिर के बीच एक वेदी 4′ x 4 ′ की बनी हुई है। इस वेदी के नीचे लेख :– ''संवत् 1940 वर्ष माघ सुदी 13 शनै कारापितम् सकल संघेन प्रतिष्ठित मुनि जवेर सागरेण। इस वेदी की दीवार पर देवी की प्रतिमा है और **वेदी पर निम्न चतुर्मुखी प्रतिमा विराजित हैं** :–

1. पूर्व मुखी :– अजितनाथ भगवान की प्रतिमा 29'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''राज्य श्री अरसी राजै' संवत् 1847 वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे 10 तिथौं भृगुवारे उशवंशे वृद्धि शाखायां भंसाली गौत्रे श्री कपूर चन्द्रेन श्री अजित नाथ बिम्बं करापितं प्रतिष्ठित तपा भाव सागरेण श्री उदयपुर मध्ये भट्टारक श्री जिनेन्द्र सूरिजी विजै राज्य श्री तपगच्छे''
2. दक्षिण मुखी :– यह प्रतिमा श्री संभवनाथ स्वामी की 29'' ऊँची श्याम पाषाण की है।
3. पश्चिम मुखी :– यह प्रतिमा अभिनंदन स्वामी की 29'' ऊँची श्याम पाषाण की है।
4. उत्तर मुखी :– श्री आदिनाथ भगवान की 29'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है।

(नोट– उपयुक्त तीनों प्रतिमा सं. (2 से 4) पर लेख प्रतिमा सं. 1 के समान ही है। केवल तीर्थंकर के नाम परिवर्तित हैं।)

निज मंदिर की परिक्रमा करते हुए मंदिर के पीछे अर्थात् पश्चिम की ओर एक आलिए में चरण–पादुकाएँ स्थापित है। (लेख बहुत अस्पष्ट है) कहा जाता है कि महावीर स्वामी चरण पादुकाएँ आ. भावसागर जी महाराज के समय (सं. 1862) की है।

सभा मंडप के नीचे उतरते समय अंदर की तरफ दाहिनी ओर अधिष्ठाता देवी की प्रतिमा 11'' ऊँची है और बाईं ओर के आलिए में महायक्ष की त्रिमुखी प्रतिमा 11'' ऊँची है।

इन दोनों प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा कराने के लेख दीवार पर निम्नलिखित है :–

प.पू. गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् विजय राम सूरीश्वरजी म.सा. देहला वाला के

शुभ आशीर्वाद से उनके शिष्य रत्न प.पू. आचार्य देव श्रीमद् विजय अभयदेव सूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में भावी चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री पद्मनाभ स्वामी के जिन मंदिर के अन्तर्गत श्री अजितनाथ जी मन्दिर में अधिष्ठायक देव श्री महायक्ष व अजितबाला यक्षिणी देवी की प्रतिष्ठा का लाभ स्व. पिता श्री गिरधारीसिंह जी माता श्री फूलबाई जी एवं पुत्र हिम्मतसिंह जी, प्रतापसिंह जी विरेन्द्रसिंह जी, सुनिल कुमार चपलोत ने लिया वि.सं. 2049 कार्तिक शुक्ल 7 रविवार दिनांक 7.11.1999''

सीढ़ियों से उतरते समय बाईं ओर छत पर एक देवरी में गुरु श्री नेमिसूरीश्वर जी महाराज सा. की 45'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है जिस पर लेख है :–

''स्वस्ति श्री वीर संवत 2499 विक्रम संवत् 2029 वर्षे वैशाख शुक्ल तृतीय निवासरे शुभ लग्न राजस्थानान्तर्गत मेदपाटे श्री उदयपुर नगरे शासन सम्राट ....चक्रवर्तीय तपागच्छापति परम पूज्य आचार्य देव श्रीमद् विजय श्री नेमिसूरीश्वर जी सद्गुर मूर्तिरिंय जैन धर्म दिवाकर तीर्थ .... शास्त्र विशारद पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय सुशील सूरीश्वर सदुपदेशात् श्री स्व. संघवी प्रभुलाल तथा स्व. धर्म पत्नी सूरजबाई श्री फतेलाल कारूलाल मनावत।''

❑❑❑

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर (चौगान), उदयपुर

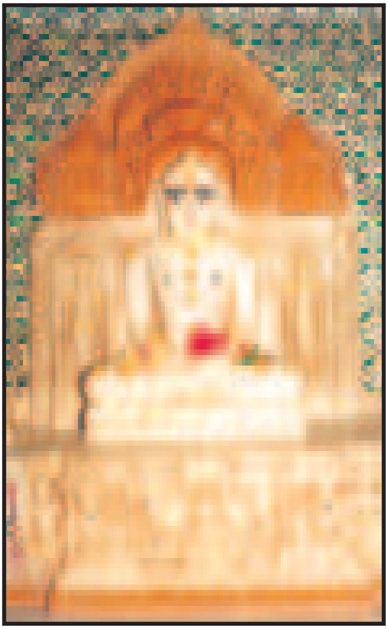

यह मंदिर चेतक से स्वरूपसागर–फतहसागर जाने वाली सडक के दाहिनी ओर स्थित है।

महाराणा जगतसिंह जी द्वितीय (1790–1808) के समय काल में शा. भीरवा जी पोरवाड़ की पत्नी ने चौगान के पास जहाँ शांतिनाथ भगवान का मंदिर है, तथा जैन छात्रालय (शिक्षा भवन) की जमीन को खरीद कर मंदिर व धर्मशाला बनवायी।

यह मंदिर शिखरबंद व नव घूमटियों का सुंदर मंदिर है।

इस मंदिर में शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा (परिकर सहित) की प्रतिष्ठा श्री पद्मसागर जी महाराज द्वारा सं. 1806 में वैशाख सुदी 15 को करायी।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा 21'' ऊँची व 16'' चौडी श्वेत पाषाण की है। परिकर 32'' ऊँचा व 26'' चौड़ा है। आधा परिकर श्वेत व उसके ऊपर आधा परिकर पीत पाषाण का है। मूल नायक के परिकर के नीचे एक देवी श्वेत पाषाण की बनी हुई है।
2. मूल नायक के दाहिनी ओर श्वेत पाषाण की जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 13'' ऊँची है। इस पर लेख नहीं है। दीवार पर शांतिनाथ भगवान का नाम लिखा है।
3. मूलनायक के बाईं ओर श्वेत पाषाण की जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर लेख है, जो घिस जाने से अस्पष्ट है (शांतिनाथ जी का नाम प्रतिमा के ऊपर दीवार पर लिखा है)।
4. **निज मंदिर के बाहर निकलते समय दाहिनी** ओर यक्ष की प्रतिमा 13'' ऊँची है। प्रतिमा पर लेख है :– ''राम सूरि शिष्याचार्य अभयदेव सूरिभिः भावी चौबीसी प्रथम तीर्थंकर पद्मनाभ है। इसके नीचे दीवार पर लेख है :– श्रीमती पुष्पा बेन डाया भाई श्रावक के परिवार अरूणा, सुरेश, हर्षद, प्रफुल्लरीष एवम् वीना मुम्बई ने अधिष्ठायक देव की मूर्ति विराजमान कराने का लाभ लिया।''

5. **निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर** यक्षिणी की प्रतिमा 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है प्रतिमा पर लेख है :– ''रामसूरि शिष्याचार्य अभयदेव सूरिभि भावी चौबीसी प्रथम तीर्थंकर पद्भनाभ स्वामी''। इसके नीचे दीवार पर लेख है :– ''श्रीमती अरूणा नरेन्द्रकुमार जी व्यास परिवार की तरफ से एवम् श्रीमती पुष्पा कमल नागौरी के परिवार की तरफ से उदयपुर निवासी ने अधिष्टायिका देवी विराजमान कराने का लाभ लिया।''

6. **निज मंदिर के सामने की दीवार अर्थात् पूर्वी दीवार पर नागेश्वर पार्श्वनाथ भगवान** की 39'' ऊँची श्वेत पाषाण की खडी प्रतिमा है। उदयपुर शहर में **नागेश्वर पार्श्वनाथ की प्रथम प्रतिमा है।** इस पर लेख है :–

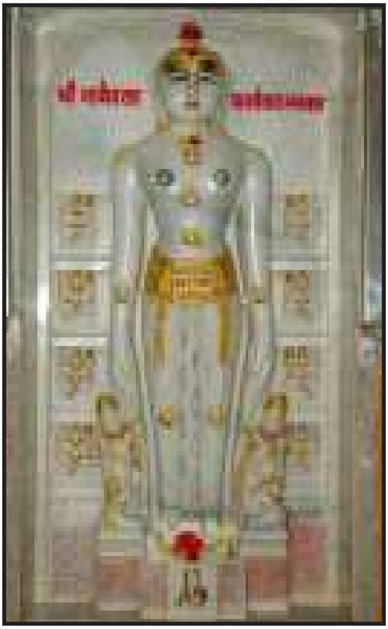

''स्वस्ति श्री वीर सं. 2522 वि.सं. 2052 माघ शुक्ला 13 शुक्रवासरे श्री वरमाण (?) तीर्थे श्री उदयपुर स्थित पद्मनाभ जिन मंदिर पू. आचार्य श्री सुशीलसूरीश्वरजी दिशा भूमि पार्श्वनाथ जिन मूर्तिरियं श्री वरमाण प्रतिष्ठा निमित्ते श्री जैन श्वेताम्बर पंच महाजन मूर्ति पूजक सकल संघ मण्डार नगरे कारापिता प्रतिष्ठाता च तथा गच्छाचार्य श्रीमद् नेमिसूरीश्वर दक्षस्रीश्वरस्य पट्टधर आचार्य श्रीमद् विजय सुशील सूरीश्वर सुशील पट्टधर पन्यास श्री जिनोत्तम विजय गणि वरादि''

प्रतिष्ठा का लाभ श्रेष्ठीवर्य श्री सोहनलाल धर्मपत्नी फूलकुंवर बेन सुपुत्र इन्द्रसिंह जी दौलतसिंह जी स्वर्गीय श्री प्रकाशसिंह जी श्री सुरेन्द्र कुमार जी पुत्रवधू कुसुमलता स्नेहलता कमलदेवी नीतादेवी पौत्र विनयकुमार स्व. राकेश कुमार संदीप, प्रतीक, दीपक, निशान्त पौत्र वधू प्रियंका पौत्री मिनल पल्लवी प्रशंसा धुप्या परिवार ने लिया।''

इसके आगे इसी दीवार पर एक आलिए में श्री शांतिनाथ भगवान की 35'' ऊँची श्वेत पाषाण की खडी प्रतिमा है। प्रतिमा के नीचे भी अस्पष्ट लेख है। केवल ''संवत् 12 ....'' पढ़ने में आता है। यह प्रतिमा प्राचीन है। कहा जाता है कि यह प्रतिमा सहेली नगर में खनन से प्राप्त हुई।

सभा मंडप में उत्तरी दीवार से चित्र प्रारम्भ होते है जो इस प्रकार है :– महावीर भगवान के कान में कीले लगाते हुए, कुए में डालते हुए का उपसर्ग, पावापुरी तीर्थ का चित्र, राणकपुर जी तीर्थ, नलराजा की पुत्री कान्ता के पाणिग्रहण के लिये युद्ध,

विषयुक्त पुरुष, श्री वेन राजा का च्युत होना, राजा विजय रानी सुतारा का मृग को दिखाकर आकाश मार्ग से ले जाना, राजा विजय कृत्रिम रानी सुतारा के साथ जल कर मरना, राजा विजय का दसवां देवलोक व बलदेव मुनि द्वारा दीक्षित –––मृत्यु – दसवें लोक से पुनः च्युत होना, शांतिनाथ भगवान की मूर्ति के दर्शन होना व दीक्षा ग्रहण करना व शांतिनाथ भगवान के भव को चित्रण करते हुए अन्त में सम्मेद शिखर में निर्वाण का वर्णन तक 52 पट्ट में दर्शाये गये है। निज मंदिर का आकार 5′ x 8′ है। बाहरी सभा मंडप का आकार 29′ x 23′ है जिनमें 36 स्तंभ व अर्ध स्तंभ हैं।

इस मंदिर की देख–रेख पद्मनाभ तीर्थ समिति द्वारा की जाती है।

इसके आगे **श्री महावीर स्वामी का घूमटबंद मंदिर बना हुआ है, जिसमें निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–**

1. मूलनायक श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा 21″ ऊँची श्वेत पाषाण है। यह प्रतिमा एक छतरी में स्थापित है। संवत् 1862 में एक छतरी (महावीर जी) हवाले में (विवादास्पद) डूबी हुई थी, और असातना हो रही थी उसको श्री भावसागर जी के उपदेश से सं. 1937 में लाकर इसी स्थान पर मंदिर बनाया व 1938 में प्रतिमा स्थापित की गयी, लेकिन प्रतिमा पर लेख संवत् 1921 उत्कीर्ण है जो अस्पष्ट है, जितना पढ़ा जा सकता है वह यह है :– सं. 1921 शाके 1786 प्र. माघ 7 गुरु श्री आँचलगव्छे उदयपुर राणा लघुशाखा शा श्री।

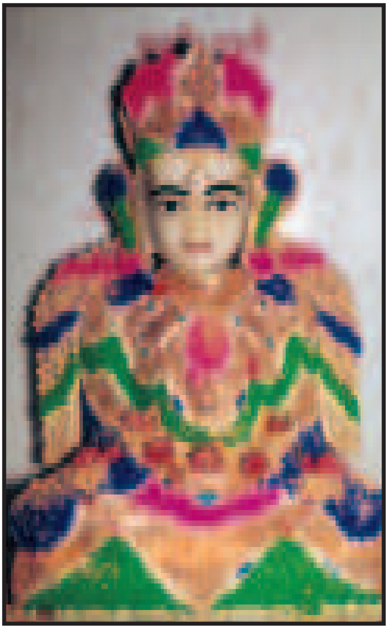

2. मूलनायक के दाहिनी ओर श्री महावीर स्वामी की 19″ ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है जो अस्पष्ट व अपठनीय है।

3. मूलनायक के बाईं ओर सुमतिनाथ भगवान की 17″ ऊँची श्वेत पाषाण की प्राचीन प्रतिमा है। इस पर लेख व लांछन नहीं है। प्रतिमा के पीछे दीवार पर सुमतिनाथ लिखा है।

मंदिर के बाहर (मंदिर में प्रवेश करते समय रास्ते की ओर) बाएँ से दाएँ –

1. मांतग यक्ष की प्रतिमा 13″ ऊँची श्वेत पाषाण की है। प्रतिमा पर लेख है :– "2055 चे. कृ. 11 श्री उदयपुर नगरें श्री मातंगयक्षस्य मूर्ति रिंय उदयपुर डाक्टर जगत मंजुला महता परिवारेण का. प्रति. च सुशील.......।" दीवार पर लेख लिखा हुआ है :– "स्व. श्रीमती सोहन बेन भीमराज जी महता की स्मृति में पुत्र रणजीतसिंह प्रकाश बेन ने श्री मातंगयक्ष की प्रतिमा विराजमान कराने का लाभ लिया। वि. सं. 2055 चेत्र विद 11 शनिवार"

2. श्री सिद्धायिकी देवी की 13'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''सं. 2055 चैत्र कृष्णा 11 श्री उदेपुर नगरे श्री सिद्धायिका जातिय......प्रफुल मंजु सुराणा परिवारेण का प्रति. च.आ. सुशीलसूरि।'' दीवार पर लेख है कि प.पू.आ. श्री भुवनसूरीश्वर जी म.सा. के आर्शीवाद से श्री सिद्धायिका देवी की मूर्ति की प्रतिष्ठा का लाभ स्व. श्री हीराचन्द्र जी पुत्र मिश्रीलाल पौत्र किशन कुमार, राम कुमार, राजेश कुमार पड़पौत्र दीपक कुमार, सूरज, प्रेम गान्धी परिवार निवासी हैदराबाद ने लिया।

3. श्री लक्ष्मी देवी की 15'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण है। इस पर लेख है कि ''मूर्तिरियं श्री नन्दलाल जी नरेन्द्र कुमार जी विरेन्द्र कुमार जी सिंघवी। दीवार पर लेख है :–

''श्री दौलतसिंह जी, मोहनबाईजी सुराणा की स्मृति में मदनसिंह, लीलाबेन पौत्र प्रफुल्ल मंजु प्रपोत्र संदीप ने महालक्ष्मी की मूर्ति विराजमान कराने का लाभ लिया।''

4. सरस्वती देवी की 15'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है श्री लक्ष्मी चन्द्र जी मेहता बाई आत्म श्रेयार्थ तत् पुत्र जीतमल प्रशान्त पोरवाल मुम्बई। दीवार पर लेख है ''स्व.श्री दौलतसिंह जी मोहनबाई जी सुराणा की स्मृति में पुत्र मदनसिंह लीलाबेन पौत्र प्रफुल्ल, मन्जु, पड़पौत्र संदीप सुदीप सुराणा ने सरस्वती देवी की मूर्ति विराजमान करने का लाभ लिया।''

उक्त लक्ष्मीदेवी व सरस्वती देवी की प्रतिमा श्री शांतिनाथ भगवान के बाहरी दरवाजा के बाहर स्थापित है।

पद्मनाभ स्वामी के मंदिर की ओर जाने के लिये द्वितीय दरवाजा से प्रवेश करते ही दाहिनी ओर (महावीर भगवान के मंदिर के सामने) **गौतम स्वामी का मंदिर गुमटीदार बना हुआ है,** जिसमें निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. मूलनायक श्री गौतम स्वामी की 23'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''सं. 2022 वर्षे माघ शुक्ले 5 रवौ श्री गौतम स्वामिनो मूर्तिरियं श्री साधवी उत्तम श्री जी के सदुपदेश श्री गन्ना मोहनलाल स. प. श्रेयार्थ नलवाया रतन लाल ने करापितं प्र. च. आचार्य श्री आनन्द सागर सूरि पट्टे..... की चन्द्र सागर सूरि पट्टे आचार्य श्री देवेन्द्र

सागर सूरिस्य शिष्य दौलतसागर गणिभि च. प्रतिष्ठित् उदयपुर।''

2. मूलनायक के दाहिनी ओर पाचवें गणधर सुधर्मा स्वामी की प्रतिमा 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर निम्न लेख है :–

''सं. 2022 वर्ष मार्घ शुक्ल 5 खां श्री सुधर्मा स्वामी नु मूर्तिस्य कालुलाल पुत्री पद मातस्य स्व पुत्र जैइमल कारापितं तपागच्छे आचार्य आनन्द सागर देवेन्द्र सागर सूरि शिष्य श्री दौलत सागर''

मूल नायक के बाईं ओर श्री पद्मनाभ स्वामी के दसवें गणधर श्री शतबल स्वामी की 19'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है कि ''सं. 2022 वर्ष मागे शुक्ला 5 रवैश्री कुमारपाल नृपत.....पद्मनाभ भांविन.....दशम गण भृच्छत बल गण हरस्य मूर्तिः कोठारी रंगलाल सुत कालूलाल तद् पुत्र जीवन सुजानमल स्व. मातु कंकूबाई श्रेयोर्थ करापिता आचार्य श्री आनन्द सूरेः शिष्य दौलत सागर गणिना. च. प्रति. उदयपुरे''

मंदिर में प्रवेश द्वार के सामने उत्तरी दीवार के पास जहाँ पर भोजन शाला का प्रवेश द्वार है उसके पास **आगम पुरुष** की खड़ी प्रतिमा श्वेत पाषाण की है।

श्री पद्मनाभ स्वामी व श्री शांतिनाथ भगवान के मंदिर के बीच में एक खुले चौक के बीच एक देवरी बनी हुई है, जिसमें :–

1. श्री जगच्चन्द्र सूरिजी
2. श्री आत्माराम जी म.सां. व
3. श्री प्रेम विजय जी मा.स. की प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

जगच्चन्द्र सूरिजी को तपा विरूद की उपाधि देने से तपागच्छ की उत्पत्ति हुई और श्री आत्माराम जी स्थानक वासी के साधु थे, लेकिन आगम के अध्ययन से जिन मूर्ति के संदर्भ में मतभेद होने से मूर्ति पूजक समुदाय में पुनः दीक्षा ग्रहण की और श्री प्रेम विजय जी इनके शिष्य थे।

इसी प्रकार श्री पद्भनाभ स्वामी मंदिर व स्नानागार के बीच खुला चौक है उस चौक में भी देवरी श्री नीति सूरि जी महाराज की प्रतिमा स्थापित है।

मंदिर के साथ धर्मशाला, भोजनशाला बनी हुई है।

मंदिर की विशेषता :–

1. श्री शांतिनाथ भगवान के मंदिर की जमीन श्री भीखाजी पोरवाल की पत्नी ने खरीद कर मंदिर बनवाया।
2. पद्मनाभ स्वामी के मंदिर की जमीन कपूरचन्द्र वर्द्धमान ने खरीदी व महाराणा अरिसिहं जी ने संवत् 1820 में बक्षीस की।

जमीन पर मंदिर बनवाकर शांतिनाथ भगवान व पद्मनाभ मंदिर के बीच का चौक की दीवार (कोट) व शांतिनाथ भगवान के मंदिर के दाहिनी ओर एक नोहरा व सामने मंदिर की जमीन पर कोट बनवाकर श्री कपूरचन्द्र वर्द्धमान ने मुनि श्री सुज्ञान सागर जी के सुपुर्द कर दिया।

3. महावीर स्वामी का मंदिर की जमीन पर पूर्व में नोहरा व कोट बनवाई थी उसको सं. 1838 में सुधार कराकर महावीर स्वामी की प्रतिमा जो कि हवाले (विवादास्पद) में डूबी हुई थी, यहाँ पधरायी।

4. श्री पद्मनाभ जी के मंदिर की जमीन का कई भाग जो कई वर्षों तक हवाले में डूबी रही जिसकों प्राप्त करने के लिये प्रयत्न चलते रहे और अन्त में सं. 1941 में वापस मंदिर को प्राप्त हुई।

5. श्री पद्मनाभ जी के मंदिर के पास वाली जमीन महता कनकमल ने मंदिर को भेंट की। श्री महता को इस क्षेत्र की 29 बीघा जमीन महाराणा द्वारा भेट में दी गई थी।

शांतिनाथ जी का मंदिर के बाहर बरामदा में एक शिलालेख लगा है जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस मंदिर में नई प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा व जीर्णोद्धार कार्य हुआ, वह निम्न प्रकार है :–

''स्वस्ति् वीर सं. 2525 श्री वि.क्र. 2055 श्री नेमि संख्या 50 री चैत्र कृष्णा 11 शनिवार 23 मार्च 1999 के शुभ दिन भावी चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री पद्मनाभ स्वामी जैन तीर्थ चौगान का मंदिर उदयपुर के परिसर में श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की, नाकोड़ा भैरवदेव, श्री पद्मावती देवी, श्री मातंग यक्ष, ''सिद्धायिका 14 मंगल मूर्ति आदि की महामंगलकारी प्रतिष्ठा शासन सम्राट तपोगच्छाधिपति 0पं. पूज्य आचार्य महाराजधिराज श्रीमद् विजय नेमिसूरीश्वर जी म.सं. के दिव्य पट्टालंकार साहित्य सम्राट प. पूज्य आचार्य देवेश श्रीमद् विजय लावण्य सूरीश्वरजी म.सं. के पट्टधर श्री अष्टापद जैन तीर्थ के संस्थापक प्रतिष्ठा शिरोमणि परम् पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय सुशील सूरीश्वर जी म. सा. एवं पू. पूज्य आचार्य देव श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वर जी आदि की शुभ निश्रा में अष्टाहिन्ता महा महोत्सव पूर्वक सम्पन्न हुआ।

शांतिनाथ भगवान व पद्मनाभ स्वामी के मंदिर के बीच चौक है वहाँ एक प्राचीन शिलालेख है, जिस पर सीमेंट–पेन्ट लगा है। जो पढ़ा नहीं जा सका।

❑❑❑

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर
हाथीपोल, बाहर, उदयपुर

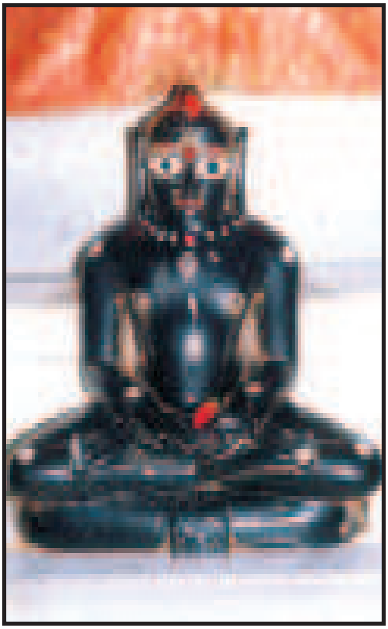

यह मंदिर हाथीपोल से चेतक चौराहे की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के बाईं ओर स्थित है, जो 16 चेतक मार्ग के नाम से जाना जाता है।

यह मंदिर कटारिया महता का है।

श्री गोविंदसिंह जी का स्वर्गवास सं. 1975 में हुआ और मंदिर का जीर्णोद्धार सं. 1937 में हुआ। प्रतिमा पर उत्कीर्ण समय सं. 1753 है। इससे स्पष्ट होता है कि इस मंदिर का निर्माण करीब 300 वर्ष पहले हुआ था।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ हैं :–

1. मूलनायक श्री आदिनाथ की 19'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है। इस पर कोई लेख नहीं है।

2. मूल नायक के बाईं ओर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 17'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इस पर कोई लेख नहीं है।

3. इसके आगे श्री शांतिनाथ भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

   ''संवत् 1753 वैशाख सुदि 3 श्री शांतिनाथ बिम्ब करापितम् बोहितरा गौत्र श्री मरकुसिंह तस्य पुत्र अमीचन्द्र, नेमि चन्देन प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री जिनरंग सूरि महोपाध्याय श्री नमोष्ठसेन (?)

4. मूलनायक भगवान के दाहिनी ओर श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची श्याम पाषाण की है। कोई लेख नहीं है।

5. इसके पास ही प्रतिमा 9'' ऊँची श्वेत पाषाण की पदम प्रभु स्वामी की है।

6. दक्षिणी दीवार में एक आलिए में उत्तर मुखी श्री वासुपूज्य भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

   ''श्री वासुपूज्य स्वामी जिनेन्द्र स्व. बिंब विजे गच्छ देशान्तर्गतमनदस सुवर भाषकाराणां चाहि देव श्री मद विजयानन्द कमलवीर – प्रेम सूरीश्वर मुम्बई नगरें चारकेशवरे श्रीपालन नगरें अंजनशाला।''

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. अष्टमंगल यंत्र जिसका आकार 6'' x 3 '' है।
2. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 5'' व्यास है।
3. पंचतीर्थी प्रतिमा सुमतिनाथ भगवान की है, जिस पर लेख है :– ''सं. 1637 श्री सुमतिनाथ बिंब''
4. चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमा 3'' ऊँची श्याम पाषाण की है।

बाहरी सभा मंडप में दक्षिणी दीवार पर शत्रुन्जय व सम्मेद शिखर जी तथा उत्तरी दीवार पर श्री नाकोड़ा तीर्थ, गिरनार जी तीर्थ के पट्ट हैं तथा बाहरी परिक्रमा में चार पट्ट दादा जिन कुशलसूरि के हैं। बाहर निकलते हुए दाहिनी ओर मणिभद्र जी (भोमिया जी) की प्रतिमा 17'' ऊँची है। बाईं ओर दादा जिन कुशल सूरि की चरण पादुका है। वेदी का आकार 15'' x 15'' है। दक्षिणी दीवार के एक आलिए में नाकोडा भैरव जी का चित्र है। जहाँ अखण्ड ज्योति होती है।

पास में ही एक सराय बनी हुई है जिसको गोविन्दसिंह जी की सराय कहते आएँ है।

वर्तमान में इस मंदिर की देख–रेख श्री मनोहरसिंह जी मेहता (जो उक्त उल्लेखित परिवार के वंशज है) द्वारा की जाती है।

इस मंदिर की ध्वजा फाल्गुन शुक्ला 2 को चढ़ाई जाती है।

❑❑❑

श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, हाथीपोल, उदयपुर

यह मंदिर हाथीपोल दरवाजे के बाहर जैन धर्मशाला में स्थित है, धर्मशाला में ठहरे यात्रियों के लिये प्रभु सेवा करने की सुविधा देने के लिये मंदिर को जैन धर्मशाला की जमीन पर जहाँ पर पूर्व में एक बावडी थी, उसको बंद करा कर यह मंदिर बनाया गया। यह मंदिर केवल 30 वर्ष पुराना है। इस मंदिर को सेठ श्री मनोहरलाल जी चतुर ने बनाया। जिसका शिलालेख मंदिर की दीवार पर है जो इस प्रकार है :–

''स्वस्ति वीर संवत् 2500 वि. संवत् 2030 वर्षे मार्ग शीर्ष शुक्ला पंचम्या तिथौ शुक्रवासरे रवियोग कुमार योग च शुभ लग्न राजस्थान्तर्गत मेदपाट (मेवाड़ प्रदेश) श्री उदयपुर नगरे हस्ति प्रतोलिका महासभा द्वारा नव निर्मित नूतन जिन मंदिर मूलनायक श्री वासुपूज्य जिन बिम्बस्य श्री पार्श्वनाथ जिन बिम्बस्य श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति संघेन शासन प्रभावद् महोत्सव पूर्वक प्रतिष्ठा कारिता प्रतिष्ठाता च शासन् सम्राट सूरि चक्र चक्रवर्ति तपोगच्छाधिपति श्री कदम्ब गिरि प्रमुखा नेक प्राचीन तीर्थों द्वारक बाल ब्रहम्चारी परम पूज्याचार्य महाराज श्री श्री श्री 1008 श्रीमद् विजयनेमिसूरीश्वरस्य पट्टालंकार साहित्य सम्राट शास्त्र विशारद बाल ब्रहम्चारी पूज्याचार्य वर्य श्रीमद् विजय दक्षसूरीश्वरस्य पट्धर जैन दिवाकर तीर्थ प्रभावक मरूधर देशो द्वारक शास्त्र विशारद साहित्य रत्न कविभूषण बाल ब्रह्मचारी पूज्याचार्य देव श्रीमद विजय सुशील सूरीश्वरः, पूज्य पन्यास प्रवर श्री, विनोद विजय, विकास विजय, मनोहर विजय गणि वरादि मुनिवृन्द सहितः।।श्री रस्तु।। श्री संघस्य दिनांक 30.11.1973 शुक्रवार ––

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. मूलनायक श्री वासुपूज्य भगवान की प्रतिमा 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। लेख है :–

   ''संवत् 2028 वैशाख शुक्ला 10 स्वस्ति श्री शासन सम्राट तपागच्छाधिपति जगद् गुरु आचार्य महाराजाधिराज श्री विजय नेमिसूरीश्वराणां पूज्य प्रभाव साम्राज्ये तद् हस्ते श्री कदम्ब गिरि तिर्थे तत्प्रतिष्ठापितं तथा सेठ जिनदास धर्मदास संघेन श्री संघ श्रेयोर्थ का श्री वासुपूज्य स्वामी बिंब प्र. तपा श्री विजय नयनसूरि श्री, अमृतसूरि,

श्री कस्तूर सूरि, मोती प्रभसूरि, श्री मेरू प्रभ सूरि, श्री यशोभद्रसूरि, श्री धर्म धुरंधर सूरि, उपा. विजय गणि उपा, किर्तिचंद विजय गणिभिः''

इस प्रतिमा की वेदी के नीचे लेख लिखा है :–

''जैन धर्मशाला हाथीपोल देरासर में मूलनायक श्री वासुपूज्य भगवान के बिंब को संवत् 2030 मार्ग शुक्ला 6 शनिवार को स्वर्गीय श्रीमान् सेठ साहब रोशनलाल जी स्वयं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तीजकुंवर बाई चतुर ने 56031/– की बोली लेकर स्थापित करवायी।

2. मूलनायक के दाहिनी ओर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 17'' ऊँची श्वेत पाषाणा की है। इसके नीचे यह लेख है :–

''जैन शासन सम्राट तपा श्री विजय नेमिसूरीश्वर साम्राज्ये तदुदहते श्री कदम्ब गिरि तीर्थे तत प्रतिष्ठापितं तथा सेठ जिनदास धर्मदास संघेन श्री चतुर्विध संघ श्रेयोर्थ का. श्री कल्याण पार्श्वनाथ बिंब प. श्री सर्व सूरिभिः।

इसके नीचे वेदी पर लेख है – ''जैन धर्मशाला हाथीपोल देरासर में श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा सवत् 2030 मार्ग शुक्ला 6 शनिवार को स्वर्गीय श्री मोतीलाल जी साहब दलाल के सुपुत्र श्री किशनलाल जी दलाल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सागरकुंवर बाई दलाल ने 2352/– की बोली लगाकर स्थापित करायी।''

3. इसके पास ही ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा 21'' ऊँची श्वेत पाषाण है। लांछन लेख अस्पष्ट है। लेकिन वेदी पर लेख है, जिसके आधार पर प्रतिमा का नाम आदिनाथ नाम दिया। लेख इस प्रकार है :–

''मेवाड़ देशोद्धारक पं., पूज्य आचार्य श्री जितेन्द्र सूरिजी म. की निश्रा में पू. तपस्वी मुनिराज श्री पद्मभूषण – विजय श्री मं. की प्रेरणा से श्री अम्बालाल जी एवम् जीतबाई जी दोशी की यादगार में श्री तेजसिंह, कैलाश देवी पुत्र सुरेन्द्र प्रीति, महेश, अनिल पौत्र हर्ष पौत्री प्रिया, प्राची दोशी द्वारा प्रतिष्ठित। वि.सं. 2052 मार्ग शीर्ष शुदि 11 दिनांक 3.12.1995.

4. मूलनायक भगवान के बाईं ओर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है कि : –

''श्री जिन शासन सम्राट तपा. श्री नेमिसूरीश्वर साम्राज्ये तदहवृते कदम्बगिरि तिर्थे तत्प्रतिष्ठापित तथा सेठ जिनदास धर्मदास संघेन चर्तुविध संघ श्रेयोर्थ का. श्री कल्याण पार्श्वनाथ बिंब .प्र. श्री सर्व सूरिभिः संघस्य''

वेदी पर लेख है :–

''जैन धर्मशाला हाथीपोल देरासर में श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा संवत् 2030 मार्ग शुक्ला 6 शनिवार को स्वर्गीय श्रीमान् बोहतलाल जी बापना की धर्मपत्नी

श्री छगन बाई जी ने 2501/– रुपये बोली लेकर स्थापित किया।

5 इसके पास ही शांन्तिनाथ भगवान की प्रतिमा 19'' ऊँची पीत पाषाण की है। इसके नीचे कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है। लेकिन वेदी पर लिखा है :– ''मेवाड़ देशो द्धारक पं. पूज्य आचार्य श्री जितेन्द्र सूरिजी म. की निश्रा में स्वर्गीय श्रीमान् सज्जनलाल जी एवं श्रीमती कंचन देवी पूंजावत की पुण्य स्मृति में गणेशलाल जी उर्मिला देवेन्द्र कामना यश एवं स्वपनिल पूंजावत की ओर से विजय मुहूर्त में प्रतिष्ठा करायी वि.सं. 2052 मगसद सुदी 11 दिनांक 3.11.1995''

दक्षिणी दीवार पर आलिए में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

प्रवेश करते समय अपने बाईं ओर श्री आचार्य श्री वि. हीरसूरीश्वर जी, की प्रतिमा 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। पबासन पर लेख है :–

''जगतगुरु विजयहीरसूरीश्वर बिंब प्रतिष्ठितं तपा आ. जिनेश्वर सूरि नि....

सोहनलाल श्री योगेन्द्र कुमार ताकडिया। दाहिनी ओर श्री जगच्चन्द्रसूरि जी की प्रतिमा श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची है। इस पर लेख है :– ''मेवाड़ राणा प्रपत तपा विरूद्ध धारक आ. जगच्यन्द्र सूरीश्वर प्रतिष्ठिते तपा आ. शिष्य जितेन्द्र सूरीभि कंचन देवी पं. गणेशलाल पूंजावंत'' प्रतिमा के नीचे लेख है :–

''श्री जैन श्वेत महासभा के अध्यक्ष श्री जसवन्तलाल जी भार्या हयारबाई पुत्र हर्ष कुमार कमलसिंह सिसोदिया महता उदयपुर द्वारा प्रतिष्ठितं''

इसके आगे पश्चिमी दीवार में दरवाजें के पास (प्रवेश करते समय दाएँ) एक आलिए में चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमा 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''राजस्थान प्रान्ते श्री उदयपुर नगरे वीर सं. 2500 विक्रम संवत 2030 मिगसर शुक्ला 5 वार शुक्रे श्री चक्रेश्वरी देवी की प्रतिष्ठा श्री जैन श्वेताम्बर हाथीपोल धर्मशाला में आचार्य महाराज श्री मद्विजयसुशील सूरीश्वर जी की निश्रा में''

इसी दीवार पर (प्रवेश करते समय बाएँ) पद्मावती माता की प्रतिमा 17'' ऊँची, जिसके मस्तक पर सर्प का फण है, श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''राजस्थान प्रान्ते की उदयपुर नगरें वीर सं. 2500 वि. सं. 2030 मिगसर शुक्ला 5 श्री पद्मावती देवी बिंब की प्रतिष्ठा जैन श्वेताम्बर महासभा हाथीपोल धर्मशाला आचार्य महाराज श्रीमद् विजय सुशील सूरीश्वर जी की निश्रा में।

उत्तरी दीवार के एक आलिए में कान्तिसागर सूरि म.सा. की प्रतिमा 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''कान्तिसागर बिबं प्रतिष्ठितम् तपा श्री जितेन्द्र सूरिभिः कारितं च आ. श्री कान्तिसागर सूरि शिष्य की निश्रा में जीवन बाई भवरलाल पु. यशवन्त बडाला।'' इसके पास ही खरतरगच्छ के दादा श्री जिनचन्द्र सूरिजी की प्रतिमा श्वेत पाषाण 11'' ऊँची है। इस पर लेख है :– ''यू.प्र.म. दादा श्री 1008 जिनचन्द्र सूरि बिंब की प्रतिष्ठाता

खरतरगच्छीय आचार्य श्री कवीन्द्र सागर सूरिजी महाराज के शिष्य श्री कैलाश सागर जी महाराज की निश्रा में ....की ओर से सं. 2030 वर्षे मिति जैठ शुक्ल 2 बुधवार को प्रतिष्ठित''।

मंदिर और सभा मंडप एक ही भाग में स्थित है। उत्तरी व दक्षिणी दीवार में निम्न तीर्थों के पट्ट बने हुए है :–

''श्री सम्मेद् शिखर जी, श्री मुछाला महावीर जी, आदेश्वर भगवान का मंदिर, राणकपुर तीर्थ, श्री पद्मप्रभु जी का मंदिर, जल मंदिर–पावापुरी, गिरनारजी तीर्थ, आयड़ तीर्थ देवकुल पाटण देलवाड़ा तीर्थ, केशरियानाथ जी करेडा, पार्श्वनाथ जी, दयालशाह का किला, तीर्थ, व पाली तणा (शंत्रुंजय) तीर्थ।''

मंदिर में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर एक आलिए में मणिभद्र जी प्रतिमा 19'' ऊँची की श्वेत पाषाण की है। लेख इस प्रकार है :– ''उदयपुर हाथीपोल धर्मशाला मणिभद्र प्रतिमा श्री दौलतसिंह भगवतसिंह का.प्र. खरतरगच्छे के आचार्य जिन कान्तिसागर–सूरिभि दिनांक 21.11.1984''।

प्रवेश करते समय बाईं ओर (उत्तरी दिशा में) एक आलिए में श्री नाकोडा भैरव जी की प्रतिमा 19'' ऊँची पीत पाषाण की है। जिस पर लेख है :– सं. 2042 मार्ग उदयपुरे हाथीपोल धर्मशालाया श्री नाकोड़ा भैरव प्रतिमा सादडी ....कपासन स्व. श्री चुन्नीलाल उम्मेदमल''। इसी दीवार पर तीन चित्र बने हुए है।

मूल नायक श्री वासुपूज्य भगवान के अधिष्ठाता देव देवी स्थापित नहीं हैं।

इस मंदिर की व्यवस्था श्री जैन श्वेताम्बर महासभा द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर, बोहरवाड़ी (वाड़ी जी का मंदिर), उदयपुर

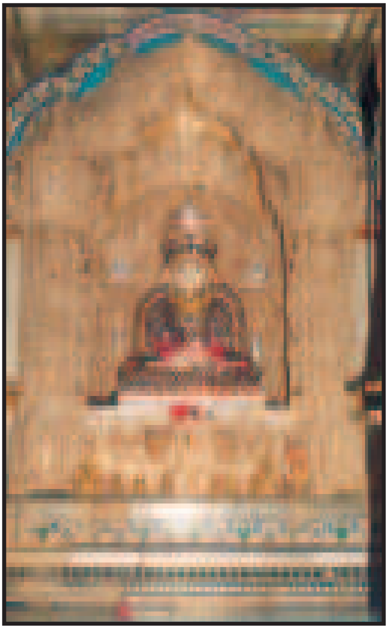

यह मंदिर देहलीगेट से बोहरवाडी होकर मालदास सहरी की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के किनारे व बोहरवाड़ी के मध्य में स्थित है।

जहाँ पर मंदिर स्थित है, उस स्थान पर पूर्व में भंडारियों की वाड़ी थी। इसलिये मंदिर को वाड़ी जी का मंदिर भी कहते हैं।

इस मंदिर के निर्माण काल के लिए एक शिला लेख भी उपलब्ध है लेकिन वह बहुत अस्पष्ट व चूने सीमेंट से ढँका है। प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण समय के आधार पर इस मंदिर को बने करीब 250 वर्ष हो गये हैं। यह शिखरबंद मंदिर है, जिसे भण्डारी (पोरवाड़) परिवार के श्री जीवनदास जी व उनके पुत्र सन्तोष जी ने बनाया था।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान (ऋषभदेव भगवान) की प्रतिमा 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। यह प्रतिमा व परिकर एक ही पत्थर से बनी है। परिकर अति सुन्दर व कलात्मक है ऐसा परिकर उदयपुर शहर में अन्य किसी मंदिर में देखने को नहीं मिलता है। प्रतिमा के पबासन पर लेख है :– ''संवत् 1808 वर्षे शाके 1673 प्रवतेमाने ज्येष्ठ सुदि 9 वृद्धि शाखायां तपागच्छे भट्टारक विजय धर्म सूरि राज्ये श्री उदयपुर वास्तव्य प्राग्वाट् जातीय वृद्धि शाखायां वर्धमान भार्या फूलबाई पुत्र (तमात) जीनमान शिवदास जीवणदास सन्तोषबाला जी निज श्रेयोर्थे'' आदि जिन बिंब करापितं प्रतिष्ठितं श्री विजय गणिभि महाराणा जगतसिंह जी विजयराज्ये'' मूलनायक का परिकर तोरणनुमा है और इस परिकर के दोनों ओर खड़ी प्रतिमाएँ है। तोरण के दोनों ओर भी देवी देवताओं की प्रतिमा हैं। परिकर में बारीक खुदाई का कार्य किया हुआ है। जिससे उसकी सुन्दरता बढ़ जाती है।

   परिकर में तेरह जिनेश्वर भगवान व दो देवी –देवताओं की प्राचीन प्रतिमाएँ बनी हुई है।

वेदी पर बीच में देवी की प्रतिमा बनी हुई है, सम्भवतया यह प्रतिमा लक्ष्मीदेवी की है। निज मंदिर में अन्य कोई प्रतिमा स्थापित नहीं है।

धातु के उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र है।

1. पंच तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची है। इसके पृष्ठ भाग पर लेख है :– ''श्री कालूलाल जैन शान्ता देवी जैन प्रदीप जैन सरिता जैन अभय जैन 2002–03''

2. अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 5'' x 3'' है।

3–6. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा क्रमशः 3'' व 3'' 2'' व 2'' ऊँची है। कोई लेख नहीं है।

7. पार्श्वनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 6'' ऊँची है। लेख है :– संवत् 1592 वर्षे पोष सुदि 11 फमि आपवा सुत फ हर्ष फगा सुत कवराबानयुतेन कर्मसि भा लादु श्री पार्श्वनाथ बिंब करापितम् श्री तपागच्छ भट्टारक श्री धनरत्न सूरिभि''

8. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 4'' ऊँची है। लेख है:– ''1682 वर्षे वे. वद''

9. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 4'' ऊँची है। पीछे केवल ''रतन'' लिखा है।

10. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 4'' ऊँची है। लेख है :– संवत् 1715 श्राविका सप्तादे।''

11. श्री विमलनाथ भगवान की प्रतिमा 4'' ऊँची है। लेख है :– ''श्री विमलनाथ हीरविजय सूरि''

12. पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा, जिसके मस्तक के ऊपर सर्प का फण है। पीछे लेख है :– ''जीतमल निर्मला देवी करणपुर वाला।''

13. कुंथुनाथ भगवान की प्रतिमा 3'' ऊँची है। ————————सूरि।''

14. पार्श्वनाथ भगवान (फण सहित) की प्रतिमा 4'' ऊँची है। पीछे लेख है :–

    ''संवत् 1517 वर्षे करापितं

15. कुंथुनाथ भगवान की प्रतिमा 4'' ऊँची है। इसके पीछे लेख है संवत् 1126 (1) वर्षे फागण सुदि 10 तपागच्छे श्री हीरविजय सूरिभि।

16. महावीर स्वामी की पंच तीर्थी प्रतिमा 8'' ऊँची है। इसके पीछे लेख है :– ''संवत् 1193 राज श्री श्राविका माह विद तृतिया महावीर स्वामी कारापितं।''

17. पद्म प्रभु जी की पंच तीर्थी प्रतिमा 6'' ऊँची है। लेख है :– संवत् 1505 वर्षे श्री पद्म प्रभु बिंब का प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री जयचन्द्र सूरिभिः।''

18. अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 5'' x 3'' है।

19. चौबीस तीर्थी प्रतिमा 8'' ऊँची है लेख है :– ''साहा धरम भारया रूप दे नागदा ——— 1193 जैठ विद 5''

निज मंदिर ये बाहर निकलते समय सभा मंडप में कारनिस पर बाईं ओर निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. जिनेश्वर भगवान– की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की – लांछन व लेख सीमेंट में दबा है। केवल कटे अक्षरों की एक लाइन दिखती है।
2. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 2'' ऊँची धातु की है।
3. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 17'' ऊँची पीत पाषाण की है। प्रतिमा के मस्तक पर सर्प का फण है। लेख व लांछन सीमेंट में दब गया है।
4. जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची धातु की प्रतिमा है।
5. श्री अरनाथ भगवान की प्रतिमा 16'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। लेख सीमेंट में दबा हुआ है। केवल यह पढ़ा जा सकता है –''संवत् 1808 वर्षे शाके 1673 ज्येष्ठ सुदि 9 बुधवासरे तपागच्छे————————विजय धर्म सूरि''
6. आदिनाथ भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण है। जिस पर लेख है :– ''सं. 1813 वर्षे शाके 1678 प्रर्वतमाने वैशाख शुदि 7 गुरौ श्री तपागच्छे श्री आचार्य विजय धर्म सूरि राज्ये——————''
7. जिनेश्वर भगवान की आकृति 2'' वर्गाकार पतरे पर बनी हुई है।
8. वासुपूज्य भगवान की प्रतिमा 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। नीचे लेख है :– ''संवत् 1808 वर्षे शाके 1673 प्रवर्तमाने ज्येष्ठ सुदि 9 बुधे श्री विजय दया सूरि आचार्य श्री विजय धर्मसूरि राज्ये तपागच्छ उदयपुर वास्तव्य पोरवाड जातीय सिसोदिया जोधसिंह भार्या गुलाब पुत्र नाथ जी निज श्रेयार्थ वासुपूज्य बिंब करापितं प्रतिष्ठितं श्री विजय गणिभि राजा श्री जगतसिंह राज्ये''
9. महावीर स्वामी की 15'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। कोई लेख नहीं है।
10. पद्मप्रभु स्वामी की 16'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लेख यह है :– ''सं. 1808 वर्षे शाक 1673 प्र. ज्येष्ठ सुदि 9 बुधे तपागच्छे त. श्री विजय दया सूरि आचार्य श्री विजय धर्म सूरि राज्ये उदयपुर वास्तव्य सोलंकी ठाकूर हरिसिंह भार्या ——————————प्रभु बिम्बं करापित प्रतिष्ठित श्री विजय गणिभि।''
11. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 5'' ऊँची धातु की है। सर्प का फण है।
12. देवी की प्रतिमा 5'' ऊँची धातु की है। सीमेंट से जमी हुई है। कौनसी देवी की है स्पष्ट नहीं होता।
13. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की 20'' ऊँची प्रतिमा पीत पाषाण की है। यह प्रतिमा प्राचीन प्रतीत होती है लेख है :– ''श्रीसुपार्श्वनाथ बिबं स. मूलबेन''

14. शांतिनाथ भगवान की 25'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लांछन स्पष्ट दिखता है। कोई लेख नहीं है।

15. श्रेयांसनाथ भगवान की 20'' ऊँची प्रतिमा पीत पाषाण की है। लेख है :– ''1705 वर्षे श्री जिन सागर सूरिभि श्री श्रेयास बिम्बम्।।''

16. श्री मल्लिनाथ भगवान की 16'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लेख है :– ''सं. 1808 वर्षे शाके 1673 प्रवर्तमाने ज्येष्ठ सुदि 9 बुधे तपागच्छे श्री विजय दया सूरि आचार्य श्री विजय धर्म सूरि राज्ये पोरवाड़ जातीय———————वर्धमान भार्या फूलबाई पुत्र ——————भार्या ——————भटकू निज श्रेयोर्थ मल्लिनाथ बिंब कारापितं प्रतिष्ठितं''

17. जिनेश्वर भगवान की 17'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर कोई लांछन व लेख नहीं है।

18. श्री सम्भवनाथ स्वामी की प्रतिमा 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। लेख है :– ''सं. 1813 शाके 1678 प्रवर्तमाने वैशाख शुदि 7 गुरौ तपागच्छे श्री विजय धर्म सूरि राज्ये श्री उदयपुर वास्तव्य''

19. आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा 12'' ऊँची है। लेख है :– ''सं. 1813 वर्षे शाके 1678 वैशाख सुदि 7 गुरौ श्री तपागच्छे आ. श्री. धर्म सूरि राज्ये उदयपुर वास्तव्य श्रीमाल जातीय सामलाल वेद —————

20. श्री अजितनाथ भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लेख है :– ''सं. 1813 वर्षे शाके 1678 प्रवर्तमाने वैशाख शुदि 7 गुरों श्री विजय धर्म सूरि राज्ये तपागच्छे पोरवाड़ जातीय—————''

21. श्री धर्मनाथ की 14'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लांछन स्पष्ट है। लेख यह है :–

''सं. 1813 वर्षे शाके 1678 वैशाख सुदि 7 गुरों श्री तपागच्छे तप श्री विजय सूरीश्वरजी राज्ये उदयपुर वास्तव्य पोरवाड़ जातीय वर्धमान तत्पुत्र जीवणदास——————''

22. विमलनाथ भगवान की 14'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लांछन स्पष्ट है। लेख है :– ''सं. 1813 वर्षे शाके 1678 वेशाख सुदि 7 गुरौ श्री विजय धर्म सूरि राज्ये तपागच्छे उदयपुर वास्तव्य प्राग्वाट् जातीय सीसराम भार्या रतनादे पुत्र ज्योति सिंघ पुत्र —————''

23. ऋषभदेव भगवान के 2'' वर्गाकार चरण पादुका चांदी के पवरे के बने हैं, जो 4'' वर्गाकार श्वेत वेदी पर स्थापित हैं।

24. पद्मावती देवी की 11'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। कोई लेख नहीं है।

25. ताँबे का त्रिकोण मांगलिक यंत्र जिसका आकार 7'' x 4'' है।

26–27. दो अन्य तांबे के यंत्र हैं। इन दोनों पर ''ऊँ'' अंकित है, जिसका आकार 9'' x 8'' है। उस पर अन्य मंत्र के साथ ''शांतिसागर सूरि'' का नाम भी अंकित है, और दूसरे का आकार 5'' x 4'' है।

28. धातु का सिद्ध चक्र यंत्र 6'' x 5'' के आकार का है। लेख है :– ''सं. 1833 माघ शुक्ला 11 राज्य घनपतसिंह बहादरेण प्रतिष्ठितं''

इसी सभा मंडप में निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी और (पूर्वी दीवार से उत्तरी दीवार– पश्चिमी दीवार)

1. चन्द्र प्रभ स्वामी की 15'' ऊँची प्रतिमा पीत पाषाण की है। कोई लेख नहीं है।

2. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 4'' ऊँची है।

3. पार्श्वनाथ भगवान की 20'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। मस्तक पर सर्प का छत्र है। लेख यह है :– ''सं. 1808 वर्षे शाके 1673 प्रवर्तमाने ज्येष्ठ सुदि 9 बुधे तपागच्छे तप श्री विजय दया सूरि, श्री विजय धर्मसूरि राज्ये जातीय जीवणदास भार्या मटकू निज श्रेयार्थ पार्श्व जिंन बिंब कारितं करापित प्रतिष्ठितं श्री विजय गणिभि राजा जगत्सीग''

4. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'' ऊँची धातु की प्रतिमा है।

5. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची पीत पाषाण की है। यद्यपि लांछन स्पष्ट नहीं दिखता लेकिन बनावट के आधार पर स्वस्तिक दिखता है। लेख भी अस्पष्ट है।

6. पार्श्वनाथ भगवान की 12'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है। सर्प का छत्र बना हुआ है। कोई लेख नहीं है।

7. पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा धातु की बनी है।

8. महावीर स्वामी की 17'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लेख है :–संवत् 1808 वर्षे शाके 1673 प्र. ज्येष्ठ सुदि 9 बुधे श्री तपागच्छे तप श्री विजय दया सूरिभि आचार्य श्री विजय धर्म सूरि राज्ये उदयपुर वास्तवय पोरवाड़ वंश बर्द्धमान भार्या फूलबाई पुत्र जीवणदास निज श्रेयार्थश्री महावीर बिंब करापित प्रतिष्ठित''

9. श्री नमिनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है लांछन कमल स्पष्ट है।

10. श्री नमिनाथ भगवान की 20'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है कोई लेख नहीं है।

11–12. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 4'' व 2'' ऊँची धातु की है।

13. विमलनाथ भगवान की 17'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लेख है :– ''संवत् 1808 वर्षे शाके 1673 प्रवर्तमाने ज्येष्ठ सुद 9 बुधे तपागच्छे तप श्री विजय दया सूरिभिः श्री उदयपुर वास्तव्य प्रागवाट जातीय वर्धमान भार्या फूलबाई पुत्र नेण

जी निज श्रेयोर्थ श्री विमलनाथ बिंब कारापितं प्रतिष्ठितं श्री विजय गणिभि श्री जगतसिंह विजय राज्ये 11 श्री 11''

14. श्री नेमिनाथ भगवान की 24'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। कोई लेख नहीं है।

15. श्री अजित नाथ भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। कोई लेख नहीं है।

16. श्री अनंतनाथ भगवान की 17'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''संवत् 1808 वर्षे शाके 1673 प्रवर्तमाने ज्येष्ठ सुदि 9 बुधे तपागच्छे तप श्री विजय दया सूरिभि आचार्य श्री विजय धर्म सूरि राज्ये उदयपुर वास्तव्य श्री प्राग्वाट् जातीय सिरोया सा. महासिंघ श्री अनन्तनाथ विम्बं कारिंतं प्रतिष्ठितं तपा श्री विजय गणिभिः।''

17. श्री धर्मनाथ भगवान की 17'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लेख है :– ''संवत् 1808 वर्षे शाके 1673 प्र. ज्येष्ठ सुदि 9 तपागच्छे तप श्री विजय दया सूरि आचार्य श्री विजय धर्मसूरि राज्ये श्री उदयपुर वास्तव्य उसवाल वंश राजमान वरदचन्द्र भार्या चन्दण कुंवर श्री धर्मनाथ बिंब करापितं प्रतिष्ठितं श्री विजय गणि राणा श्री जगत्सींग विजय राज्यें।''

18. श्री महावीर स्वामी की 16'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लेख अस्पष्ट है :– (प्राग्वाट् कुले उदयपुर ———— सुश्रावक श्री कालूलाल जी तत्पत्नी शान्ता देवी प्रदीप अभय जैन ———————'')

19. श्री महावीर स्वामी की 16'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषण की है। लेख जो पढ़ा जा सकता है वह है ''करण पुरिया गोत्रे पोरवाड़ परमेश्वर लाल भार्या उषादेवी''

20. श्री नाकोड़ा भैरव जी की 11'' ऊँची प्रतिमा पीत पाषाण की है। कोई लेख नहीं है।

सभा मंडप से बाहर निकलते समय (बाहरी सभा मंडप में) बाईं ओर एक आलिए में–

1. पार्श्वयक्ष की 22'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। कोई लेख नहीं है।

2. **इसी प्रकार दाहिनी ओर एक आलिए में** 22'' ऊँची श्वेत पाषाण की भैरवजी की प्रतिमा हैं। कोई लेख नहीं है।

परिक्रमा क्षेत्र में उत्तर–पूर्व में एक देवरी बनी हुई है, जिसको वासुपूज्य भगवान का मंदिर कहते है। **इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–**

1. मूलनायक श्री वासुपूज्य भगवान की प्रतिमा 16'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। लेख है :– ''सम्बत् 1808 वर्षे शाके 1673 प्रवर्तमाने ज्येष्ठ सुदि 12 शनों तपागच्छे श्री विजय दया सूरि आचार्य श्री विजय धर्म सूरि राज्ये नयशिवदास भार्या निज श्रेयोर्थ बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं विजय गणिभी राणा जगतसिंघ राज्ये''

2. मूलनायक के दाहिनी ओर कुंथुनाथ जी की 10'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लेख है संवत् 1808 वर्षे ज्येष्ठ सूदि 9 बुधे उदयपुर वास्तव्य श्री ——————— शिवदास श्री श्रेयोर्थ श्री तपागच्छे पं. अमृतानन्द''

3. मूलनायक के बाईं ओर पद्म प्रभु जी 10'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है लेख है :— ''संवत् 1816 वर्षे ——————''

इस मंदिर में एक पार्श्वनाथ भगवान की धातु की उत्थापित प्रतिमा 7'' ऊँची है, कोई लेख नहीं है।

दक्षिण पूर्व में भी एक देवरी है जिसको पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर कहा जाता है। **इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :—**

1. मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 10'' ऊँची श्याम पाषाण की है। सर्प के फण का छत्र है। कोई लेख नहीं है।

2. मूलनायक के दाहिनी ओर जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है। कोई लांछन व लेख नहीं है।

3. मूलनायक के बाईं ओर चन्द्र प्रभु जी की प्रतिमा 9'' ऊँची श्याम पाषाण की है कोई लेख नहीं है।

मंदिर के उत्तर की ओर बावड़ी है, जिसका पानी मंदिर के कार्य में प्रयोग में लाया जाता है। मंदिर में प्रवेश करते समय दोनों ओर 7—7 कुल 14 देवरिया है, जो खाली है। मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है। भविष्य में देवरियों में प्रतिमा विराजमान कराने का प्रस्ताव है। वर्तमान में सभा मंडप में स्थापित प्रतिमाएँ उत्थापित कर देवरियों में विराजमान करवाई है।

आदिनाथ भगवान की मय परिकर के प्राचीन व कलात्मक प्रतिमा है, श्याम पाषाण की जो अद्‌भुतजी (नागदा) से लायी गयी है, ताले में रखी है। इस मंदिर का सम्पूर्ण जीर्णोद्धार के.एल. जैन के प्रयास से हुआ और पुनः प्रतिष्ठा दिनांक 13.05.05 आचार्य श्री अशोक सागर सूरीश्वर जी की निश्रा में सम्पन्न हुई।

❑❑❑

श्री गोड़ी पार्श्व नाथ जी का मंदिर
भूतमहल, मालदास स्ट्रीट, उदयपुर

यह मंदिर अजितनाथ धर्मशाला, मालदास स्ट्रीट के पीछे, भूतमहल नामक मोहल्ले में स्थित है।

श्री मयगल सागर जी महाराज के शिष्य श्री पद्मसागर जी महाराज का उदयपुर चातुर्मास वि.सं. 1800 में हुआ, उस समय उदयपुर श्री संघ के पास कोई उपाश्रय नहीं था।

श्री पद्मसागर जी महाराज के दर्शन के लिये अहमदाबाद से आए श्रावक श्री जवैरचन्द जी ने महाराज श्री के उपदेश से एक नोहरा 475/– में खरीद कर सं 1801 में उपाश्रय बनवाकर पद्मसागर जी महाराज को सुपुर्द कर दिया। यह वही स्थान है, जहाँ गोडी जी का उपाश्रय है। इसी जमीन पर गोड़ी पार्श्वनाथ का मंदिर बनवाने का कार्य प्रारम्भ किया, और वि.सं. 1808 में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। इस मंदिर का रास्ता सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ मंदिर के चौक में से होकर नाल चढ़कर जाता है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. मध्य में पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। मस्तक पर सर्प के फणे का छत्र है, तथा उसके ऊपर सामान्य गोल छत्र है। ये पंच तीर्थी परिकर के मध्य में विराजमान हैं। परिकर और सिंहासन श्वेत पाषाण का है सिंहासन में मध्य भाग में चक्र तथा आसपास दो हाथी बने हुए हैं। प्रतिमा पर यह लेख है :–

   ''संवत् 1808 वर्षे शाके 1673 प्र. ज्येष्ठ सुदि 9 बुधे तपागच्छे श्री विजय दया सूरि आचार्य श्री विजय धर्म सूरि राज्ये उदयपुर वास्तव्य श्रे (उसवाल) ज्ञातीय जीवनणदास भार्या टामिटउ पार्श्व बिंब कारापितं प्रतिष्ठितं श्री विजय गणिभिः।।''

2. निज मंदिर में प्रवेश करते हुये बाये कोने में पूर्वाभिमुख विमलनाथ भगवान् की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर केवल –''श्री विमलनाथ बिंब'' लिखा है।''

3. उक्त प्रतिमा के बाईं ओर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे रविवासरे श्री उदयपुर वास्तव्य दोसी लखूजी ऊसवाल वृद्धि शाखायां पुत्र दोसी रूपजीत जी तस्य भा. रूपादे तस्य पुत्र दीपहर जी तस्य भार्या कनकादे त. पुत्र दोसी वषताजी तस्य भार्या केसरदे तस्य पुत्र....''

4. मूलनायक के दाएँ श्री मल्लिनाथ जी की प्रतिमा 19'' ऊँची श्याम पाषाण का है। प्रतिमा पर यह लेख है :– संवत् 1840 श्री मल्लिनाथ बिंब।

5. मूलनायक के बाएँ श्री पद्म प्रभु जी की 15'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इसका लेख बिल्कुल अस्पष्ट है।

6. श्री चंद्र प्रभ की प्रतिमा 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर कोई लेख नहीं है।

7. प्रवेश करते हुये दाएँ (सामने की देवरियों में) एक बहुत सुन्दर चौबीसी श्वेत पाषाण की प्रतिमा है, जिसमें वर्तमान चौबीसी के आदि तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव जी मध्य में विराजमान है, और ऊपर पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा सुशोभित है। आस पास सब तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ लांछन सहित बनाई गई है। यह 31'' ऊँचे एक पत्थर में बनी हुई है। पार्श्वनाथ भगवान के दोनों ओर एक–एक हाथी तथा आदेश्वर भगवान् के मस्तक के ऊपर घण्टाकार है। इस पर यह लेख है :–

''सं. 1272 धरमचंद जी साहमल जी लालचंद''

निज मंदिर में दाईं दीवार में एक आलिए में दक्षिणाभिमुख 5 प्रतिमाएँ बिराजित हैं।

1. मध्य में पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा 11'' ऊँची श्याम पाषाण की है। पीछे श्वेत पाषाण में कल्प वृक्ष खोदकर बनाया गया है। प्रतिमा पर लेख नहीं है।

2. भगवान सुमतिनाथ जी (मूल नायक के दाएँ) की 6'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख नहीं है।

3. श्री महावीर भगवान् की प्रतिमा 7'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''महावीर मदन करापित तपागच्छे''

4. पार्श्वनाथ जी के बाएँ नेमिनाथ जी की प्रतिमा 7'' ऊँची श्वेत पाषाण की है, जिस पर यह लेख है :–

''सं. 1748 वर्षे वैशाख सुदि 1''

5. ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा 6'' ऊँची श्वेत पाषाण की है, जिस पर कोई लेख नहीं है।

प्रवेश के बाईं ओर आलिए के मध्य में मल्लिनाथ भगवान् की उत्तरमुखी प्रतिमा

15'' ऊँची श्वेत पाषाण की विराजित है। दीवार पर लेख है :– ''प्रतिष्ठा दि.1.12.95 को श्री मीठालाल जी मारवाडी परिवार द्वारा कराई गयी।''

मल्लिनाथ भगवान के दोनों ओर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 9'' ऊँची श्याम पाषाण की है, जिसमें से मध्य के भगवान के दाहिनी ओर की प्रतिमा की प्रतिष्ठा श्रीमती चंचलदेवी धर्मपत्नी मीठालाल जी व बाईं ओर की प्रतिमा की प्रतिष्ठा श्री भीमसिंह जी पद्मसिंह जी बापना द्वारा कराई गई।

इसी आलिए में निम्न उत्थापित चल प्रतिमाएँ सर्वधातु की हैं :–

1. गोलाकार सिद्धचक्र यंत्र 5'' व्यास का है। 2. चौकोर छोटा सिद्धचक्र यंत्र 4'' x 4'' का 3. त्रिकोण यंत्र 7'' भुजा का है। 4. 5'' x 3'' अष्ट मंगल यंत्र का है।

निज मंदिर 15.5'' x 7 फीट है। एक बेदी पर चार स्तंभ बने हैं, जिसके पांच द्वारों (देवरिया) में भगवान की प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

सभा मंडप में स्थापित प्रतिमाएँ

सभा मंडप के पूर्व की दीवार में पश्चिमाभिमुख पद्मावती देवी की प्रतिमा (एक आलिए में) 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर कोई लेख नहीं है।

सभा मंडप के दरवाजे के सामने उत्तरमुखी पीत पाषाण की श्री नाकोड़ा भैरवजी की प्रतिमा स्थापित है। जिस पर लेख है :–

''श्री नाकोडा भेरूजी का यह गोखड़ा व मूर्ति श्री गहरीलाल चन्दनमल पोरवाल भानपुरा वालों ने भराई वि.सं. 2058 वैशाख सु. 3 दिनांक 26.4.2001''

''सभा मंडप के दक्षिण की ओर एक द्वार है, जिसमें प्रवेश करके बाहर व्याख्यान शाला के गलियारी में पहुँच जाते हैं। इसके दक्षिणी भाग में एक देवरी में ऊपर काँच के आलिए में देवी की प्रतिमा है, जो त्रिशूल तथा सर्प धारण किये हुए हैं। इसके आसपास अंदर काँच के दो चित्र लगे हुए हैं। देवरी में 21'' x 12'' आकार की श्वेत पाषाण की वेदी पर श्री भावसागर जी तथा ज्ञान सागर जी की चरण पादुकाएँ प्रतिष्ठित है।

वेदी पर यह लेख है :–

''सं. 1888 वर्षे शाके 1753 प्रवर्तमाने फाल्गुन शितांत षष्ठी गुरौ तदिने संवेगी साधुजी पं. श्री भावसागर जी पं. श्री ज्ञान सागरजी कस्य (युवयोगी) पादुका कारापिता''

देवरी के पास ही एक आलिए में जवेर सागर जी महाराज की पादुकाएँ स्थापित है। श्वेत पाषाण की यह वेदी 12 '' x 12'' लम्बी चौड़ी है। इसके ऊपर यह लेख है :–

''सं. 1949 का आसाभर (आषाढ़) सुद 5 भौम मुनि श्री जवेर सागर जी कस्य पादुका''

इस आलिए में आचार्य जवेर सागर जी महाराज का एक चित्र भी काँच में दीवार में लगा है।

एक आलिए में श्वेत पाषाण की गौतम गणधर की चरण पादुकाएँ स्थापित है। लेख है :– ''संवत् 2058 वैशाख सुदी 3 गुरुवासरे श्री नाहरसिंह जी पुत्र तेज सिंह पुत्र राजेन्द्रसिंह कोठारी द्वारा प्रतिष्ठा श्री प्रेमसूरि जी भुवनभानुसूरिजी शिष्य जितेन्द्र सूरीश्वरजी द्वारा दिनांक 26.4.2001 को हुई।''

मंदिर के सभा मंडप की दीवार पर भिन्न–भिन्न पट्ट काँच में सुन्दर तरीके से जड़े हुए हैं।

बाहरी सभा मण्ड़प के – 1. दक्षिणी दीवार पर सम्मेद शिखर जी का 2. पूर्वी दीवार पर नन्दीश्वर द्वीप व अष्टापद तीर्थ का 3. उत्तरी दीवार पर गिरनार जी, केशरिया जी का पट्ट व सीमन्धर स्वामी के चित्र लगे हुए है।

इसी प्रकार मूल नायक के समानान्तर दीवार पर बाहरी सभा मंडप में शंत्रुजय तीर्थ तथा निज मंदिर की उत्तरी दीवार पर बाहरी मंडप में नागेश्वर पार्श्वनाथ को पट्ट बने हुए है।

इस मंदिर की व्यवस्था जैन श्वेताम्बर महासभा द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ जी का मंदिर
भूतमहल, मालदास स्ट्रीट, उदयपुर

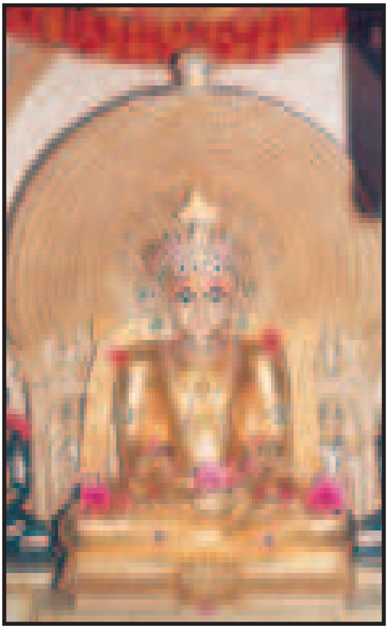

यह मंदिर गोडी पार्श्वनाथ मंदिर के साथ जुड़ा हुआ है।

इस मंदिर की जमीन महाराणा भीमसिंह जी ने सं. 1839 में (उपाश्रय के साथ हाथी का ठाण था) मंदिर बनाने के लिये बक्षीस दी। इसी भूमि पर श्री भावसागर जी महाराज के उपदेश से स्थानीय व बाहर के धर्म प्रेमियों से प्राप्त द्रव्य से मंदिर बनाया गया है।

यह मंदिर बहुत सुन्दर व अनुपम है। इसकी वास्तुकला देखने लायक है। यह मंदिर अजितनाथ भगवान के मंदिर अजितनाथ धर्मशाला व आयबिल शाला के साथ भी जुड़ा हुआ है।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. भगवान् पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा 41''ऊँची श्वेत पाषाण के एक ही खण्ड में काट कर सुन्दर सिंहासन, पंचतीर्थी परिकर तथा मूलनायक जी का सहस्त्र सर्प फणों के छत्र से सुशोभित है। जिसका परिकर 89'' ऊँचा है।

सिंहासन के निम्न भाग में भी शेष नाग बना है, और ऊपर देवी देवताओं की पंक्ति बनी हुई है। वास्तुकला की दृष्टि से यह बहुत भव्य प्रतिमा है। इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा मुनि श्री भावसागर ने सं. 1847 में कराई।'' इस पर यह लेख है :–

''सं. 1847 वर्षे मासोतम मासे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे दशमी तिथौ भृगुवारे श्री (सहस्त्रफणा) पार्श्वनाथ बिंब श्री संघेन कारापितं श्रीमन्तपा गच्छाधिराज सकल भट्टारक पुरन्दर भट्टारक श्री विजय जिनेन्द सूरिभि प्रतिष्ठितं श्री उदयपुर नगरे महाराणा श्री भीमसिंह जी विजय राज्ये।''

मूलनायक सहस्रफणा पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमा अतिसुन्दर है, और इस प्रतिमा के ऊपर 1000 सर्प फणों का छत्र है, इसीलिये इसे सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ के नाम से जाना जाता है। छत्र और परिकर के विभिन्न भागों में बड़े 19 नाग फण खुदे हैं।

2. मूल नायक जी के दाहिनी ओर श्री वासुपूज्य भगवान की प्रतिमा 21'' ऊँची श्याम पाषाण की है। लांछन (महिष) स्पष्ट है। इस पर लेख है :– ''सं. 1847 वैशाख

सु. 10 ---- श्री सुविधिनाथ बिंब प्रतिष्ठितम् लेख के अनुसार प्रतिमा सुविधिनाथ भगवान की है। प्राचीन पत्रावली के आधार पर भी सुविधिनाथ की प्रतिमा की ---------- प्रतिष्ठा होना पाया जाता है।

3. मूलनायक जी के बाईं ओर श्री संभवनाथ जी की सुन्दर प्रतिमा 23'' ऊँची श्याम पाषाण की है, जिस पर यह लेख है :-

''सं. 1847 वै.शु. 10 श्री संभवनाथ बिंब प्रतिष्ठतं''

सर्व धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :-

1. धर्मनाथ जी की 8'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :

''सं. 1511 वर्षे वैशाख वदि 5 रवि श्री मो. ज्ञातीय मं नीमा भार्या मनु सुत मा गोराकेन सुत भो. महिराज युतेन सु पित्रुः श्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं विद्याधर गच्छेश श्री विजय प्रभ सुरिभिः

2. सिद्ध चक्रं यंत्र 5'' x 5'' के आकार का है। कोई लेख नहीं है।

3. सिद्ध चक्रं 6'' x 5'' के आकार है।

सभा मंडप में बाहर से प्रवेश करते हुए दाहिनी ओर आलिए में धरणेन्द्र यक्ष की प्रतिमा श्वेत पाषाण की (परिकर सहित) 19'' ऊँची है तथा उत्तरी दीवार पर एक कारनिस पर।

1. श्री नेमीनाथ जी की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है, जिसके ऊपर ''श्री नेमिनाथ बिंब प्रतिष्ठितं'' लिखा है।

2. मध्य में पद्मप्रभु जी की प्रतिमा 25'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इसके ऊपर यह लेख है :-

''सं. 1850 रा. वै. सु. 10'' श्री पद्मनाथ बिंब प्रतिष्ठतं''

इस प्रतिमा का सिंहासन 9'' ऊँचा श्वेत पाषाण का है। इसमें 6 पद्मासन बद्ध प्रतिमाएँ है तथा आसपास दो खड़ी मूर्तिया हैं।

3. ऋषभ देव भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण है। प्रतिमा पर यह लेख है।

''श्री ऋष्भदेव बिंब।।''

इसके पास ही मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिमा 15'' ऊँची व वेदी सहित 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। प्रतिमा के ऊपर मुनिसुव्रत स्वामी लिखा है। प्रतिष्ठा आ.विजय प्रेमसूरीश्वरजी शिष्य भुवनभानुसूरि शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः कारितचं हजारीलाल सुत चुन्नीलाल अंकित है। (शेष लेख पीछे होने से नहीं पढ़ा जा सका)

नीचे :- इस मूर्ति की प्रतिष्ठा श्री जितेन्द्र सूरीश्वर जी की निश्रा में स्वर्गीय श्रीमती कस्तुरीबाई की याद में दिनांक 1.12.95 श्री गोटीलाल किशनलाल गहरीलाल सिंघटवाड़िया द्वारा कराई गई।

मुनिसुव्रत स्वामी के दाहिनी ओर पूर्व मुखी आदिनाथ भगवान की प्रतिमा 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की व वेदी सहित 21'' ऊँची है। जिस पर लेख है :– सं. 2033 ऋषभदेव बिंब भानपुरा प्राग्वाट् जातीय गोत्रीय राठौड केलवाड़ा संघेन महाराज श्री हिमाचल सूरीश्वर जी अंकित है। प्रतिष्ठा जितेन्द्र सूरीश्वर जी द्वारा वि.सं. 2056 वैशाख शुक्ला 3 को हुई। (शेष लेख पीछे की ओर होने से नहीं पढ़ा जा सका)

दक्षिणी दीवार पर भी 3 प्रतिमाएँ है। आगे श्री शांतिनाथ भगवान की 15'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। उस पर केवल ''श्री शांतिनाथ बिंबम्'' लिखा हुआ है।

2. मध्य में श्री नेमिनाथ भगवान् की प्रतिमा 25'' ऊँची श्याम पाषाण की है। उस पर यह लेख है :– ''श्री नेमीनाथ बिंब प्रतिष्ठतं'' सं. 1847 वै.सुदी 10''

3. आगे श्री कुंथुनाथ जी की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। प्रतिमा पर लेख है :– ''श्री कुंथुनाथ बिंब'' लिखा हुआ है, लेकिन महासभा द्वारा दीवार पर आदिनाथ भगवान लिखा गया है।

इसके आगे दक्षिणी दीवार पर ही श्री सुमतिनाथ भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की व वेदी सहित 23'' ऊँची है।

इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा सुन्दर बेन पुत्र अमृत भार्या लता अरविन्द भार्या सुमित्रा द्वारा श्री जितेन्द्र सूरीश्वर जी की निश्रा में स्वर्गीय मोतीलाल जी परताब बाई, भूरबाई एवं फूलबाई की याद में गोटीलाल किशनसिंह पुत्र लक्ष्मीलाल, विजयसिंह, जीवनसिंह सिंघटवाड़िया ने करवाई।

इसके पास ही पूर्व मुखी महावीर स्वामी की प्रतिमा 13'' ऊँची व वेदी सहित 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की है, जिस पर तरूण कुमार गेहरीलाल बेटा–पोता चन्दनमल जी धीरज मल जी गोत्र राठौड़ माह शु. 13 वि.सं. 2057 है। प्रतिमा की प्रतिष्ठा आचार्य श्री जितेन्द्रसुरि जी की निश्रा में तरूण कुमार पुत्र गहरीलाल पोरवाल भानपुरा ने विराजित कराई वि.सं. 2058 वैशाख शु. 3 दिनांक 26.4.2001

मंदिर के सभा मंडप में बाहर से प्रवेश करते समय बाईं ओर ऊपर नीचे दो प्रतिमाएँ एक ही श्वेत पाषाण की हैं। नीचे पद्मावती जी की 11'' ऊँची प्रतिमा है। ये एक हाथ में माला तथा दूसरे हाथ में पुष्प लिए हुए हैं। एक हाथ खाली है। आस पास दो सर्प बने हैं तथा मस्तक पर सर्प का छत्र धारण किए हुए है। मस्तक पर पार्श्वनाथ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है इनके मस्तक पर श्वेत पाषाण का छत्र है। देवता चंवर डुला रहे हैं। दोनों प्रतिमाओ की ऊँचाई 19'' है इस पर कोई लेख नहीं है। इसकी प्रतिष्ठा सं. 1847 वैशाख शुदि 10 को हुई।

बाहरी सभा मंडप

इसमें बारह स्तंभ तथा 4 अर्धस्तंभ है। ये सब पाषाण के बने हुए हैं। सभा मंडप का नाप 18 x 16 फीट है। द्वार के दोनों ओर आलियो में (प्रवेश करते हुए बाईं ओर

धरणेन्द्र यक्ष की खडी प्रतिमा 27'' की है। मस्तक पर सर्प का छत्र है, लेकिन नीचे श्वान भी है। इसलिये यह प्रतिमा भैरवजी की भी सम्भावित है और दाहिनी ओर पार्श्व यक्ष की प्रतिमा 11''ऊँची श्वेत पाषाण की है।

परिक्रमा

निज मंदिर तथा सभा मंडप के चारों ओर खुली परिक्रमा है। इसमें निम्न जिनालय बने हुए है :–

मुख्य द्वार के उत्तर की ओर –

1. श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

   ''श्री आदिनाथ बिंब''

   इस प्रतिमा के 9'' ऊँचे सिंहासन में 4 पद्मासनबद्ध प्रतिमाएँ हैं।

2. श्री चंद्र प्रभु जी की प्रतिमा 23'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इस पर यह लेख है –

   ''सं. 1847 वै. सु. 1 मं. '' श्री चंद्रप्रभु बिंब प्रतिष्ठतम्''

3. उत्तर पूर्व के कौने में एक जिनालय में (भगवान् नेमिनाथ की)? हल्के गुलाबी पाषाण की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इस पर लेख अस्पष्ट है।

4. उत्तर दिशा में एक जिनालय में नंदीश्वर द्वीप प्रतिष्ठित है। इसके बीचों बीच पार्श्व नाथ भगवान की प्रतिमा 17'' ऊँची है। मस्तक पर सर्प का छत्र है। सम्पूर्ण नंदीश्वर द्वीप का व्यास (जो कि गोलाकार है) 41'' है।

   भगवान् पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा के नीचे यह लेख है :–

   ''सं. 1847 रा. वै. सु. 10 दिने श्री नंदीश्वर द्वीपं प्रतिष्ठतं।।''

   इसी जिनालय में 17'' x 17'' की श्याम पाषाण की वेदी पर सुज्ञान सागर की पादुकाएँ प्रतिष्ठित है। इस पर यह लेख है :–

   ''संवत् 1847 वर्षे मासोत्तमे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे 10 म. तिथौ भृगुवारे पं. श्री सुज्ञान सागर गणिनामियं पादुका कारापिता श्री उदैपुर नगरे।।

मुख्य द्वार के दक्षिण में –

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा 15'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इस पर :–

   ''श्री पार्श्वनाथ बिंब'' लिखा है तथा नीचे 9'' ऊँचा सिंहासन है, जिसमें पद्मासन प्रतिमाएँ खुदी हुई हैं।

2. श्री सुपार्श्वनाथ जी की प्रतिमा 25'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इस पर यह लेख है।

   ''सं. 1847 वै. सु. 10 सुपार्श्वनाथ बिंब प्रतिष्ठतं।।''

3. सभा मंडप के दक्षिण में चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमा 35'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। एक देवता व देवी को हाथों पर उठाये हुए हैं। आभूषण आदि का काम बहुत सुन्दर है। प्रतिमा पर यह लेख है :—

संवत् 1856 वर्षे शाके 1722 प्रवर्तमाने वैशाख मासे शुक्ल पक्षे अखय तृतीयायां व (च) चक्रेश्वरी देवी श्री संघेन कारापिता श्री तपागच्छे श्री पं. भाव सागरेण प्रतिष्ठिता उदयपुर नगरे

1. चक्रेश्वरी देवी के आगे पूर्व मुखी देवरी बनी है, जिससे मध्य में सुविधिनाथ भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :—

सं. 2024 वै.शु. 6 चन्द्रे श्री सुविधिनाथ बिंब मोहला निवासी लच्छीरामस्य धर्म पत्नी सागर देव्या का.प्र. घाणेराव श्री संघेन प्र. विजय हिमाचलसूरिभि

2. मूलनायक के दाहिनी ओर सुपार्श्वनाथ भगवान की 13'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :— सं. 2024 वै.शु. 6 चन्द्रे श्री सुपार्श्वनाथ जिन बिंब .... सूरजमल पुत्र मुल्तानमल पुत्र .... श्री सुन्दर देव्या का. प्रतिष्ठापितं च घाणेराव श्री संघेन आ. विजय हिमाचलसूरिभिः।

3. मूलनायक के बाईं ओर श्री शांतिनाथ भगवान की 13'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :— सं. 2024 वै.शु. 6 चन्द्रे श्री शांतिनाथ बिंब .... कोठारी सूरजमल .... प्रतिष्ठतंच घाणेराव श्री संघेन।

देवकुलिका के बाहर दाहिनी ओर की दीवार पर लेख है :— प्रतिष्ठा जेठ शुक्ला 11 गुरुवार वि.सं. 2032 प.पू. पन्यास प्रवर गुरुदेव श्री रत्नाकर विजय जी म.सा., प.पू. मुनिराज राजशेखर विजय जी की मंगल निश्रा, कर कमलों द्वारा हुई चरण किंकर भंवरलाल प्रेमबाई सिंघटवाड़िया।

बाईं ओर की दीवार पर लेख है :—

''इस देव कुलिका का निर्माण कार्य प.पू. आचार्य देव विजय सुशीलसुरीश्वर जी म.सा. की मंगल निश्रा में सं. 2029 में हुआ। खनन मुहरत श्रावण शुक्ला पूनम गुरुवार, शिलान्यास मिगसर कृष्णा 2 बुधवार।''

प्रतिष्ठा सम्पन्न करा सिंघटवाड़िया परिवार ने यह देव कुलिका संघ को भेट की। इसका लेख दरवाजे के ऊपर है। पश्चिम की ओर उत्तरी कोने में एक देवरी है, जिसमें सिद्धचक्र यंत्र काँच से जड़ित है।

बाहरी चौक में दक्षिण मुखी हनुमान जी की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इस मंदिर की देख–रेख जैन श्वेताम्बर महासभा उदयपुर द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर
मालदास स्ट्रीट, उदयपुर

यह मंदिर मालदास जी की सहरी श्री जैन श्वेता. मूर्ति पूजक श्री संघ के उपाश्रय के सामने व अजितनाथ धर्मशाला के पास में मुख्य सड़क के किनारे स्थित है।

इस मंदिर के साथ एक उपाश्रय भी है, इस उपाश्रय में भट्टारक श्री मोती विजय जी रहते थे, इसलिए इसको मोतीविजय जी का मंदिर भी कहते है। यह मंदिर प्रथम मंजिल पर है। यह मंदिर सुराणा परिवार द्वारा बनाया गया था, जिसका लेख मंदिर में स्थापित शिलालेख से स्पष्ट होता है। लेख इस प्रकार है :–

।।श्री 24।।

''नमों श्री आदिनाथ प्रमुखा जिनेन्द्रा श्री पुण्डरीक प्रभुगणधरा सूर्यादि षेटका''

संवत् 1909 शाके 1774 आ. माघ मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी चन्द्र पुष्य नक्षत्रे श्री उदयपुर नगरे महाराणा जी श्री सरूपसिंह जी राजे श्री मज्जिन श्री ऋषभदेव ''जिन बिंब स्थापित सकल संघन करापितं श्रीमद बृहद् गच्छे भ. श्री विजय जिनेन्द्र स्व राज्य अलंकृत भ. श्री. विजय देवेन्द्र सुराणा आदेशात् प्रतिष्ठितं श्री संत विजय सूरि व चरणकमल से वितृं मोती विजय उपदेशात् स्वयमेंव ऊसवाल वृद्धशाखायां सुराणा सा. श्री नन्दाजी तत्पुत्र जोतमान् जी, जयनन्द जी, नाथ जी, जवेर जी तत्पुत्र सा. ऋषभदास जी, ग्यानजी प्रतिष्ठा करापितं' संवत् 1914 शाके 1779 श्रावण मासे शुक्ल पक्षे शष्टम तिथौ बुधै स्वाति नक्षत्रे ओ. बृहद् शाखायां सोलंकी श्री विजय सिंघजी तत्पुत्र वख्तावर तद्भार्या नैण उदरेण मुम श्री ऋषभदेव जी प्रणदे देहे शारोपितं ओछेद् समस्त संघेन करापितं उपदेशात् साधु– मोती विजय दर्शन विजये बछावत शाखायां मेहता शेरसिंघ जी श्री अजितसिंह जी इन्द्र स्थलं धर्मार्थ ददा ....आदि विजय''

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. मूल नायक श्री कुंथुनाथ स्वामी की प्रतिमा 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। चाँदी का परिकर बना हुआ है। इसके पबासन पर लेख है :– कि संवत 1903 वर्षे शाके 1768 प्र. माघ मासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां तिथौ भृगुवासरे श्री अहमदाबाद वास्तव्य उसवाल जातीय वृद्ध शाखायां

श्री शिवदान चन्द तत्पुत्र सा लक्ष्मीचन्द्र तत्पुत्र सा. कमलचन्द्र तद्भार्या ऐजमबाई तत्पुत्रस्य उमेदचन्द्रेन स्व. श्रेयोर्थ श्री कुंथुनाथ श्री बिंब ....''

2. मूलनायक के बाईं ओर जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची श्याम पाषाण की है। लांछन व लेख अस्पष्ट है। लेकिन प्रतिमा के ऊपर दीवार पर केशरिया जी का नाम लिखा है।

3. मूलनायक के दाहिनी ओर श्री जिनेश्वर भगवान की 15'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है। प्रतिमा के ऊपर दीवार पर श्री नेमिनाथ जी का नाम लिखा हुआ है। लेख अस्पष्ट है :– ''(संवत् 1753) ? माघ मासे .... उपादेय'' लिखा है।

4. इसके आगे जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 13'' ऊँची पीत पाषाण की है। लांछन नहीं है व लेख पबासन पर अस्पष्ट है। प्रतिमा के नीचे मुनिसुव्रत स्वामी का नाम लिखा हुआ है। वेदी की दीवार पर बीच में श्री लक्ष्मीदेवी की प्रतिमा है, **दीवार पर लेख है :–**

1. ''श्री विजय कुमार सुराणा धर्मपत्नी सायरदेवी पुत्र राजकुमार पुत्रवधू सोनू पौत्र हर्ष ने मुनिसुव्रत स्वामी एवं प्रासाद देवी (लक्ष्मीदेवी) को विराजमान करायी वि.सं. 2056 ज्येष्ठ शुदि 13 दिनांक 26.6.1999''

2. श्री कुंथुनाथ स्वामी की पुनः प्रतिष्ठा स्वर्ण कलश एवं ध्वजा दण्ड चढ़ाने का लाभ श्रीमति वेलकुंवर धर्मपत्नी स्व. श्री सोहनलाल जी मदनसिंह जी श्री बसन्तलाल जी शारदा देवी रोशनलाल जी बदामबाई एवं विजयकुमार जी सायरदेवी सुराणा वि.सं. 2056 ज्येष्ठ सुदि 13 दिनांक 26.6.1999. ने लिया।

3. ''श्रीमती प्रकाश बहन पत्नी रणजीतसिंह जी जीवनसिंह जी गजेन्द्रसिंह जी महता मूल गभारे में स्वर्ण कलश भराने का लाभ लिया वि.सं. 2056 ज्येष्ठ सुदि 13 दिनांक 26.6.1999''

4. ''स्व. श्री जतनबाई जी की स्मृति में संघवी जोधराज, करणसिंह, ललित, रोशन, भोपाल, पुष्पा, कल्पना, मधु, सरोज, कमला, पूर्णिमा, चिराग, गगन, रोबिन, नकुल, पंकज, हर्षित, अर्पित, प्रतीक, दिव्य कोठारी ने केशरियाजी को विराजमान कराने का लाभ लिया। सं. 2056 ज्येष्ठ शुक्ला 13 दिनांक 26.6.1999.

5. स्वर्गीय श्री इन्द्रसिंह जी धर्मपत्नी रतनदेवी की स्मृति में श्री पारसचन्द्र, श्रीमती लीला पुत्र भानु, श्री विनोद पौत्र श्री हार्दिक, श्री समहित, श्री चीरायु कोठारी ने नेमिनाथ जी विराजमान कराने का लाभ लिया। वि.सं. 2056 ज्येष्ठ सुदि 13 दि. 26.6.1999।''

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र

1. चौबीस तीर्थी धातु की अजितनाथ भगवान की प्रतिमा 13'' ऊँची है, जिसके पृष्ठ भाग में लेख है :– संवत् 1921 वर्षे शाके 1786 प्रर्वतमाने माह मासे शुक्ल पक्षे 7 सप्तम्यां तिथौ शुक्रवासरे श्रीमदा चल गच्छे अरजीदास श्री श्वतसागर सूरीश्वराणां राज्य उपदेशात् श्री कच्छ देशे कोठार नगरे ऊस वंशै लघु शाखायां गांधी मोहता गोत्रे सा. नायकसिंह तद् भार्या हीराबाई तत्पुत्र सेठ केसवजी तद्भर्या पावाबाई.................... तत्पुत्र नरसिभाई...........जिन बिंब कारापितं''

2. वर्गाकार सिद्ध चक्र यंत्र 5'' x 5'' है। कोई लेख नहीं है।

3. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र तांबे का 6'' व्यास का है।

4. पंचतीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची है, जिसके पृष्ठ भाग में लेख इस प्रकार हैः— ''संवत 1921 वर्षे शाके 1786 प्रवर्तमाने माघ शुद्ध 7 गुरुवासरेन श्रीमंदाचल गच्छे पूज्य भट्टारक श्री श्वतसागर जी सूरीश्वराणा उपदेशात् कच्छ देशे कोठारे नगरे ऊसवंशे लघुशाखायां गान्धी मोहता गोत्रे सा. नायक मलसि तद् भार्या हीराबाई तत्पुत्र सेठ केसव जी तद्भार्या पाबाबाई तत्पुत्र नरसिंभाईना आ. पंच तीर्थी जिन बिंब कारापित अंजनशलाका कारापितं''

5. चौबीस तीर्थी प्रतिमा 3'' ऊँची है। कोई लेख नहीं है।

6. धातु की पद्मावती देवी की प्रतिमा 5'' ऊँची है। इस पर लेख है :— ''संवत् 1536 वैशाख सुदी 10 बुधे श्री काष्ठा संघेन भ. श्री सोमकीर्ति प्रतिष्ठिता'' —

7. पार्श्वनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 8'' ऊँची है। इस पर लेख है'' श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ पंच तीर्थी प्रतिष्ठिता तपा. आ. जितेन्द्र गुण रत्न सुरिभ्यां कारितं च गढ़ सिवाणा नि. भीमराज जी भगवानचन्द्र धारीवाल फाल्गुन सुद 3 वि.सं. 2017''

8. विमलनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 6'' ऊँची है। इस पर लेख है :— ''संवत् 1557 वर्षे ज्येष्ठ सुदी 10 दिने प्राग्वाट् जातीय श्रे. साजण भार्या मांगू पुत्र उमड़ा देवराज भार्या देवल दे स्व. पुन्यार्थ श्री विमलनाथ बिंब का.प्र. मडाहक गच्छे रत्नपुरी भ. गुण चन्द्र सूरिभिः आणंदेमेव सहितेन उपदेशात्''

9. चन्द्र प्रभु की पंच तीर्थी प्रतिमा 6'' ऊँची है। इसके पृष्ठ भाग में यह लेख है :— ''संवत् 1525 वर्षे पोष वदी 5 सोम उपकेश जा. गोखरू गौत्रे सा. किता भार्या दल्ला पुत्र श्वेता रानी आत्य हो. ..... जिण बिंब पुन्यार्थ चन्द्रप्रभु स्वामी बिंब प्र. अचलगच्छे श्री जय केशरसूरिभिः''

10. पार्श्वनाथ भगवान की पंच धातु की प्रतिमा (जिनके मस्तक पर सर्प का फण है) 5'' ऊँची है। इस पर लेख है :— सं. 1587 वर्षे माघ वदी 8 गुरौ श्री हमीरदन भेट वास्तव्य श्री संघ श्री पार्श्व बिंब''

11. पार्श्वनाथ भगवान की पंच धातु की प्रतिमा 5'' ऊँची है। मस्तक पर सर्प का फण है। इसके पीछे लेख है :— ''सं. 1709 म. श्री नरेन्द कीर्ति प्र. नेम सुरि।''

12. पार्श्वनाथ भगवान की धातु की प्रतिमा 2'' ऊँची है। जो कि धातु की वेदी बनी हुई है।

13–14. जिनेश्वर भगवान की आकृति धातु के दो पतरों पर बनी हुई है। जिसका आकार 2'' x 2'' है।

15. आदिनाथ भगवान की आकृति धातु के पतरे पर बनी हुई है। जिसका आकार 2'' x 2'' है।

16. जिनेश्वर भगवान की आकृति धातु के पतरे पर बनी हुई है। जिसका आकार 2'' x 2'' है।

17. धातु की पंच तीर्थी प्रतिमा 7'' ऊँची है। इसके पृष्ठ भाग में लेख है :—

''संवत् 1521 वर्षे ज्येष्ठ सुद 4 गुरौ श्रीमाल जाति सेठिया स. कमल भार्या कमलासिनी पुत्र सा. धीता गुणराज भांजा पुत्र गणसिंघ नायना श्रेयसे चौबीस ——— बिमल बिंब का. प्र. लक्ष्मीसागर सूरिभिः''

18. वीस स्थानक (तांबे का) यंत्र जिसका आकार 16'' x 16'' है।

19. तांबे का सिद्ध चक्र यंत्र का आकार 11'' x 16'' है।

मूल नायक के बाईं ओर दक्षिणी दीवार में ही श्वेत पाषाण की चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमा है। वेदी की दीवार पर लेख है :— ''सुराणा परिवार की कुल देवी सुसवाणीमाता को सुराणा संगठन द्वारा बिराजमान करवाई गई। वि.सं. 2056 ज्येष्ठ शुक्ला 13 दिनांक 26.6.1999.''

मूलनायक के दाहिनी ओर दक्षिणी दीवार में श्याम पाषाण की चरण पादुका है। इस पर लेख है :— जिस ''संवत् 1914 दादा श्री देवेन्द्र विजय जी।''

निज मंदिर के बाहर सभामंडप से मंदिर में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर एक आलिए में चरण पादुका है। यह चरण पादुका श्री दौलतसिंह जी सुराणा के बुजुर्गों की है। संवत् 1914 शाके 1779 का लेख है ऐसा बताते है कि उनके स्वप्न में अधिष्ठाता देव ने आकर मंदिर बनाने के लिये कहा इसी आधार पर मंदिर बनाया। सुराणा के पूर्वज एवं इस मंदिर के कर्णधार शाह नाथ जी के पगलिया आलिए में स्थापित है।

निज मंदिर में प्रवेश करते समय बाईं ओर एक आलिए में भोमिया जी महाराज की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इसके पास ही पूर्वी दीवार में पश्चिमोमुखी श्री गौतम स्वामी की प्रतिमा 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :— ''उदयपुर वि.सं. 2056 ज्येष्ठ सुदि 13 शनिवार श्री गौतम स्वामी प्रतिष्ठितं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभिः सोहनलाल पुत्र स्व. मोतीलाल जी चन्द्रबाई सुराणा ध. प. चेनकुवर सुराणा''

पश्चिमी दीवार में एक आलिए में पूर्वमुखी मणिभद्र जी की प्रतिमा 17'' ऊँची है। यह प्रतिमा सिंघवी परिवार व चेलावत परिवार ने भरायी। सभा मंडप के बाहर पूर्व दिशा की तरफ एक लम्बा हाल है, जिसमें सम्मेद शिखर जी का बड़ा चित्र है।

भूतल पर प्रवेश करते समय एक कमरा है, जिसमें से ऊपर मंदिर में जाया जाता है। इसमें सम्मेदशिखर जी व शत्रुन्जय तीर्थ के पट्ट लगे हुए है।

इस मंदिर की देख—रेख श्री जैन श्वेता. महासभा द्वारा की जाती है।

जीर्णोद्धार कार्य सम्पूर्ण हुआ और पुनः प्रतिष्ठा दिनांक 26.6.99 को सम्पन्न हुई।

❑❑❑

श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर
मालदास स्ट्रीट, उदयपुर

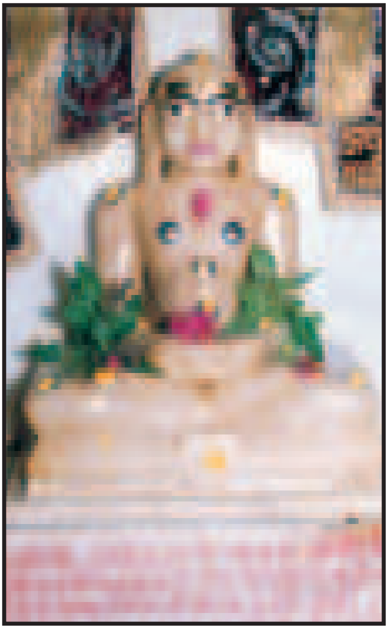

अजितनाथ जी का मंदिर के संबंध में जानकारी देने के पूर्व मंदिर परिसर से जुड़ी धर्मशाला के बारे में जानना आवश्यक होगा।

कहा जाता है कि वि.सं. 1884 में श्री जीत विजय जी महाराज के चातुर्मास के समय प्रवचन (व्याख्यान) देने का स्थान छोटा होने से जमीन खरीदने के बारे में विचार किया गया। इसी वर्ष शाह शोभचन्द्र जी पांचोली (पोरवाल) की धर्मपत्नी श्रीमती चेना बाई ने कार्तिक शुक्ला 5 को 50/– रुपये में इसी परिसर का एक भूखण्ड खरीदा तथा नोहरे की जमीन को भी श्री अमरजी भतीजा श्री भेरूदास जी श्रीमाल ने 20/– में सं. 1884 के माह वदि 6 को खरीदा व समाज को सुपुर्द की। इसके बाद सं. 1900 में पास की जमीन सिंघवी प्रेमचन्द्र श्री केवलदास ने भेंट की। उपर्युक्त धर्मशाला की जमीन पर सं. 1903 में एक मंदिर बनवाने का विचार हुआ और सं. 1904 में मंदिर बन कर तैयार हुआ, जिसमें अजितनाथ भगवान की प्रतिमा की फाल्गुन सुदि 1 को प्रतिष्ठा करायी।

इस धर्मशाला व मंदिर को बनवाने के आर्थिक सहयोग श्रीमती चाँदबाई (छा. बाई) ने दिया गया। इसलिए इस धर्मशाला को कई समय तक छाबाई की धर्मशाला कहा जाता था। श्रीमती चांद बाई के पति स्व. श्री बदनमल जी महता एक उच्च कोटी के व्यवसायी थे। उनका व्यवसाय देश–विदेश में चलता था, उस समय राजपूताने में धनिक व्यक्तियों की सूची में उनका नाम था।

इस मंदिर को भिन्न–भिन्न समय में भिन्न–भिन्न व्यक्ति देख–रेख करते रहे, लेकिन वर्तमान में जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक श्री संघ द्वारा व्यवस्था की जा रही है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. मूलनायक श्री अजितनाथ भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। मूल नायक के पवासन पर लेख इस प्रकार है :– ''सं. 1903 ना वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ 5 चन्द्रवासरे श्री राघवपुर वास्तव्य श्रीमाल गौत्रे जाती बृहद् शाखायां पारख

विथ तत्पुत्र गोधरा तस्य पुत्र वरसी तद्पुत्र मूलरासिंत तत्पुत्र कोला तत्पुत्र विजय देवेन्द्र सूरी आदेशात।

श्री अजित नाथ भगवान के नीचे की ओर वेदी पर यह लेख है – ''ऐ. नम'' विश्वेश्वरं मंजिल मन्मथ भूपमांन देव क्षमातिशयसंर्षत भूपमावसी योगीराज अजित जिन शत्रुन्जानं प्रीत्यास्क वीभियम कैर्णित शत्रुयदा 11 सं. 1904 वर्षे शाके 1779 प्र. फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा तिथौ चन्द्रे उत्तरा भाद्र पद में श्री उदयपुर नगरे श्री महाराणा जी श्री सरूपसिंह जी राज्यं श्री मज्जिनालये श्री अजितनाथ जिन बिंब समस्त संघेन कारापितं श्री मद् बृहत्त पागच्छे भ. श्री विजय जिनेन्द आदेशात् उपदेशात् प्रतिष्ठितं श्रीमद् महुमान सिंघ दामचरण कमल से विघा जयवन्त सागरेण संवेगी श्री विजयोंपदेशाद् वृद्ध शा. भूसा सा. सारतेराम तत्पुत्र ––''

2. मूलनायक के दाहिनी ओर शांतिनाथ भगवान की 13'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– सं. 1903 वर्षे माघ वदी 5 शुक्रे उदयपुर नगरे वास्तव्य श्री श्री निषदे संघे शांतिनाथ बिंब''

मूलनायक के बाईं ओर :–

3. श्री आदेश्वर भगवान की प्रतिमा 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। लेख अस्पष्ट है तथा पवासन पर उत्कीर्ण है। ''सं.1272 वर्षे वैशाख सुदी 3 विशाखा जातीय वास्तव्य मरूताने ताइना आमरा साघकेन भार्या––––––––––''

4. मूलनायक के बाईं ओर आदिनाथ भगवान की प्रतिमा के पास श्री शांतिनाथ भगवान की 17'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख अस्पष्ट है।

5. मूलनायक के दाहिनी ओर शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा के पास ही वेदी के कुछ नीचे श्वेत पाषाण की आदेश्वर भगवान की 17'' ऊँची प्रतिमा है। लेख अस्पष्ट है।

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :–

1. चौबीसी प्रतिमा, जिसकी ऊँचाई 12'' है। लेख बिल्कुल घिस गया है।
2. धातु का वर्गाकार सिद्ध चक्र यंत्र, जिसका आकार 5'' है। कोई लेख नहीं है।
3. अष्ट मंगल यंत्र, जिसका आकार 5'' x 3'' है।
4. पंच तीर्थी धर्मनाथ भगवान की प्रतिमा 7'' ऊँची है। लेख इस प्रकार है :– ''सं. 1542 वर्षे फाल्गुन वद 2 दिने ज्ञानपुर महादुर्गे प्रागवाट जातीय सा. पोपा भा. पोमा दे पुत्र सा जैसा केन भा. जोरावर दे भातृ लखादि कुटुम्बेन स्व. श्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ बिंब का. प्र. तपा. श्री सोमसुन्दर सूरि सन्ताने विजयान श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः श्रेयर्श''
5. धातु की पंच तीर्थी वासुपूज्य भगवान की प्रतिमा 7'' ऊँची हैं, जिस पर लेख है :– ''संवत् 1518 वर्षे ज्येष्ठ सुदी 3 शनोः श्री श्रीमाली जातीय वली. श्रे. कालू भा. किन्हण

दे कल्याण दे सुत श्री उदयसिंह भार्या रजोई पुत्र समघंर सालिये युतेन स्वमातु श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंब कारितं प्रति. श्री बृहद तपागच्छ श्री उदयवल्लभ सूरिभि।''

6. श्री सुमतिनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 6'' ऊँची है। इस पर लेख है : ''सं. 1501 माघ वदि 5 गुरौ प्रागवाट सां. घणसी भा. प्रीमतादे सुत लाखण देतेन ध (?) खीमाकेन निज श्रेयासे श्री सुंमति बिंब कारितं प्र. तपा. श्री मुनिसुन्दर सूरिभि''

7. श्री वासुपूज्य स्वामी की पंच तीर्थी प्रतिमा 6.5'' ऊँची है। लेख इस प्रकार है :– ''सं. 1518 वर्षे माघ सुदि 10 सो. उपकेश जातीय आयबनाग (?) गौत्रे सा. देवदत्त पुत्र सहजा भार्या वालहदी पुत्र साहण सहस्य भा. सीतादे– पु. श्री वासुपूज्य बिंब उपकेश कूकडा. प्र. श्री कणक्क सूरिभिः''

8. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र जिसका व्यास 5'' है। कोई लेख नहीं है।

9. सिद्ध चक्र यंत्र जिसका व्यास 5'' है। जिस पर लेख है ''सं. 2029 वैशाख सुदि 4 राजस्थान प्रान्ते श्री मण्डार नगरे श्री नवपद यंत्रं कारापितं तपा. गच्छे आचार्य श्री सुरेन्द्र सूरि पट्टे मुनि विमल विजय जी सां संभाजी तत्पुत्र लालचन्द का.प्र.''

10. तांबे का सिद्ध चक्र (नवपद) यंत्र 6'' व्यास का है।

11. श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा (जिस पर हिरण का लांछन स्पष्ट है।) 5'' ऊँची है। इसके नीचे लेख है :– ''सं. 2029 वै. शु. 4 बुध श्री सुरेन्द्र सूरीश्वर जी नम. जिन मूर्ति तपा गच्छ आचार्य श्रीमद् विमल विजयजी सदुपदेश थी संभाजी तत्पुत्र लालचन्द्र''

12. श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 4'' ऊँची है। लेख अस्पष्ट है।

13. श्री मुनिसुव्रत स्वामी की पंच धातु की प्रतिमा 4'' ऊँची है। लेख है :– ''श्री ——————मुनिसुव्रत स्वामी''

14. श्री वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा 4'' ऊँची है। ''लेख है :– ''1683 ——————शुक्रवार वासूपुज्य का. प्र. श्री विजयदेव सूरिभिः।''

15. श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा 4'' ऊँची है।

16. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 1'' ऊँची है।

17. जिनेश्वर बिंब काँच का है। जिसकी लंबाई 1'' है।

निज मंदिर के दक्षिणी दीवार के एक आलिए में पंच धातु की उत्थापित निम्न प्रतिमाएँ है :–

1. श्री अभिनन्दन स्वामी की प्रतिमा 3'' ऊँची है।

2. आदिनाथ भगवान की प्रतिमा 3'' ऊँची है। लेख है :– ''सं. 1603 वैशाख सुदी– श्री आदिनाथ बिंब कारितं''

3–9. श्री सम्भवनाथ स्वामी, पद्म प्रभुजी, शान्ति नाथ स्वामी, मुनिसुव्रत स्वामी अभिनन्दन स्वामी, मुनिसुव्रत स्वामी, अजितनाथ स्वामी की प्रतिमा (प्रत्येक प्रतिमा) 3'' ऊँची है।

10. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 2'' ऊँची है।

दक्षिणी दीवार में ही दूसरे आलिए में अम्बिकादेवी की 21'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''सं. 1906 शाके 1771 ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे 13 भट्टारक श्री विजय देवेन्द्र सूरि श्री संघ कारापितं प्रतिष्ठितं च''

इसके पास नीचे (इसी आलिए में) पंचधातु की देवी की उत्थापित प्रतिमा 3'' ऊँची है। आलिए के ऊपर अजितबाला यक्षिणी लिखा हुआ है।

इसके पास ही एक अन्य आलिए में श्वेत पाषाण का सिद्धचक्र यंत्र स्थापित है। इस पर लेख है :– ''स्वस्ति श्री संवत् 1909 शाके 1774 प्रवर्तमाने आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तिथों 3 रविवासरे भट्टारक जी श्री 5 श्री विजयदेवेन्द्र सूरीश्वरजी विजये राज्ये भेदवीपुर वास्तव्य अशवंशे मेहता गौत्रे सेठजी सुरतराम जी तत्पुत्र सा. बदनमल जी तत्भार्या छाह कुंवर ————————श्री सिंद्ध चक्र पट्ट कारापितं श्री उदयपुर नगरें श्री सरूपसिंह जी राज्ये प्र. ज्ञान कुशलशा प्रतिष्ठितं श्री वृद्ध तपागच्छे पू. श्री विजय जी उपदेशात्''

निज मंदिर में ही उत्तरी दीवार पर (प्रवेश करते समय बाईं ओर) आलिए में :–

1. आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा स्थापित है। इस पर कोई लेख नहीं है। इसी आलिए में धातु की प्रतिमाएँ है, जिनका वर्णन उपर दिया जा चुका है।
2. इसके आगे के आलिए में स्थापित महायक्ष की प्रतिमा श्वेत पाषाण की (चतुर्मुखी) है। इस पर कोई लेख नहीं है।
3. इसके आगे के आलिए में पार्श्वनाथ भगवान की 21'' ऊँची श्याम पाषाण की उत्थापित प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :–

''श्री रणकपुर तीर्थ समीप सादड़ी नगरे वी. 2485 वि. 2015 माघ शु 10 बुधै वास्तव्य उदयपुर निवासी पोरवाड़ जातीय मानावत संगवी श्री अर्जुनलाल जी पुत्र फतहलाल जी ने उपधान कराया मास क्षमण तप किया। उस समय संघ श्रेयोर्थ श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ जिन बिंब कारितं प्रतिष्ठा पंजाब केसरी युगवीर जैनाचार्य विजय वल्लभ सूरीश्वर पट्टधर श्री विजय समुद्रसूरि सिद्ध————————''

मूलनायक की वेदी पर उत्थापित प्रतिमाएँ व उत्तरी दीवार के प्रथम आलिए की धातु की प्रतिमाओं का और दस प्रतिमाओं का उल्लेख दक्षिणी दीवार के एक आलिए में है, इनका उल्लेख ऊपर दिया गया है।

निज मंदिर के बाहर निकलते समय दाहिनी और के एक आलिए में :–

1. चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''वि.सं. 1907 वर्षे शाके 1772'' (आगे अस्पष्ट है)

2. बाईं ओर के आलिए में चरण पादुकाएँ श्वेत पाषाण की हैं। इस पर लेख इस प्रकार है :–

''उदयपुर नगरे ————————

———समस्त संघेन श्री हर्ष विजय जी चरण पादुका गुरुजी श्रीमद् विजय नेमिसूरिभि चरण पादुका इसी आलिए में ऐरावत हाथी पर मणिभद्र जी का चित्र बना है।''

दीवार पर शत्रुन्जय तीर्थ, राजगृही तीर्थ (पाँच पहाड़) श्री सम्मेत शिखर जी तीर्थ, नागेश्वर तीर्थ व शंखेश्वरजी तीर्थ के पट्ट लगे हुए हैं। निज मंदिर के बाहर सभा मंडप है, निम्न शिलालेख लिखे हुए है :–

''स्वस्ति श्री राजस्थान प्रान्ते उदयपुर नगरे मालदास सहरी मध्ये 1942 वर्षे प्राचीन श्री अजितनाथ भगवान गृह जिन मंदिरस्य अपं. प्रथम जीर्णेद्धार श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक श्री संघेन परमपूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री रामसूरी चरणा शिष्य रत्नानां अजितनाथ जी धर्मशालायां चातुर्मास कारित स्थितानां परमपूज्य आचार्य भगवन्त श्री विजय अभय देव सूरीश्वराणां प्रेरणया कारापित तथा च नूतन घूमट निर्माण करापिते आसीत प्रासाद देवी अजितनाथ भगवान शासनाधिष्ठायक महायक्ष यक्षिणी अजितबाला, चक्रेश्वरी देवी गुरु पादुकाय शकलशा ध्वजदण्ड वी. संवत् 2519 वि.सं. 2049 नये वर्षे कार्तिक शुक्ला एकादश्यां शुक्रवासरे शुभवेलाया प्रतिष्ठिताः आचार्य श्री अभयदेव सूरिभि शुभं भवतु संघस्य आलेखि मुनि रत्नचन्द्र विजय मोक्षरत्न विजयाभ्यां''

प्रतिष्ठा कराने वाले का लाभ लेने वाले भाग्यशाली प्रतिष्ठा दिन सं. 2049 कार्तिक सुद 11 शुक्रवार ता. 6.11.1992 ध्वजादण्ड कलश एवं श्री अजितबाला देवी की स्व. सेठ श्रीमान—————————— तन सुखलाल जी बापना की स्मृति में सुपुत्र श्री शंकरलाल जी धर्मपत्नी श्रीमती झंकार बाई पौत्र श्री जसवन्तसिंह जी प्रतापसिंह जी सुरेशकुमार जी निर्मलकुमार बापना परिवार निवासी उदयपुर''

2. श्री चक्रेश्वरी देवी की ——————— ''श्री कमलसिंह जी धर्मपत्नी कला सुपुत्र विशाल गलुण्डिया श्रीमती निर्भयकुमारी आशीष कुमार जैन श्री गुरु पादुका की —— स्व. श्रीमती अम्बाबाई धर्मपत्नी स्व. श्री मगनलाल जी स्मृति में सुपुत्र मनोहरसिंह जी प्रकाश चन्द्र जी पौत्र नितेश जी सिंघट वाडिया परिवार''

विशेष टिप्पणी :

मंदिर का प्रथम जीर्णोद्धार सं. 2049 को आचार्य श्री अभयसागर जी महाराज की निश्रा में हुआ।

❑❑❑

श्री ऋषभानन स्वामी का मंदिर, मोती चौहट्टा, उदयपुर

यह मंदिर घंटाघर से हाथीपोल जाने वाली मुख्य सड़क के दाहिनी ओर स्थित है। उदयपुर में बीस विहरमान के सातवें तीर्थंकर ऋषभानन स्वामी का यह प्रथम मंदिर है।

यह 150 वर्ष पुराना दो मंजिला शिखरबंद मंदिर है। पूर्व में गुम्बजबंद मंदिर था उसको तोड़ कर नूतन जिनालय बनाया गया।

यह मंदिर श्रीमाल सेठ समुदाय द्वारा पुनः बनाया गया है। इसके लिये इसको सेठों का मंदिर भी कहा जाता है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री ऋषभानन स्वामी की 17'' ऊँची प्रतिमा (मूलनायक) श्वेत पाषाण की है। इस पर यह लेख है।

''संवत 1903 वर्षे शाके 1769 प्रवर्तमाने माघ मासे कृष्ण पक्षे 5 भृर्गो उसवाल जातिय अहमदाबाद वास्तव्य निहालचन्द्र तत्पुत्र साबुलाल तत्पुत्र रामचन्द्र'' (शेष भाग सीमेंट में दब गया है।)

2. श्री सम्भवनाथ स्वामी (मूलनायक के दाहिनी ओर) की प्रतिमा 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''संवत् 1903 वर्षे शाके 1769 प्रवर्तमाने माघ .... पुत्र ...... पवासला बाई कृष्णाबाई (?)''

(शेष घिस गया है या सीमेंट में दब गया है)

3. श्री सुमति नाथ भगवान (मूलनायक के बाईं ओर) की प्रतिमा 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1903 माघ विद 5 उसवाल जातिय वृ.शा. पवासलाबाई माणक

.....श्रेयोर्थ श्री सुमति बिंब कारापितं प्रतिष्ठतम्........सागर सूरि (शेष घिस गया है या सीमेंट में दब गया है।

4. विमलनाथ भगवान (निज मंदिर में प्रवेश करते समय बाएँ आलिए में) की प्रतिमा श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची है। इस पर लेख है :– ''(संवत् 1896 शाके 1758 (?) वष माघ

श्र.क. 10 बुधै राजनगरें श्री गगन .....श्री डायालाल चसुभाई ना भार्या वीना प्रासन्न श्री विमलनाथ जिन बिंब च ....'' (शेष अस्पष्ट है।)

5. श्री मुनिसुव्रत स्वामी (निज मंदिर में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर एक आलिए में) की प्रतिमा 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

संवत् 1903 वर्षे शाके 1769 प्रवर्तमाने माघ मासे कृष्ण पांचम भृगवासरें श्री अहमदाबाद वास्तव्यं उसवाल जातीय वृद्ध शाखायां श्री निहालचन्द्र तत्पुत्र साबुलाल च. तत्पुत्र श्री रामचन्द्र व पुत्र समदोला भाई (?) तत्पुत्र सावलचन्द्र तद् भार्या मेता कुंवर स्व. ......श्रेयोर्थ श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिन बिंब......

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :–

1. आदिनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 6'' ऊँची है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1553 वर्षे आषाढ़ सुदि बीज रवि. उसवाल जातीय विनपासा भार्या जीवणी तत्पुत्र रहिया जायरे हरसूल रहिये केन मातृे पितृे शियोत ......श्री (मातृ पितृ श्रेयोर्थ) श्री आदिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री अघोतनाचार्य सन्तानै श्री हर्ष गच्छे श्री सिंघदत्त सूरि प्रतिष्ठितं''

2. सिद्ध चक्र यंत्र 5'' वर्गाकार है। इस पर यह लेख है :– ''संवत् 1789 वर्षे कार्तिक सुदि 5 शुक्रवासरे उसवाल जातीय सा. जपा भार्या श्री धनकू श्री अरिनाथ री सिद्धचक्र पीठ कारितम् श्री रस्तु''

3. पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा (मस्तक पर सर्प का छत्र) है। इस पर लेख है :– ''अंतरिक्ष पार्श्वनाथ''

4. अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 6'' x 4'' है। कोई लेख नहीं है।

5–8. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा क्रमशः 3'',2'', 2'', 2'' ऊँची है। (मस्तक पर सर्प का छत्र है) इन पर कोई लेख नहीं है तथा सीमेंट से स्थापित है।

9. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 5'' व्यास का है। यह चांदी के पतरे का है। कोई लेख नहीं है।

10. अजितनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर लेख है :– ''वि.सं. 2041 मिगसिर शुक्ला 3 विरात 75 तमें रमें जज्यों अजितनाथ जिन बिंब करापितं पट्टे क्रियोध्यारक अचलगच्छे पूज्य आचार्य गौतम सागर सूरि पट्टधर शासन सम्राट अचल गच्छाधिपति पू.आ. गुण सागर सूरि प्रतिष्ठितं श्री सम्मेत शिखर जी महातीर्थ अचलगच्छ धर्मशाला मा. समोसरण बीस जिनालय तिर्थो प्रतिष्ठा च पूज्य सा. श्री हेमलता श्री गच्छीय पू. सा रत्नरेखा श्री तत् शिष्या पू. सा. प्रिय दर्शना श्री गच्छीय शिष्या पू. सा. श्री गुण दर्शना श्री मास क्षमण निमित्त कच्छ प्रांते वास्तव्य स्व.

नेणसी पू. श्री रविमति पुत्र ....पुतसी श्रय निवारण भरापितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन। किनारे पर लेख है :–

''अचलगच्छे आचार्य जयसिंघं महेन्द्र मेस कुंभ धर्ममूर्ति कल्पना नीति गुण सागर सूरि नमः।''

1. निज मंदिर में प्रवेश करते समय बाईं ओर एक आलिए में श्री जीरावला पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा 11'' ऊँची है। इसके नीचे लेख है :– ''श्री अचल गच्छीय गणि महोदय सागरेण स्व. मगनलाल अम्बालाल पुत्र मनोहर सिंह प्रकाश पौत्र नितेश सिंघटवाड़िया।''

2. प्रवेश करते समय दाहिनी ओर एक आलिए में नाकोड़ा पार्श्वनाथ भगवान की 11'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''अचलगच्छीय गणि श्री महोदय सागरेण बाबेव माता–पिता मनोहरलाल भूरीलाल जी सेठ पुत्र सुरेश महावीर पोत्र कैलाश'' (उक्त दोनों प्रतिमाओं के लेख पीछे की ओर छिपा होने से पढ़ा नहीं जा सकता है।

''मंदिर के सभा मंडप में (प्रवेश करते समय दाएँ) एक आलिए में एक देवी की 9'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है। इसी आलिए में धातु की एक देवी मूर्ति 3'' ऊँची है।''

इसी प्रकार प्रवेश करते समय बाईं ओर एक ही आलिए में दो प्रतिमाएँ है :–

1. पार्श्व यक्ष की प्रतिमा 11'' ऊँची श्याम पाषाण की है। कोई लेख नहीं है।

2. देवी मूर्ति 15'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इस पर लेख ''सतारमाता''

''इसी सभा मंडप में दक्षिणी दीवार पर प्रतिष्ठा प्रशस्ति पट्ट लगा है, जिसमें विस्तृत विवरण दिया है मुख्य साराश यह है : युग प्रधान पूज्य दादा श्री कल्याण सागर जी को युग प्रधान की पदवी (सं. 1672) एवं उनके पट्टधर अचलगच्छ पं. पू.आ. श्री अमरसागर सूरीश्वर जी के जन्म स्थली उदयपुर नगर में इसी स्थल में श्री श्रीमाल सेठ अचलगच्छ जैन श्वेता, मूर्ति पूजक संघ द्वारा निर्मित जिनालय में सप्तम विहरमान जिन एवं शास्वत जिन ऋषभानन स्वामी की प्रतिष्ठा संवत् 1904 आ. श्री मुक्ति सागर सूरीश्वर द्वारा हुई। पुनः प्रतिष्ठा नूतन जिनालय में संवत 2060 जैठ सुद 6 दिनांक 5.6.03 को सम्पन्न हुई।''

उत्तर पूर्व की ओर एक नव निर्मित जिनालय है, जिसमें निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. श्री नाकोड़ा भैरव जी की 19'' ऊँची प्रतिमा पीत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''श्री गुण सागर सूरि शिष्येण गणि महोदय सागरेण भरापिताच श्री वीरेन्द्र कुमार सुरेन्द्र कुमार हार्दिक अग्रवाल अग्रवाल आयरन एण्ड बिल्डर्स फतहपुरा, उदयपुर।''

2. क्षेम करी देवी की 21'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''श्री श्रीमाल सेठ समाज गौत्र देवी चामुण्डा (क्षेमकरी / शंरवेश्वरी) देवी मूर्ति प्रतिष्ठितं अचलगच्छाधिपति पूज्य आ. सी. गुण सागर सूरि शिष्येण गणि महोदय सागरेण भरापिताच स्व. पुत्र प्रतीक कुमार के पुन्यार्थ नानी सोहन बाई धार निवासी मातामहि सोहनबाई धर्मपत्नी स्व. मांगीलाल जी एवमं अशोक कुमार आनन्द बेन भ्राता प्रशान्त कुमार सेठ उदयपुर''

3. श्री सरस्वती देवी की 21'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर यह लेख है :– ''श्री सरस्वती देवी मूर्ति प्रतिष्ठाता अचलगच्छाधिपति पू.आ. श्री गुण सयागर सूरि शिष्येण गणि महोदय सागरेण करापितांच चंचल बेन जगसी भाई जैब भाई छेड़ा (कच्छलायजा) निवासी छेड़ा परिवारेण''

4. श्री महा कालीदेवी की 21'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण है। इस पर लेख है :– श्री महाकाली देवी मूर्ति प्रतिष्ठाता अचलगच्छाधिपति पू. आ. गुणसागर सूरि शिष्य गणि महोदय सागरेण श्री माणक जी केशव जी मोता कच्छ रामगढ श्री जयन्त भाई, भवाना जी सोनी (कच्छसूतरी) श्रीमती कल्पना बेन श्यामजी नरसि दण्ड कच्छ सांघन वि.सं. 2059 जैठ सुद 5 बुधवार।''

5. महालक्ष्मी देवी की 21'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर यह लेख है :–

''श्री महालक्ष्मी देवी मूर्ति प्रतिष्ठाता अचलगच्छधिपति प.आ. गुण सागर सूरि शिष्य गणि महोदय सागरेण अ.सो. चन्द्र प्रभा बेन वल्लभ जी गढ़ सेरड़ी सागली पुत्र जिसोनेश सचिन पुत्रवधु अंजु – नम्रता पौत्र मुकुल अंकित पुत्री मनीषा– दीपक सपरिवारेण वि.सं. 2059 जैठ सुद 5''

6. चक्रेश्वरी देवी की 21'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''श्री चक्रेश्वरी देवी मूर्ति प्रतिष्ठाता अचलगच्छाधिपति पू. आ. गुण सागर सूरि शिष्य गणि महोदय सागरेण भातुश्री चाम्पुबाई नागजी देव्या डोडिया हस्ते पुत्र बधू मंजुला बेन वल्लभ जी कच्छ गढ शिल सपरिवारेण।''

7. पद्मावती देवी की 21'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''श्री पद्मावती देवी मूर्ति प्रतिष्ठाता अचलगच्छाधिपति पू.आ. गुणसागर सूरि शिष्य गणि महोदय सागरेण मातु श्री गोमी बाई गणसि जगाजी कच्छ मायर परिवारेण एवं श्री चुन्नीलाल भाई बेलजी गढाकच्छ रायण परिवारेण''

गुरु मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. आचार्य गुंण सागर जी की 22'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''शासन सम्राट राष्ट्र सन्त अचलकेसरी अचलगच्छेश पू.आ. गुण सागर सूरि मूर्ति प्रतिष्ठाता गणि महोदय सागरेण श्री मातु श्री पानी बाई ध.पं. सोहनलाल जी सेठ पुत्र

लक्ष्मीलाल (उदयपुर)।''

2. श्री कल्याणसागर सूरि की 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''अचलगच्छाधिराज यु. प्रधान पूज्य दादा श्री कल्याण सागर सूरिभिः मूर्तिः प्रतिष्ठाता पू. आ. गुण सागर सूरि शिष्य महोदय सागरेण श्रीमती सम्पत देवी शांतिलाल जी सेठ (उदयपुर)।''

3. श्री गौतम स्वामी की 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''श्री गोतम स्वामी बिंब प्रतिष्ठाता पू.आ. गुणसागर सूरि शिष्य गणि श्री महोदय सागरेण बाबूभाई लक्ष्मसि शा. कच्छभुजपुर उदयपुर नगरे ऋषभानन जिनालये।''

4. श्री आर्य रक्षित सागर सूरि की 22'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''श्री विधिवय अचलगच्छ प्रवर्तक मूलदादा श्री आर्य रक्षित सूरि मूर्ति प्रतिष्ठाता गणिवर्य श्री महोदय सागर सागरेण श्री अभयराज रविन्द्र कुमार जी सेठिया (अंखलेश्वर)

5. श्री गौतम सागर सूरि की 22'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''श्री कच्छ हालार देशोद्धारक अचलगच्छेश पू. दादा श्री गौतम सागर सूरि मूर्तिः प्रतिष्ठाता गणिवर्य श्री महोदय सागरेण श्री दीवानसिंहजी, महेन्द्रसिंह जी, सम्पतकुमार जी बोहतलाल जी बापना, उदयपुर चरण।''

12'' वर्गाकार पादुकाएँ श्वेत पाषाण की है। चरण पादुकाएँ निम्न है :–

1. आर्य रक्षित सूरि, 2. गौतमसागर सूरि, 3. कल्याण सागर सूरि, 4. गुण सागर सूरि

इनके किनारे पर लेख है :–

''श्री शिखर जी शत्रुन्जय छरिपालित संघ प्रतिष्ठित कच्छलायजा वास्तव्य मातुश्री स्व. कुंवरबाई केशवजी पदमसि सपरिवारेण वि.सं. 2041 मिगसिर शुद 3''

प्रतिष्ठा – ''श्री चुन्नीलाल वेलजी रायण (नाला मोयणा)''

प्रथम मंजिल के मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक) 15'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है यह अवश्य है कि प्रतिमा के दोनों पार्श्व की तरफ कुछ उत्कीर्ण किए शब्द है, लेकिन सीमेंट में दब गए है।

2. पार्श्वनाथ भगवान की धातु की 19'' ऊँची प्रतिमा (मूलनायक के दाहिनी ओर) है। इस पर लेख है :– ''श्री पार्श्वनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठतं अचलगच्छेश गुण सागर सूरि शिष्य गणिवर्य महोदय सागरेण मुण्डारा राजस्थान निवासी श्रीमती ताराबेन भंवरलाल जी पुत्र नरेश विक्रम पुत्रवधू नीरू – पूजा पुत्री स्वं. जशोदा मदनबाला रणजीतजी पौत्र अंकित ऋषभ उर्वी श्रेया दोहित्र वीरल साहिल मुखीबाई केसरीमल जी कासमगोता सोलंकी परिवारेण''

3. महावीर भगवान (मूलनायक के बाईं ओर) की धातु की प्रतिमा 17'' ऊँची है। इस पर लेख है :– ''श्री महावीर स्वामी जिन बिंब प्रतिष्ठतं अच्चलगच्छेश गुणसागर सूरि शिष्य गणिवर्य महोदय सागरेण स्व. श्री मनोहरसिंह कोठारी ध.पं. कृष्णा बाई पुत्र शान्तिलाल प्रतापसिंह लोकेन्द्र कुमार राजकुमार कोठारी परिवारेण उदयपुर।''

4. प्रवेश के समय दाहिनी ओर एक आलिए में श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :– ''श्री शांतिनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठत अच्छलगच्छेश गुण सागर सूरि शिष्य गणिवर्य महोदय सागरेण श्री विजयसिंह सिंघवी पुन्यार्थ हस्ते धर्म पत्नी श्री जतनबाई जी संघवी पुत्र शांन्तिलाल सुनील, परिवारेण– उदयपुर''

5. प्रवेश के समय बाईं ओर एक आलिए में श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :– श्री आदिनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठतं अचलगच्छेश गुणसागर सूरि शिष्य गणिवर्य महोदय सागरेण श्री रतन बेन रामजी शिवजी सगोई कच्छ समागोता परिवारेण''

इस मंदिर की देख–रेख श्री श्रीमाल सेठ अचलगच्छ जैन श्वेताम्बर श्री संघ, मोती चोहट्टा उदयपुर द्वारा की जाती है। प्रमुख कार्यकर्ता व सचिव श्री अशोक कुमार सेठ है।

यहाँ पर उपाश्रय बना हुआ है और यात्रीगणों के लिये ठहरने का साधन उपलब्ध है। (सर्व संग्रह जैन तीर्थ नामक पुस्तक के अनुसार यह मंदिर सं. 1954 का निर्मित है।)

❑❑❑

श्री चन्द्र प्रभु जी का मंदिर, गणेशघाटी, उदयपुर

यह मंदिर बड़ा बाजार–घंटाघर से गणेशघाटी से चित्तौड़ों का टिम्बा मार्ग पर बाईं ओर घूमटी वाली हवेली के पीछे के दरवाजे के ठीक सामने स्थित है। मंदिर में कोई शिलालेख नहीं है और न ही प्रतिमा पर कोई समय उत्कीर्ण है, जिससे मंदिर का निर्माण काल व किसके द्वारा बनाया गया है, स्पष्ट नहीं होता।

जानकारी करने पर यह ज्ञात हुआ कि यह मंदिर सेठों का मंदिर व उपाश्रय भी सेठ समुदाय (अचलगच्छ) का बताया जाता है। मंदिर के दरवाजे पुरातन से संबंधित है। इसलिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह मंदिर करीब 300 वर्ष पुराना है। इसके पास ही एक जैन श्वेताम्बर आदेश्वर भगवान के मंदिर में स्थापित प्रतिमा पर उत्कीर्ण सं. 1743 लिखा हुआ है। ये दोनों मंदिर एक ही यति श्री सूरजमल जी के हस्ते थे। अतः यह मंदिर 300 वर्ष पुराना है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री चन्द्र प्रभ (मूलनायक) भगवान की 25′′ ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख बहुत ही अस्पष्ट है और ′′उद्योत सूरिभि′′ पढ़ा जा सकता हैं।
2. मूलनायक के बाईं तरफ श्री शांतिनाथ भगवान की 9′′ ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन हिरण दिखाई देता है। इस पर लेख अस्पष्ट है केवल ′′सुराणा′′ पढ़ने में आता है।
3. मूलनायक के दाहिनी ओर की जिनेश्वर भगवान की 10′′ ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस प्रतिमा पर कोई लेख नहीं है, जो कुछ अक्षर हैं। वे पढ़े नहीं जा सकते।
4. मूलनायक के बाएँ शांतिनाथ भगवान के पास जिनेश्वर की एक 4′′ ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है।
5. मूलनायक जी के दाएँ जिनेश्वर भगवान के पास 3′′ ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

6. निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर एक आलिए में श्याम पाषाण की 6'' ऊँची भैरवजी की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

सभा मंडप के दाहिनी ओर एक आलिए में गुरु पादुका श्वेत पाषाण की है। वेदी का आकार 15'' x 14'' है, इस पर लेख है :– ''सं. 1926 शाके 1781 प्रवर्तमाने नासोंतम मासे.....''

सभा मंडप की पूर्व दीवार के एक आलिए में चक्रेश्वरी देवी की 8'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। वेदी अलग है। इस पर लेख है :– ''दोलतराम जी श्री चक्रेश्वरी देवी स्थापित सं. 1989 आषाढ़ सुदी 6 तिथौ ऊसवाल दोशी वृहदशाखाया दोशी श्री ....''

यह मंदिर शिखरबंद है, लेकिन परिक्रमा स्थल पर शिखर के पास दीवार बना दी गई है और पीछे मकान है।

ऐसा बताया जाता है कि यह मंदिर व इसकी सम्पति (उपाश्रय) आदि बेच दिया गया था, लेकिन श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक श्री संघ मालदास सहरी उदयपुर ने राशि (अज्ञात) देकर मंदिर को अपने अधीन लिया। वर्तमान में इस मंदिर की देख–रेख श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक श्री संघ, उदयपुर द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री ऋषभदेव जी का मंदिर, गणेश घाटी, उदयपुर

यह मंदिर बड़ा बाजार, घंटाघर से गणेशघाटी से चित्तोड़ा का टिम्बा मार्ग के बाईं ओर स्थित है।

इस मंदिर को डालचन्द जी का मंदिर भी कहते थे, क्योंकि यह यति श्री डालचन्द जी के हस्ते था।

बताया जाता है कि यह मंदिर चील महता गोवर्धनसिंह जी (मेहता व भन्साली) का मंदिर है। इस गौत्रों के सदस्यों की बैठक भी इसी मंदिर में होती थी। भन्साली परिवार के सभी सदस्यों ने धर्म परिवर्तन कर स्थानकवासी हो जाने से इस मंदिर की देख–रेख नहीं होती थी। अंत में यह मंदिर व उपाश्रय उनकी पत्नी (पासवानी) को मिला इसका वाद न्यायालय में चला और न्यायालय द्वारा भी मंदिर की सुपुदर्गी के आदेश हुए, लेकिन उसका (पासवानी) पुत्र तलवार से वार करने को आतुर था। महता परिवार को किसी का भी सहयोग नहीं मिला। आज यह मंदिर यति डालचन्द जी के पुत्र के कब्जे में है और बंद रहता है। सड़क से तीन प्रतिमाओं के दर्शन होते है, जो इस प्रकार है :–

1. मूलनायक श्री ऋषभदेव भगवान की 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''सं. 1753 वैशाख सूदी 3 श्री बृहद् श्री खरतर गच्छे प्रतिष्ठितम् युग प्रधान श्री जिनरंगसूरि .....आदेशान्''

   ''महोपाध्याय श्री ...... सूरिगुरेणां शिष्य उपाध्याय श्री .....तश्चोदय सूरिभि श्री ऋषभदेव बिंब कारितम्।''

2. मूल नायक के दाहिनी ओर श्री शांतिनाथ भगवान की 18'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है। लेख अस्पष्ट है।

3. मूलनायक के बाईं ओर श्री अजितनाथ भगवान की 25'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर कोई लेख नहीं है। उक्त प्रतिमाओं के बाहर से दर्शन होते है, इसलिए विद्यमान प्रतिमाओं का वर्णन किया है। (लेख पत्रावली के आधार पर लिखा है) इस मंदिर में निम्न प्रतिमा भी होनी चाहिये :– (पत्रावली के आधार पर)

1. मल्लिनाथ भगवान की 10'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। यह प्रतिमा बहुत प्राचीन बतलायी जाती है।

2. श्री शांतिनाथ भगवान की प्राचीन 10'' ऊँची पीत पाषाण की है। इसी प्रकार उक्त प्रतिमाओं के अतिरिक्त

3. पंचधातु की पंचतीर्थी प्रतिमा

4. सप्त धातु की ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा

5. हनुमान जी की 6'' ऊँची प्रतिमा।

6. शिवलिंग जिसका आकार 2.6'' x 1.6'' है।

7–9. तक श्याम पाषाण की गणेश जी की तीन प्रतिमाएँ।

10–13. चार चरण पादुकाएँ स्थापित।

14. भैरवजी हनुमान जी की प्रतिमा थीं। आज की स्थिति में मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

❑❑❑

उदयपुर नगर में स्थापित गृह मंदिर की नामावली

(1) श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर, श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (स्व बलवन्त सिंह जी बोल्या का प्राचीन मंदिर)

– गंगागली, गणेशघाटी

(2) श्री शांतिनाथ जी का मंदिर (यति स्व. श्री अनूपचन्द्र जी का उपाश्रय)

– कसारों की ओल

(3) श्री पार्श्वनाथ जी का मंदिर (स्व. छोगालाल जी सिरोहिया)

– भूपालपुरा

(4) श्री आदिनाथ जी का मंदिर (स्व. जीवनसिंह जी सिंघवी)

– भूपालपुरा

(5) श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (श्री रामसिंह जी चपलोत का गृह)

– मालदास स्ट्रीट

(6) श्री मुनिसुव्रत स्वामी का मंदिर (श्री बसन्त कुमार पुत्र मिठ्ठालाल जी मारवाड़ी)

– मालदास स्ट्रीट

(7) श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर (श्री शेषमल जी सायरा वाला)

– बेदला रोड, फतहपुरा

(8) श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर (श्रीमती लहरीबाई स्व. हस्तीमल जी जैन)

– बापना की सेहरी

(9) श्री श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर (श्री चांदसिंह जी मुरर्डिया)

– रामसिंह जी की बाड़ी, हिरण मगरी, से.–11

(10) श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (श्री जोरावरमल जी पारीवाला)

– महावीर कॉलोनी

(11) श्री श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर (श्री अभयकुमार लहरसिंह जी खाब्या)

– बाठेडा हाऊस

(12) श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (श्री बसन्तीलाल जी बोल्या) भेरूधाम कॉलोनी,

– हिरण मगरी,, से.–3

❑❑❑

जिन आगम (शास्त्र) का सूत्रपात व नामावली

जिन आगमों की रचना गणधर भगवंतों द्वारा की गयी थी और आगम का ज्ञान साधु द्वारा साधु तक श्रवण (सुनने) के माध्यम से ही परंपरा चलती रही, लेकिन समय चलते स्मरण शक्ति क्षीण होती गयी। महावीर भगवान के निर्वाण के 980 वर्ष पश्चात् श्री देवद्धिगणी क्षमा श्रमणजी के सानिध्य में वल्लभीपुर में 500 आचार्यों की एक धर्म परिषद सम्पन्न हुई और उसमें उन्होंने निर्णय किया "जो ज्ञान, जिसके मस्तिष्क में उपलब्ध है, उसको ताड़पत्र पर लिखा जाए।" इस लेखनी को लिपिबद्ध कर कर्म के आधार शास्त्रों का निर्माण हुआ और इस प्रकार 45 आगम तैयार हो गये, जो निम्न प्रकार हैं :—

(1) श्री आचारांग सूत्र
(2) श्री सूत्रकृतांग सूत्र
(3) श्री ठाणांग सूत्र
(4) श्री सूयगडांग सूत्र
(5) श्री भगवती सूत्र
(6) श्री ज्ञाताधमकथांग सूत्र
(7) श्री उपासक दशांग सूत्र
(8) श्री अंतकृद् दशांग सूत्र
(9) श्री अनुत्तरोववाइ दशांग सूत्र
(10) श्री प्रश्न व्याकरणांग सूत्र
(11) श्री विपाकांग सूत्र
(12) श्री उववाइ सूत्र
(13) श्री राजप्रश्नीय सूत्र
(14) श्री जीवाभिगम सूत्र
(15) श्री पन्नवणा सूत्र
(16) श्री सूर्य प्रज्ञप्ति सूत्र
(17) श्री जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र
(18) श्री चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र
(19) श्री निरयावलिका सूत्र
(20) श्री कल्पावतंसिका सूत्र
(21) श्री पुष्पिता सूत्र
(22) श्री पुष्प चुलिका सूत्र
(23) श्री वहनिदशा सूत्र
(24) श्री चउसरण पयन्ना
(25) श्री आउरपच्चक्खाण पयन्ना
(26) श्री महा पच्चक्खाण पयन्ना
(27) श्री भत्तपरिन्ना पयन्ना
(28) श्री तंदुल वेयालिय पयन्ना
(29) श्री गणिविज्जा पयन्ना
(30) श्री चंदाविज्जय पयन्ना
(31) श्री देवेन्द्रथुइ पयन्ना
(32) श्री मरणसमाधि पयन्ना
(33) श्री संथारा पयन्ना
(34) श्री दशाश्रुतस्कंध सूत्र
(35) श्री बृहत्कल्प सूत्र
(36) श्री व्यवहार सूत्र
(37) श्री जीतकल्प सूत्र
(38) श्री निशीथ सूत्र
(39) श्री महानिशीथ सूत्र
(40) श्री आवश्यक सूत्र

(41) श्री दसवैकालिक सूत्र

(42) श्री उत्तराध्यय सूत्र

(43) श्री पिंड निर्युलक्ति सूत्र

(44) श्री नंदि सूत्र

(45) श्री अनुयोग द्वार सूत्र

लिपिबद्ध हो जाने के बाद यह ज्ञान साधु से साधु तक सीमित था बाद में कुछ संशोधन के साथ श्रावक के लिए भी खुला किया।

इन शास्त्रों का संशोधन कर श्रावकों के श्रवण के लिये प्रस्तावित हुआ और सर्व प्रथम आनन्दपुर में कल्पसूत्र की वांचना प्रारंभ हुई। ताड़पथ पर लिखित आगमों की प्रतियाँ जैसलमेर में सुरक्षित हैं।

❑❑❑

श्वेताम्बर मूर्तिपूजक सम्प्रदाय में गच्छों की नामावली

श्री पार्श्वनाथ भगवान के शिष्य श्री रत्न प्रभसूरि का उपकेश गच्छ कहलाया। महावीर स्वामी के 11 गणधरों में से केवल एक गणधर सौ धर्मो का गच्छ रहा। यह गच्छ सौधर्म या निग्रन्थ गच्छ कहलाया।

इसके बाद भिन्न–भिन्न आचार्य के शिष्यों के नाम से बहुत शाखा चली और लुप्त हो गई। संवत् 900 के लगभग शंकर स्वामी ने राजा के बल से करोड़ों अत्याचार कराए, जिससे कोटिक गच्छ बना।

चन्द्रकुल वज्र शाखाधर के नाम चन्द्रगच्छ हुआ। चन्द्रकुल वज्र शाखा के शाखाधर आचार्य वृहदगच्छ नेमिचन्द्रसूरि के उद्योतनसूरि महा प्रभावी त्याग–वैराग्य के रूप में बिराजते थे और संवत् 1000 में एक ही आचार्य पट्टधर बाकी सब 83 शिष्य विचरण करते थे, लेकिन आज्ञा उद्योतनसूरि की ही चलती थी। उनके आदेश पर सभी शिष्य अपने–अपने ज्ञान क्रिया से अपने–अपने गच्छ प्रगट करे। इसके आधार पर 84 जिन शिष्यों में से प्रथम वर्द्धमानसूरि के शिष्य जिनेश्वर सूरि ने खरतरगच्छ बनाया।

इस प्रकार से गच्छ :–

1. निग्रन्थ गच्छ, 2. कोटिक गच्छ, 3. चन्द्रगच्छ
4. त्याग–तप के आधार पर वनवासी गच्छ
5. एक ही आचार्य विचरण करते थे। उसकी आज्ञा में शिष्य थावीर थे– वह वडगच्छ या वृहदगच्छ कहलाया।
6. ओसिया में स्थापित उपकेश गच्छ ही ओसवाल गच्छ कहलाया।
7. आचलगच्छ :– क्रिया के विभिन्नता के कारण आचलगच्छ कहलाया।

मूल रूप से प्रचलित बोल में 84 गच्छ कहा जाता है। ये 84 गच्छ निम्न है :–

1. खरतरगच्छ 2. बड़गच्छ
3. चित्रवालगच्छ का विलय–तपागच्छ व आचलगच्छ
4. उपकेष गच्छ या ओसवाल गच्छ 5. जीरावला गच्छ 6. गंगेसरा
7. केरड़िया 8. आंणपुरी 9. भरूअच्छा
10. उढ़विया 11. गुप्रउवा 12. डेका उवा
13. भीनमाला 14. मुंहडसिया 15. दाससवा
16. गच्छपाल 17. घोणपाल 18. मगडडिया

19.	ब्रहमाणिया	20.	जालोरी	21.	बोकड़िया
22.	मुजारड़ा	23.	चीतड़िया	24.	सांचोरा
25.	कुचड़िया	26.	सिद्धान्तिया	27.	मसेणिया
28.	आगम	29.	मलधार	30.	भावराजिया
31.	पल्लीवाल	32.	कोरंटवाल	33.	नाकदिक
34.	धर्मधोषा	35.	नागपुरा	36.	उस्तवाल
37.	तोपावला	38.	साण्डेवाल	39.	मंडोवरा
40.	सूराणा	41.	खंभायती	42.	बड़उदिया
43.	सोपारिया	44.	नाड़िया	45.	कोछीपुरा
46.	जांगला	47.	छापरिया	48.	बोरसड़ा
49.	दो चंदणका	50.	बेगड़ा	51.	बायड़
52.	बिजहरा	53.	कुतपुरा	54.	कोचलिया
55.	सदोलिया	56.	महुकरा	57.	कपूरसिया
58.	पूर्णतल्ल	59.	खेड्या	60.	धूंधूपा
61.	थंमडिया	62.	पंच बलदिया	63.	पालणपुरा
64.	गंधारा	65.	गवेलिया	66.	सार्द्धपुनामिया
67.	नगरकोटा	68.	हिंसारिया	69.	भटनेरा
70.	नीलहरा	71.	जगायन	72.	भामसेणा
73.	तागडाया	74.	कंत्रोना?	75.	सेवनागच्छ
76.	बाधेरा	77.	बाहडिया	78.	सिद्धपुरा
79.	घोघरा	80.	नेगमिया	81.	संजमा
82.	बरडेवाल	83.	बाड़ा	84.	नागउला

ये सब गच्छ किसी न किसी नगर आचार्य किसी क्रिया कोई शास्त्रार्थ में खरा उतरने, कोई तप की पद्वी प्राप्त होने के कारण नाम पड़े जो सभी (कुछ को छोड़कर) लुप्त हो गए, जो प्रचलित है। उनका वर्णन पृथक् से अलग अध्याय में किया गया हैं।

(महाजन वंश मुक्तावली)

(पृष्ठ संख्या 117ए 118)

❑❑❑

तीर्थंकरों के नाम मय उनके अधिष्ठाता देव-देवियों के नाम

तीर्थंकर सम्बन्धित मंत्र

क्र.सं.	नाम तीर्थंकर	अधिः देव	अधिः देवी	नाम मंत्र	फल
1.	श्री ऋषमदेव जी	गौमुख	चक्रेश्वरी	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं ऋषभदेवाय नमः।	भय दूर होता है
2.	श्री अजितनाथ जी	महायक्ष	अजिता	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं अजितनाथाय नमः।	विजय प्राप्त होती है
3.	श्री सम्भवनाथ जी	त्रिमुख	द्रुरितारी	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं सम्भवनाथाय नमः।	नयी वस्तु प्राप्त होती है
4.	श्री अभिनन्दन जी	यक्षेश	काली	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं अभिनन्दननाथाय नमः।	आनन्द की प्राप्ति होती है
5.	श्री सुमतिनाथ जी	तुंबरू	महाकाली	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं सुमतिनाथाय नमः।	बुद्धि भ्रम दूर होकर सद्‌बुद्धि प्राप्त होती है।
6.	श्री पद्मप्रभु जी	कुसुम	अच्यूता	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं पद्मप्रभवे नमः।	भाग्योदय होता है।
7.	श्री सुपार्श्वनाथ जी	मातंग	शान्ता	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं सुपार्श्वनाथाय नमः।	इच्छित सवालों का जवाब प्राप्त होता है।
8.	श्री चन्द्रप्रभु जी	विजय	ज्वाला	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं चन्द्र प्रभवे नमः।	बायें हाथ के बीच की अंगुली से स्वयं के थूक से तिलक लगाने से सभी वशीभूत होते हैं।
9.	श्री सुविधिनाथ जी	अजित	सुतारका	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं सुविधिनाथाय नमः।	सुबुद्धि प्राप्त होती है।
10.	श्री शीतलनाथ जी	ब्रह्म	अशोका	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं शीतलनाथाय नमः।	गर्मी दूर होती है।
11.	श्री श्रेयासनाथ जी	मनुजेश्वर	श्रीवस्ता	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रेयांसनाथाय नमः।	पास आने वाला वशीभूत हो जाता है।
12.	श्री वासुपूज्य जी	कुमार	प्रवरा (चण्डा)	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं वासुपूज्य प्रभवे नमः।	मंगल ग्रह की शांति होती है।
13.	श्री विमलनाथ जी	षण्मुख	विजया	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं विमलनाथाय नमः।	बुद्धि निर्मल होती है।
14.	श्री अनन्तनाथ जी	पाताल	अंकुशा	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं अनन्तनाथाय नमः।	विद्या की प्राप्ति होती है।
15.	श्री धर्मनाथ जी	किंभर	प्रसप्ति	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं धर्मनाथाय नमः।	जानवरों का उपद्रव शान्त होता है।
16.	श्री शांतिनाथ जी	गरूड	निर्वाणी	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं शांतिनाथाय नमः।	गुरु ग्रह की शांति होती है।
17.	श्री कुंथुनाथ जी	गन्धर्व	बला	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं कुंथुनाथाय नमः।	शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।
18.	श्री अरनाथ जी	यक्षेन्द्र	धरणीदेवी	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं अरनाथाय नमः।	सर्वत्र विजय प्राप्त होती है।
19.	श्री मल्लिनाथ जी	कुबेर	वैरोट्या	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं मल्लिनाथाय नमः।	चोर आदि का भय दूर होता है।
20.	श्री मुनिसुव्रत स्वामी	वरूण	दत्ता	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं मुनिसुव्रतनाथाय नमः।	शनि ग्रह की शान्ति होती है।
21.	श्री नमिनाथ जी	भ्रकुटी	गन्धारी	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिनाथाय नमः।	सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते है।
22.	श्री नेमिनाथ जी	गोमेध	अम्बिका	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं नेमिनाथाय नमः।	अकाल का नाश होता है।
23.	श्री पार्श्वनाथ जी	पार्श्वयक्ष	पद्मावती	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं पार्श्वनाथाय नमः।	इच्छित कार्य की सिद्धि होती है।
24.	श्री महावीर स्वामी	मातंक	सिद्धायिका	ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं महावीराय नमः।	धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

❑❑❑

प्रभावशाली अधिष्ठाता देवी महिमा विवरण

पद्मावती देवी :

पार्श्वनाथ भगवान के परम् सेवक घरणेन्द्र देव है। उनकी वैरोट्या व पद्मावती नाम की रानियाँ है। पार्श्व कुमार ने योगी द्वारा पंचाग्नि तप के लिये अग्निकुण्ड में जलती लकड़ी में से नाग (घरणेन्द्र) को निकाल कर सेवक द्वारा नवकार महा मंत्र सुनाया। महामंत्र को सुनते सुनते ही वह काल को प्राप्त हो गया और इन्द्र देव बना।

घरणेन्द्र उक्त रानियों के साथ रहने लगे और अपनी लोकप्रियता के कारण श्री पार्श्वनाथ भगवान के अधिष्ठाता देव व अधिष्ठाता देवी (शासन देव व देवी) बने। इनका वर्ण सुवर्ण है।

भगवान महावीर के निर्वाण के 170 वर्ष बाद अर्थात् वि.सं. 300 वर्ष पूर्व श्री भद्रबाहु स्वामी ने उवसग्ग स्तोत्र की रचना की, जिसमें (विस हर विस निन्नासं) यह स्पष्ट किया है कि घरणेन्द्र व पद्मावती की मदद से एक व्यंतर द्वारा संघ पर होने वाले उपद्रव का निवारण किया।

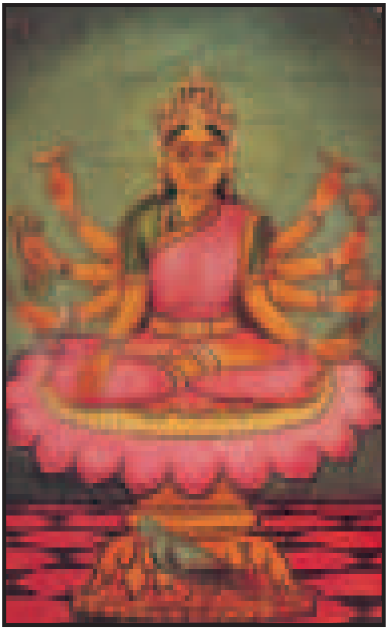

श्री चक्रेश्वरी देवी :

जैन मान्यता के अनुसार चक्रेश्वरी देवी प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान की शासन देवी है। इसका वर्ण सुवर्ण है। इसके प्रायः चार हाथ है कहीं–कहीं पर आठ हाथ या सोलह भी बताये है। इनके हाथ में वज्र, धनुष्य बाण व चक्र है, जहाँ आठ हाथ बताये है, वहाँ दो हाथ में चक्र बताये है। हाथ में चक्र होने के कारण इन्हें चक्रेश्वरी देवी कहा जाता है।

अम्बिका देवी :

प्राचीन काल से ही जैन व वैदिक धर्म में अम्बिका देवी की लोकप्रियता रही है। जैन मान्यता के अनुसार ये नेमिनाथ भगवान की शासन देवी है। इनका निवास गिरनार बताया जाता है। वैदिक मान्यता के अनुसार ये देवी शक्ति का अवतार है और इनका निवास गुजरात के उत्तर में आसपुर पहाड़ बताया जाता है। जैन मान्यता के अनुसार पूर्व भव में ये मनुष्य रूप में थी और बाद में देवी बनी। जबकि वैदिक धर्म में शक्ति का अवतार मानते हुए इनके कई स्थानों पर अलग–अलग नाम से दर्शनीय स्थल है। इनके चार हाथ एक में आम की डाली, दूसरे में पारा तीसरे में अंकुश और चौथे में पुत्र धारण किये हुए हैं। इनका वाहन सिंह है जैन धर्म की समृद्धि में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। खरतरगच्छीय के प्रथम दादा श्री जिनदत्तसूरि जी को युग प्रधान की पदवी देने में योग्य व्यक्ति का चयन इन्हीं के द्वारा हुआ था।

श्री सरस्वती देवी :

यह देवी विद्या की देवी के नाम से प्रसिद्ध है। कोई भी लेखक, कवि अपनी रचना लिखने के पूर्व सरस्वती देवी या शारदा देवी को वंदन करते हैं और यह कामना करते हैं कि उनकी रचना यशस्वी बने। इस देवी का वाहन हंस है। इनके भी चार हाथ हैं। जिनमें से एक हाथ में पुस्तक है।

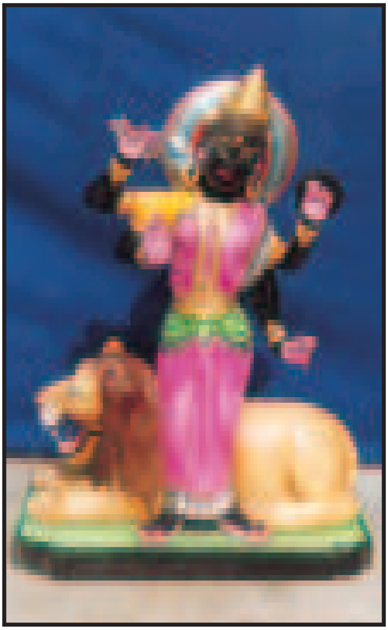

सच्चियाय माता (ओसिया माता) :

यह मंदिर जोधपुर से करीब 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह देवी चामुण्डा का रूप है। पूर्व में यह देवी मांसाहारी थी। महिषासुर मर्दिनी है। कहा जाता है कि श्री रत्नप्रभसूरिजी ने इस देवी को जैन धर्म में दीक्षित किया और अहिंसक बनाया। यह देवी ओसवाल वंश की देवी है। इनका वाहन सिंह और इनके भी चार हाथ है। इसके लिये रत्न, प्रभसूरि जी के बारे में जानना आवश्यक है, इनके पिता का नाम महेन्द्र चूड़ विद्याधर राजा व माता श्रीमती लक्ष्मीवती था। इनका नाम रत्न चूड़ था। इन्होंने वीर सं. 52 में आचार्य पद प्राप्त किया तथा वीर सं. 70 के श्रावण विद 13 को ओसिया नगरी में महावीर भगवान के मंदिर की नींव डाली, जो आज भी विद्यमान है। इन्होंने अपने प्रभाव से 3,45,000 व्यक्तियों को जैनी बनाया। इन्होंने ही शराब, मांस, व्याभिचार जैसी सामाजिक बुराइयाँ छुड़वाकर सदाचारी बनाया।

❑❑❑

प्रभावशाली अधिष्ठाता देव महिमा विवरण

जैन शासन वीर, देव, यक्ष यक्षिणी को मानते हैं, पूजते हैं। जैन शासन में भुवनपति व्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक देव माने जाते हैं। जो देव समकिती होते हैं, वे पूजनीय हैं। जैन मुनियों, यतियों, श्री पूज्यों व श्रावक वर्ग मंत्र साधना करते हैं, धर्म आराधना करते हैं शायद जब भी संकट आता है तो ये देव खींच कर चले आते हैं और अपना धर्म समझकर सहायता करते हैं, उनमें से कुछ का विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

श्री नाकोड़ा भैरवजी :

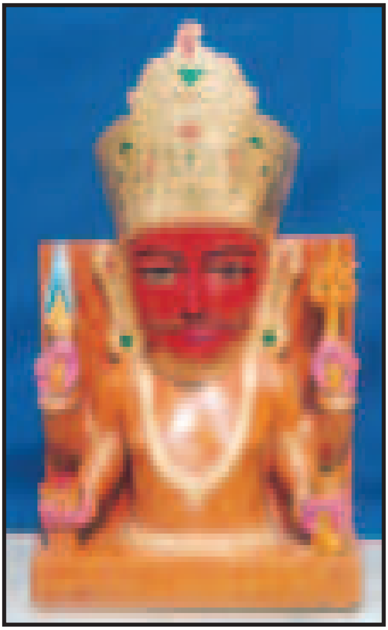

श्री नाकोड़ा भैरव जी महिमा वि.सं. के तीसरी सदी के पूर्व से ही है। कहा जाता है कि नाकोर सेन व वीरमदत्त नाम के राजा के नाम पर नाकोर नगर व वीरमपुर थे। इन नगरों में भगवान महावीर व चन्द्र प्रभु के जिन मंदिर स्थापित कराए।

मुगलकालीन आक्रमण से कई बार उतार चढ़ाव आए और वि.सं. 1280 में मुगल बादशाह आलमशाह ने आक्रमण किया और वि.सं. 1443 में अजमेर के बादशाह सुल्तान बाबीसी ने इस नगर पर आक्रमण किया उस समय वीरमपुर के राजा श्री मेवा ने श्रेष्ठ जनों को प्रतिमाओं को छिपाने का आदेश दिया और उन्होंने जमीन में गाड़ दी (तालाब में डाल दी)।

इस समय श्री भैरव जी पहाड़ी के ऊपर स्थापित थे। राजा के आदेशानुसार सभी ने भैरव जी की स्तुति की। कुछ समय बाद अंधेरा छा गया और देखते ही देखते हजारों की संख्या में मधु मक्खिया मुगल सेना पर टूट पड़ी। मुगल सेना भाग खडी हुई और जैन तीर्थ की रक्षा हुई।

वि.सं. 1512 में एक पुण्य शाली श्रावक श्री जिनदास को रात्री में स्वप्न में श्री भैरवजी ने दर्शन दिये और स्थान बताकर कहा कि वहाँ श्री पार्श्वनाथ भगवान की व अन्य प्रतिमाएँ है। उन्हें निकाल कर उनकी प्रतिष्ठा कराओं। बतायी गयी निशा देही पर खोज की और सीणदरी ग्राम के तालाब के बीच से पार्श्वनाथ भगवान की व अन्य प्रतिमाएँ लाए और पार्श्वनाथ भगवान की मूलनायक के रूप में प्रतिष्ठा कराई गई और इसी समय में खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिन कीर्ति रत्नसूरि द्वारा श्री भैरवजी की भी प्रतिष्ठा कराई।

जब जब भी भक्तों पर विपदाएं आयी, श्री भैरवजी ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से उनको दूर की और यही कारण है कि श्री भैरव जी की यशगाथा देश–विदेश में फैली हुई है।

श्री भौमिया जी महाराज :

इनका मूल स्थान सम्मेदशिखरजी (बिहार) में है। वाराणसी (बनारस) के महाराजा श्री महासेन के पुत्र श्री चन्द्रशेखर जी का जीव व्यन्तर देव के रूप में भौमिया जी महाराज प्रकट हुए। ये पार्श्वनाथ प्रभु के वंशज है, इनको जब यह ज्ञात हुआ कि पार्श्वनाथ भगवान का सुवर्ण टूंक पर निर्वाण हुआ है, तो घोड़े पर सवार होकर दर्शन करने निकल पड़े और

दर्शन कर अपने आप को धन्य माना। पहले रास्ता पीछे होकर जाता था और आगे से जाने पर कई कठिनाइयाँ थी। आगे से रास्ता सुगम करने की खोज में गए, लेकिन विकट रास्ते में घोड़े का पेर फिसला और कुंवर व घोड़ा हजारों फीट नीचे गिर गए और शरीर के टुकडे–टुकड़े हो गए। अंत समय में पार्श्वप्रभु को याद किया। शव को ऊपर ''मधुवन'' में जहाँ पर भौमिया जी स्थापित हैं वहाँ पर लिटाया। प्रकट प्रभावी 'व्यन्तर देव' लोगों की मनोकामना को पूरा करने लगे। मनुष्यों ने पशु बलि का सहारा लिया 'परचा' होने लगा। मुर्शिदाबाद के जगत सेठ व यतिवर्य आये और पशुबली को देखकर उनको दुःख हुआ। यतिवर्य के उपदेश से सेठ ने अट्ठम तप किया। भोमिया जी ने दर्शन देकर कहा कि पहले मेरा (भोमियाजी का) उद्धार करो। भोमिया जी के चेहरे के आकार की प्रतिमा बनाकर स्थापित कराई और वे इस तीर्थ के रक्षक के रूप में जाने गये। श्रद्धालुगण उनके दर्शन करके ही यात्रा के लिए जाते है और यात्रा सफल होती है।

घंटाकर्ण महावीर जी :

श्री घंटाकर्ण महावीर पूर्व भव में एक आर्य राजा थे और साधुजनों सतियों, स्त्रियों की रक्षा में सहायक बनते थे। रक्षा में तलवार, धनुष–बाण से दुष्टों से युद्ध कर प्रजा की रक्षा करते थे। पूर्व भव के संस्कार से इस भव में भी सहायता करते हैं। 52 वीरों में से ये भी एक हैं। इसका मूल स्थान महुड़ी में स्थित है। ये वीर योद्धा धनुष बाण धारण किए हुए है।

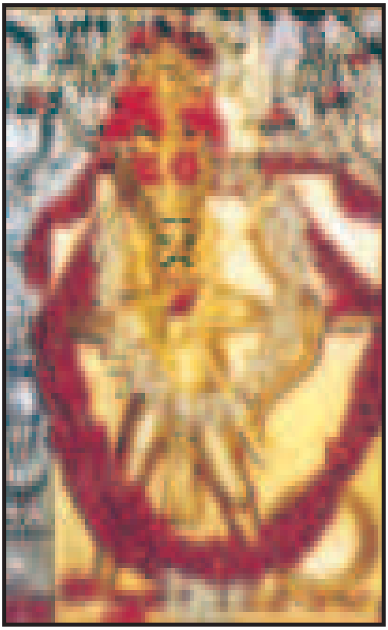

इस महुड़ी तीर्थ भूमि पर कई उपद्रव हो रहे थे और जनता बहुत परेशान हो रही थी, सब जगह अशान्ति का वातावरण था। ऐसी परिस्थिति में समाज के सदस्यों ने आ. श्री बुद्धिसागर जी से उपाय के लिये निवेदन किया। आचार्य भगवंत ने अपने तप बल से ज्ञात किया है कि यह तीर्थ भूमि वर्षों पुरानी है और देव–देवी की पूजा करना है। उन्होंने तप बल से अधिष्ठाता देव घंटाकर्ण महावीर जी को प्रकट किया और ये अन्तरिक्ष से आये। इनकी प्रतिमा को स्थापित की। इनके लिए कहा जाता है कि श्रद्धालुओं की हर मनोकामना पूरी होती है।

नाग–नागिन :

कहा जाता है कि इनका मूल स्थान नागहट (नागदा) है। एक हजार वर्ष के लगभग पूर्व अपना प्राण छोड़कर व्यन्तर देव–देवी के रूप में प्रकट हुए। घूमते हुए वर्तमान स्थान (स्वरूप सागर के किनारे) पर पेड़ की छाया में अपना स्थान बनाया। पेड़ को कटवाने पर भू–मालिक को अनुभव हुआ कि उन्होंने अच्छा नहीं किया और उन्होंने तीन वर्ष पूर्व एक देवरी बना कर मूर्तियां स्थापित की।

श्रद्धालुगण पूर्णिमा–अमावस्या के दिन आकर अपनी इच्छा पूर्ण करने की प्रार्थना करते है और उनकी मनोकामना पूर्ण होती है।

प्राचीन काल से हमारे यहाँ नाग जाति की पूजा होती रही है। मोहन जोदडों की सभ्यता में नाग के चित्र मिले है। जैन धर्म से प्रकट प्रभावी घरणेन्द्र देव व पद्मावती देवी नाग के रूप में पूजे जाते है।

❑❑❑

तपागच्छीय अधिष्ठायदेव व अन्य का महिमा विवरण

श्री माणिभद्र जी (तपागच्छीय अधिष्ठाता देव) :

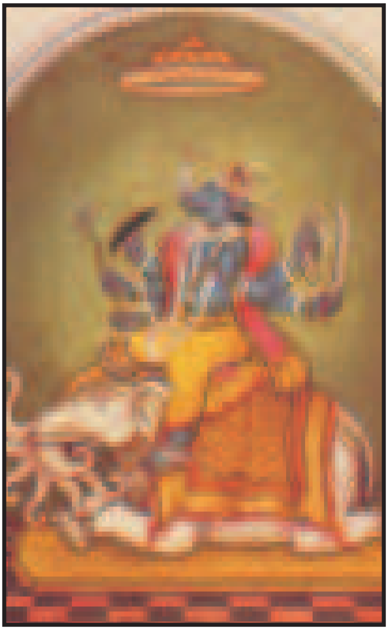

माणिभद्र वीर का सांसारिक नाम माणकशाह था व उज्जैन में निवास करते थे और इनका जन्म वि.सं. 15 वीं शताब्दी में औसवाल वंश में माना जाता है। इनके यहाँ पर जिन मंदिर व पौषध शाला थी। वहाँ पर अपनी धर्म क्रिया करते थे। एक समय में श्री लोकाशाह के यति आए वे भी प्रवचन सुनने गए। वहाँ पर माणक शाह पर मूर्ति पूजा न करने का विचार मन में बिठा दिया और मूर्ति पूजा के विरोधी हो गये। इस प्रसंग से उनके माता–पिता बहुत दुःखी हुए और माता ने उनके सद्बुद्धि न आने तक धी छोड़ दिया। यह बात माणकशाह तक पहुँची तो उन्होंने कहा कि सद्गुरु द्वारा उनकी शंका का समाधान होने पर ही विचार करेंगे।

एक दिन आचार्य श्री हेमविमलसूरिजी व अन्य साधुगण विहार करते हुए वहा (उज्जैन) आये तो माणकशाह ने अन्यों के साथ मिलकर उनके साथ अभद्र व्यवहार किया, उनकी दाढ़ी के बाल जला दिए। रात्री में उनको नींद नहीं आयी और विचार किया साधु को कितनी वेदना हुई होगी। लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहॉ और साधु के समता की अनुमोदना की। प्रातःकाल साधु के पास गये तो भी उनको कोई क्रोध न था। माणकशाह ने उनको गौचरी के लिए घर लाए। वहाँ पर उनकी माता ने मुनि महाराज को अपनी पीड़ा बतायी तो उन्होंने माणकशाह को पूछा तो उन्होंने (माणकशाह) अपनी शंका के प्रश्न रखें वे इस प्रकार है :–

1. शास्त्रों में प्रतिमा पूजन का क्या विधान है और कौन से शास्त्र में है ?
2. किस ने जिन प्रतिमा की पूजा की?
3. इस पंचम आरे में किसी श्रावक ने जिन बिंब भरवाया, पूजा की?

मुनिवर ने शान्त मुद्रा से उसको उत्तर दिया।

1. कई शास्त्रों में पूजा का विधान व विधी है। ग्यारह आगमों में से पाँचवें महान आगम भगवती सूत्र में पूजा का विधान बताया गया है। रायपसेणी सूत्र व अनेक आगमों में भी है।

2. द्रौपदी, सूर्याभ देव आदि ने जिन प्रतिमा का पूजन किया है।

3. (क) भरत चक्रवर्ती ने अष्टापद पर्वत पर 24 तीर्थंकरों के बिब स्थापित किये।

(ख) भगवान महावीर के निर्वाण के 290 वर्ष बाद अशोक के पौत्र महाराजा संप्रति ने सवा करोड़ प्रतिमा भरवाई और सवा लाख जिन मंदिर बनवाये।

(ग) भगवान महावीर के भाई नन्दीवृद्धन ने भगवान महावीर की प्रतिमा भराई, जो वर्तमान में विद्यमान है।

(छ) श्रेणीक महाराजा ने आने वाले चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर पद्नाभ की प्रतिमा भरवायी।

(ज) वस्तुपाल तेजपाल ने आबू पर्वत पर जिन मंदिर बनवाये।

(झ) धन्ना सिंघवी ने राणकपुर में मंदिर बनावाया।

(ङ) केशरिया जी तीर्थ की प्रतिमा मुनिसुव्रत स्वामी के समय (रामकालीन) श्रीपाल व मयनासुन्दरी द्वारा पूजित है।

(ट) अति प्राचीन अंतरीक्ष पार्श्वनाथ व अवन्ती पार्श्वनाथ की प्रतिमा विद्यमान है।

(ठ) आषाढी श्रावक द्वारा भराई गयी शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा सारे देवलोक व मनुष्य लोक में पूजी जा चुकी है।

गुरु के वचन को सुन कर माणकशाह पुनः अपने सम्प्रदाय में लौट आए और घटना क्रम में शत्रुन्ज्य की यात्रा करते समय वे काल को प्राप्त हुए और इन्द्रदेव बने।

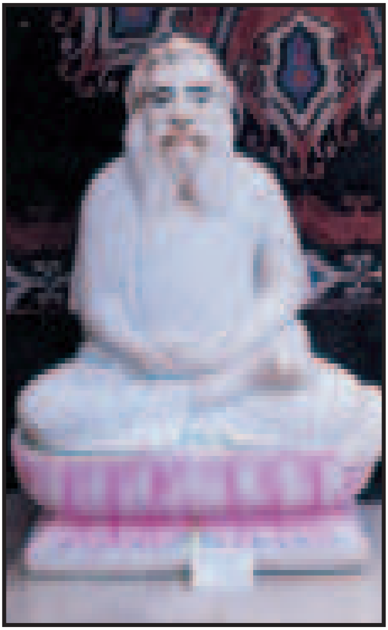

श्री शांतिसूरीश्वर जी महाराज :

महान तपस्वी योगीराज का जन्म सिरोही जिले के मणादर ग्राम में रेबारी कुल के श्री भीमतोला परिवार में संवत 1946 के माघ माह शुक्ला पक्ष की पंचमी (25 जनवरी 1890) को हुआ। इनके माता का नाम वसुदेवी था। इनका बचपन का नाम सगतो जी था। ये बचपन से ही स्वस्थ्य, चतुर तेजस्वी व हँसमुख शान्त व धर्मप्रिय थे।

इनके परिवार का मुख्य व्यवसाय पशुपालन था ये भी पशु चराने जंगल में जाते थे। एक बार एक गाय जंगल में बैठ गयी। वह प्रयत्न करने पर भी उठ नहीं पा रही थी। उसी समय संयोगवश सन्त श्री तीर्थ विजय जी (जो इनके काका थे) का आना हुआ, तो उन्होंने कहा कि यदि गाय उठ

जाए तो मेरे साथ चलोगे। इन्होंने स्वीकार कर लिया और गाय को उठा दी, उसी समय से (सगतो जी) आठ वर्ष की आयु में जैन सन्त के साथ हो गए।

वि.सं. 1961 माघ शुक्ल 5 को दीक्षा ग्रहण की और इनका नाम शांति विजय रखा गया। दीक्षा के बाद पर्वत की गुफा में आपने ध्यान साधना की। कई वर्षों तक बामनवाड़ जी, अचलगढ़ के पहाड़ों पर ध्यान करते रहे। आपके तपस्या का प्रभाव यह था कि शेर बकरी एक साथ बैठते थे। आपके लिये कहा जाता है कि ये सिद्ध योगी थे। जिनके एक समय में कई स्थानों पर दर्शन होते थे। आपके चमत्कार जैन– अजैन सभी जानते है। अन्त में वि.सं. 2000 आसोज वदि 7 गुरुवारे (24.9.43) को शांति को प्राप्त हो गए और उनका अग्नि संस्कार माण्डोली में हुआ।

❑❑❑

पुस्तक प्रकाशन सहयोगी सदस्यों की नामावली

1. श्रीमती सुशीला मोहनलाल बोल्या
2. श्रीमती भंवर बाई जी रघुनाथ सिंह जी जोटा
3. श्री भँवरलाल जी सुशील कुमार जी पोरवाल
4. श्री जीवन सिंह जी स्व. नन्दलाल जी महता
5. श्री शांतिलाल जी स्व. रोशनलाल जी लोढ़ा
6. श्री केसरसिंह जी सुरेन्द्र कुमार जी बोल्या
7. स्व. श्रीमती प्रेमबाई जी व स्व. लालचन्द जी सिंघवी की स्मृति में श्रीमती कुसुम चैनसिंह जी सिंघवी
8. गुप्त अंशदान मार्फत सा. श्री शीलकान्ता श्रीजी
9. श्रीमती प्रमिला सज्जन सिंह जी जैन (पीपाड़ा)
10. श्रीमती प्रकाश रणजीतसिंह जी महता
11. श्री हिम्मतलाल जी स्व. रामलाल जी बोल्या
12. श्रीमती आभा जी दलाल
13. श्री डॉ. बसन्तीलाल जी दलाल
14. श्रीमती मंजु सुशील जी महता
15. श्री महेन्द्र कुमार जी सौभाग्यमल जी दफ्तरी, निवासी–गोधरा
16. श्रीमती शान्ता बेन स्व. हीराचन्द जी पालरेचा, निवासी–सूरत
17. श्री दौलतसिंह जी धुप्या
18. श्रीमती लाड़कुँवर श्री जीतमल जी चौरडिया
19. श्रीमती शकुन्तला श्री ललित कुमार जी सिंघवी
20. श्रीमती प्रेम कुँवर वरदीचन्द जी वरड़िया, निवासी–मदनगंज किशनगढ़
21. श्रीमती यशकुँवर स्व. रोशनलाल जी लोढ़ा
22. श्रीमती कमलाबाई माणकलाल जी भादविया
23. श्रीमती नीना गणेशलाल जी सिंघवी
24. श्रीमती वीना गजेन्द्र कुमार जी नाहटा
25. श्री दीवान सिंह जी बोहतलाल जी बापना

26. श्रीमती निर्मला देवी दलपत सिंह जी दोशी
27. श्रीमती निशी अशोक खमेसरा, निवासी–मुम्बई
28. श्रीमती कोयल बाई जी अम्बालाल जी सिंघवी
29. श्रीमती कमला बाई जी शांतिलाल जी महता
30. श्रीमती सुशीला विनोद जी बोल्या
31. श्रीमती कंचन देवी तेजसिंह जी बोल्या
32. श्रीमती मोहनदेवी स्व. सुन्दरलाल जी बाबेल
33. श्री राजेन्द्र दलपत सिंह जी दुग्गड़
34. श्रीमती सन्तोष दलपतसिंह जी भंसाली
35. श्रीमती प्रेमलता विजयराज जी महता
36. श्रीमती कमला बाई जी स्व. शांति लाल जी करणपुरिया
37. श्रीमती नीरू राजेन्द्र जी लोढ़ा
38. श्रीमती नंदा प्रकाश जी सुराणा, निवासी–मैसूर
39. श्री आजाद अशोक कुमार जी बोल्या
40. श्रीमती गीता स्व. भेरूलाल जी भारद्वाज
41. श्रीमती नीलम अशोक जी भादविया
42. श्रीमती नीता सुरेन्द्र जी धुप्या
43. डॉ. शैलेन्द्र जी खड़गसिंह जी हिरन
44. श्रीमती कविशा पुत्री संदीप जी रांका, निवासी–नवसारी
45. श्री लहरसिंह जी स्व. तेजसिंह जी बोल्या
46. श्रीमती नीना राकेश जी बोल्या
47. श्रीमती बादाम देवी स्व. केसरीमल जी धुप्या
48. श्रीमती कुसुम देवी इन्द्र सिंह जी धुप्या
49. श्रीमती पदमा बेन स्व. श्री रोशनलाल जी रांका, निवासी–नवसारी
50. श्रीमती कमल स्व. प्रकाशचन्द्र जी धुप्या।

❑❑❑

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्री संघ, मालदास स्ट्रीट उदयपुर नगर में हुए चातुर्मास की नामावली

संवत्	मुनि / साध्वी का नाम	संवत्	मुनि / साध्वी का नाम
1972	पूज्य विजय धर्म सूरीश्वर जी	1995	पूज्य निति सूरि जी
1973	पूज्य प. मणी विजय जी	1996	पूज्य लक्ष्मण सूरि जी
1974	पूज्य मोहन विजय जी	1997	पूज्य उमंग सूरि जी
1975	पूज्य प. सोहन विजय जी	1998	पूज्य गंभीर सूरि जी
1976	पूज्य मोहन विजय जी	1999	पूज्य सुमति सूरि जी
1977	पूज्य नेमि सूरीश्वर जी	2000	पूज्य सिंह विमल एवं रूप विजय जी
1978	पूज्य मोहन विजय जी	2001	पूज्य भुवन विजय जी
1979	पूज्य गुलाब विजय जी	2002	पूज्य धर्म सागर जी
1980	पूज्य मोहन विजय जी	2003	पूज्य सम्पत विजय जी
1981	पूज्य कृपाचन्द्र सूरीश्वर जी	2004	पूज्य मंगल विजय जी
1982	पूज्य मोहन विजय जी	2005	पूज्य शांति सागर जी
1983	पूज्य मोहन विजय जी	2006	पूज्य जितेन्द्र विजय जी
1984	पूज्य सागरानन्द सूरि जी	2007	पूज्य हिमाचल सूरि जी
1985	पूज्य मोहन विजय जी	2008	पूज्य भुवन सूरीश्वर जी
1986	पूज्य मोहन विजय जी	2009	पूज्य पूर्णानन्द विजय जी
1987	पूज्य अमृत विजय जी	2010	पूज्य कांति सागर जी
1988	पूज्य लावण्य विजय जी	2011	पूज्य हर्ष विजय जी
1989	पूज्य मोहन विजय जी	2012	पूज्य उमेद विजय जी
1990	पूज्य मोहन विजय जी	2013	पूज्य सुख सागर जी
1991	पूज्य मोहन विजय जी	2014	पूज्य दौलत सागर जी
1992	पूज्य विद्या विजय जी	2015	पूज्य हिमाचल सूरीश्वर जी
1993	पूज्य सुबोध सागर जी	2016	पूज्य धरम सागर जी
1994	पूज्य स्वरूप विजय जी	2017	पूज्य राम सूरि जी (डेहला वाला)

संवत्	मुनि/साध्वी का नाम	संवत्	मुनि/साध्वी का नाम
2018	पूज्य सा. श्री उत्तम श्री जी	2040	पूज्य अशोक सागर जी
2019	पूज्य कांति सागर जी	2041	पूज्य जिन कांति सागर सूरीश्वर जी
2020	पूज्य सा. श्री उत्तम श्री जी	2042	पूज्य अरूण विजय जी
2021	पूज्य जीत प्रभव विजय जी	2043	पूज्य जयरत्न सागर जी
2022	पूज्य दौलत सागर जी	2044	पूज्य सुशील सूरि जी
2023	पूज्य हिमाचल सूरीश्वर जी	2045	पूज्य जितेन्द्र सूरि जी
2024	पूज्य वल्लभदत्त विजय जी	2046	पूज्य महिमा प्रभव सागर जी
2025	पूज्य प्रबोध चन्द्र सागर जी	2047	पूज्य नव रत्न, जय रत्न विजय जी
2026	पूज्य भद्रगुप्त विजय जी	2048	पूज्य रत्नसेन विजय जी
2027	पूज्य हर्ष विजय जी	2049	पूज्य अभय देव सूरि जी
2028	पूज्य महायश सागर जी	2050	पूज्य देवचन्द्र विजय जी
2029	पूज्य सुशील सूरीश्वर जी	2051	पूज्य जितेन्द्र सूरि जी
2030	पूज्य सुशील सूरीश्वर जी	2052	पूज्य कमल विजय जी
2031	पूज्य जिन प्रभव विजय जी	2053	पूज्य मणिप्रभ सागर जी
2032	पूज्य निरूपम सागर जी	2054	पूज्य भुवन सुन्दर विजय जी
2033	पूज्य भूवन सूरीश्वर जी	2055	पूज्य निरूपम सागर जी
2034	पूज्य भुवन रत्न विजय जी	2056	पूज्य महोदय सागर जी
2035	पूज्य विजय जयदेव सूरि जी	2057	पूज्य ऋषभचन्द्र विजय जी
2036	पूज्य सा. श्री चन्द्रकला श्री जी	2058	पूज्य युग प्रभ विजय जी
2037	पूज्य नित्य वर्धन सागर जी	2059	पूज्य राजतिलक सागर जी
2038	पूज्य विजय देव सूरि जी व हेमचन्द्र सूरि जी	2060	पूज्य महोदय सागर जी
		2061	पूज्य मृदुरत्न सागर जी
2039	पूज्य भूवन सूरीश्वर जी	2062	पूज्य अपूर्व मंगल रत्न सागर सूरि जी

❑❑❑

उदयपुर नगर के मूर्तिपूजक जैन समाज में दीक्षित पुण्यात्माओं की नामावली

क्र.सं.	दीक्षार्थी का नाम	सांसारिक नाम
साधु जी महाराज		
1.	श्री भुवन सूरि जी	श्री भगवती लाल जी महता
2.	श्री सुदर्शन सूरि जी	श्री संग्राम सिंह जी महता
3.	श्री पद्म प्रभ सूरि जी	श्री छगन लाल जी मुरडिया
4.	श्री मोक्ष कर विजय जी	श्री ख्याली लाल जी दोशी
5.	श्री चारित्र प्रभ विजय जी	श्री चोसर लाल जी सांखला
6.	श्री प्रेम प्रभ विजय जी	श्री प्रमोद सांखला
7.	अज्ञात	श्री मोहन लाल जी महता
8.	श्री शांति सागर जी	श्री शान्ति लाल जी सिंघटवाड़िया
साध्वी जी महाराज		
9.	श्री उत्तम श्री जी	श्रीमती सुगन बाई महता
10.	श्री विमला श्री जी	श्रीमती नजर बाई चपलोत
11.	श्री सुदर्शना श्री जी	श्रीमती सुगन बाई गन्ना
12.	श्री कल्पलता श्री जी	कु. अम्बा बेन गन्ना
13.	श्री चंद्रकला श्री जी	कु. चन्द्रा बेन गन्ना
14.	श्री भद्रकला श्री जी	श्रीमती भँवर बेन संचेती
15.	श्री शीलकान्ता श्री जी	कु. शकुंतला मुर्डिया
16.	श्री सुमलया श्री जी	कु. सुशीला धुप्या
17.	श्री चरण कला श्री जी	कु. चंद्रा नाहर
18.	श्री कल्प गुणा श्री जी	कु. शकुंतला नलवाया
19.	श्री संवैग पूर्णा श्री जी	कु. सुमन मारवाड़ी
20.	श्री नय पूर्णा श्री जी	कु. नवरतन चपलोत
21.	श्री पद्म गुणा श्री जी	कु. प्रकाश चपलोत

क्र.सं.	दीक्षार्थी का नाम	सांसारिक नाम
22.	श्री विश्व प्रभा श्री जी	कु. विरेन्द्र दलाल
23.	श्री पुष्प लता श्री जी	कु. पूरण कला सिंघवी
24.	श्री सम्यक् रत्ना श्री जी	कु. सरोज खाब्या
25.	श्री शांत रशा जी	कु. शशि बाला सांखला
26.	श्री रत्न माला श्री जी	कु. राजकुमारी हुमड़
27.	श्री पूर्ण यशा श्री जी	कु. तारा बेन खाब्या
28.	श्री उपेन्द्र यशा श्री जी	कु. चंद्रा बेन सिंघवी
29.	श्री लक्षगुणा श्री जी	कु. लीला बेन सिरोया
30.	श्री अक्षय रचिता श्री जी	कु. आशा मारवाड़ी
31.	श्री गौतम श्री जी	कु. गणेशी बेन मारवाड़ी

❑❑❑

इतिहास के झरोखे में उदयपुर के पर्यटन स्थल

स्थापना :

उदयपुर नगर महाराणा उदयसिंह जी (1594–1628) ने बसाया। सर्वप्रथम उदयपुर नगर की नींव डालने के पहले निवास हेतु महल का निर्माण कराया, जो मोती मगरी पर्यटन स्थल के नाम से प्रसिद्ध है। यह महल प्रसिद्ध झील फतेह सागर के किनारे स्थित है।

राजमहल :

एक समय शिकार खेलते–खेलते पिछोला झील की तरफ गये, वहाँ पर पहाड़ी की चोटी पर एक साधु ध्यानस्थ थे, उनके दर्शन किए, उनका वन्दन किया। साधु ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि यदि इस जगह पर नगर बसाओगे तो आपका वंश से यह स्थान कभी नहीं निकलेगा। (संदर्भ : ''वीर विनोद'')

संवत् 1616 :

साधु के बताए स्थान पर महाराणा ने उसी समय नींव का पत्थर रख दिया और **चौकी नाम का महल** बनवाया। मध्य की चौकी में राज्य सिंहासन की स्थापना की। उसी स्थान पर महाराणाओं का राज्याभिषेक होता था, लेकिन महाराणा अरिसिंह जी से यह प्रथा बंद हो गई। इसके बाद भिन्न–भिन्न महाराणाओं ने अपने–अपने नाम से विस्तार किया। ये सुन्दरतम्द महल उदयपुर की प्राचीन पिछोला झील के किनारे स्थित है।

पिछोला झील :

पिछोला झील उदयपुर बसने के पहले की बनी है। पिछोली कस्बे के नाम से पिछोला झील नाम पड़ा। यह झील संवत् 1438–75 के बीच महाराणा लाखा के समय एक बंजारा ने बनाई थी।

यह झील 4 किलोमीटर लम्बी, 2.5 किलोमीटर चौड़ी व 30 फीट गहरी है। झील में जग निवास (लेक पेलेस), जग मंदिर, नटनी चबूतरा और मोहन मंदिर भी बने है।

इस झील को महाराणा उदयसिंह जी ने पक्की बनवाई व बाद में महाराणा भीमसिंह ने वि.सं. 1852 में विस्तार कराया।

इसके साथ ही जुड़ा हुआ स्वरूप सागर, जिसको महाराणा स्वरूपसिंह जी ने बनवाया। इसका अधिक पानी होने पर एक नहर द्वारा फतहसागर को जोड़ा गया।

फतहसागर झील :

यह झील मूल रूप से देवाली का तालाब है। इस तालाब को महाराणा जयसिंह जी

ने संवत् 1744 में बनवाया। देवाली ग्राम के पास में होने से इसको देवाली का तालाब कहा जाने लगा। महाराणा भीमसिंह जी के समय (संवत् 1832) में अतिवृष्टि से टूट गया और इसको वि.सं. 1946 में महाराणा फतहसिंह जी ने इसकी मरम्मत करवाई और इसका विस्तार किया। तब से ही इसका नाम फतहसागर पड़ा। यह झील 2 किलोमीटर लम्बी, 1 किलोमीटर चौड़ी व 35 फीट गहरी है। इसको विशालकाय बनवाने में 6,14,189.00 रुपये खर्च हुए।

जगदीश मंदिर :

यह मंदिर महाराणा जगतसिंह ने बनवाया और संवत् 1709 में इसकी प्रतिष्ठा कराई। यह विशाल शिखरबंद मंदिर 80 फीट ऊँचा है। इसको बनवाने में उस समय 9.00 लाख रुपये खर्च हुए। इसमें चारभुजा जी की प्रतिमा श्याम पाषाण की है।

रेलवे ट्रेनिंग स्कूल :

एशिया का सबसे प्रथम उत्तर–पश्चिम रेलवे का सबसे बड़े प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन संवत् 2013, आसोज शुक्ला 5, दिनांक 09.10.1956 को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी द्वारा हुआ।

इसके पास ही सुखाड़िया सर्कल निर्मित है, जहाँ विशालकाय फव्वारा लगा है तथा राजस्थान के पूर्व मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया के नाम सुखाड़िया सर्कल नाम दिया गया।

सहेलियों की बाड़ी :

सुन्दरतम तरीके से बनी हुई है, जहाँ पर चारों तरफ फव्वारें लगे है। इसको महाराणा फतहसिंह जी ने बनवाया।

सज्जनगढ़ :

उदयपुर शहर से 5 किलोमीटर की दूरी पर पश्चिम दिशा में बाँसदरा पहाड़ पर स्थित है। यह समुद्रतल से 3,100 फीट व भूमि तल से 1,100 फीट की ऊँचाई पर है। इस दो मंजिला विशालकाय गढ़ को महाराणा सज्जनसिंह जी ने बनवाया। यहाँ खड़े होकर प्रकृति की छटा व गढ़ की शिल्पकला निहारी जा सकती है। महाराणा सज्जनसिंह जी ने 1.5 मंजिल ही बनाई और उनका देहान्त हो जाने से इसको उनके पुत्र महाराणा फतहसिंहजी ने पूर्ण करवाया।

बड़ी का तालाब :

बड़ी गाँव के पास ही तालाब स्थित है। इसको बड़ी का तालाब कहते है, लेकिन वास्तव में इस तालाब का नाम ''जना सागर'' है। इस तालाब की नींव

महाराणा राजसिंह जी ने वि.सं. 1721 में अपनी माता जना देवी के नाम पर रखी और सं. 1725 माघ शुक्ला 10 को प्रतिष्ठा कराई। इस तालाब को बनवाने में 2,61,000 रुपये खर्च हुए और यह 75 फीट गहरा है। इसका पानी स्वच्छ है और यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यप्रद है। इस क्षेत्र की हवा से क्षय रोग के रोगी रोग मुक्त हो जाते है, इसीलिए यहाँ टी.बी. सेनिटोरियम स्थापित है।

उदयपुर नगर में ही गुलाब बाग, दूध तलाई, दीनदयाल उपाध्याय बाग, भारतीय लोक कला मंडल, शिल्पग्राम, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र बागोर की हवेली आदि देखने योग्य है।

उदयपुर से जुड़े हुए निम्न स्थानों के बारे में जानना आवश्यक है :—

1. **उदयसागर** : यह उदयपुर से पूर्व की ओर 15 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यह बाँध आयड़ नदी के बहाव को रोक कर महाराणा उदयसिंह जी ने सं. 1616 में बनवाया। यह बाँध 900 फीट लम्बा, 1,800 फीट चौड़ा बना है, जिसकी प्रतिष्ठा सं. 1622 में कराई। इसी बाँध की पाल पर महाराणा प्रताप ने आमेर के कुँवर मानसिंह जी के साथ भोजन करने से इंकार कर दिया था, क्योंकि उन्होंने अपनी भुआ को सम्राट अकबर को सौंप दी थी। इसके कारण ही हल्दीघाटी का युद्ध हुआ।

2. **श्री एकलिंग जी** : यह उदयपुर से 15 किलोमीटर उत्तर की ओर स्थित है। यहाँ विशालकाय मंदिर स्थिापित है। यह स्थान मेवाड़ के महाराणाओं के आराध्य देव स्थल है। मेवाड़ के महाराणा एकलिंग जी को मानते है और महाराणा आपने आपको दीवान मानते है।

   कहा जाता है कि हारित ऋषि की कृपा से एकलिंग जी ने बापा रावल को दर्शन दिए। इनके आशीर्वाद के कारण वि.सं. 791 में राजा मानगौरी से बापा रावल ने चित्तौड़ को प्राप्त कर लिया, तब से महाराणा एकलिंग जी को मालिक व स्वयं को दीवान मान कर राज्य का शासन करते थे। यह परंपरा वर्तमान में भी प्रचलित है। किसी भी महाराणा का राज्याभिषेक होता है, तब वह सबसे प्रथम एकलिंग जी के दर्शन करता है। यह मंदिर दो मंजिला है और प्राचीन शिल्प कला से ओत—प्रोत है। चारों ओर 52 देवरियाँ—कोठरियाँ बनी हुई है।

❑❑❑